[०७] श्री उपासकदशाङ्गसूत्रम्

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

“उपासकदशा” मूलं एवं वृत्तिः

[मूलं एवं अभयदेवसूरि रचित वृत्तिः]

[आद्य संपादकः - पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰]

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.)

29/09/2014, सोमवार, २०७० आसो शुक्ल ५

jain_e_library's Net Publications

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

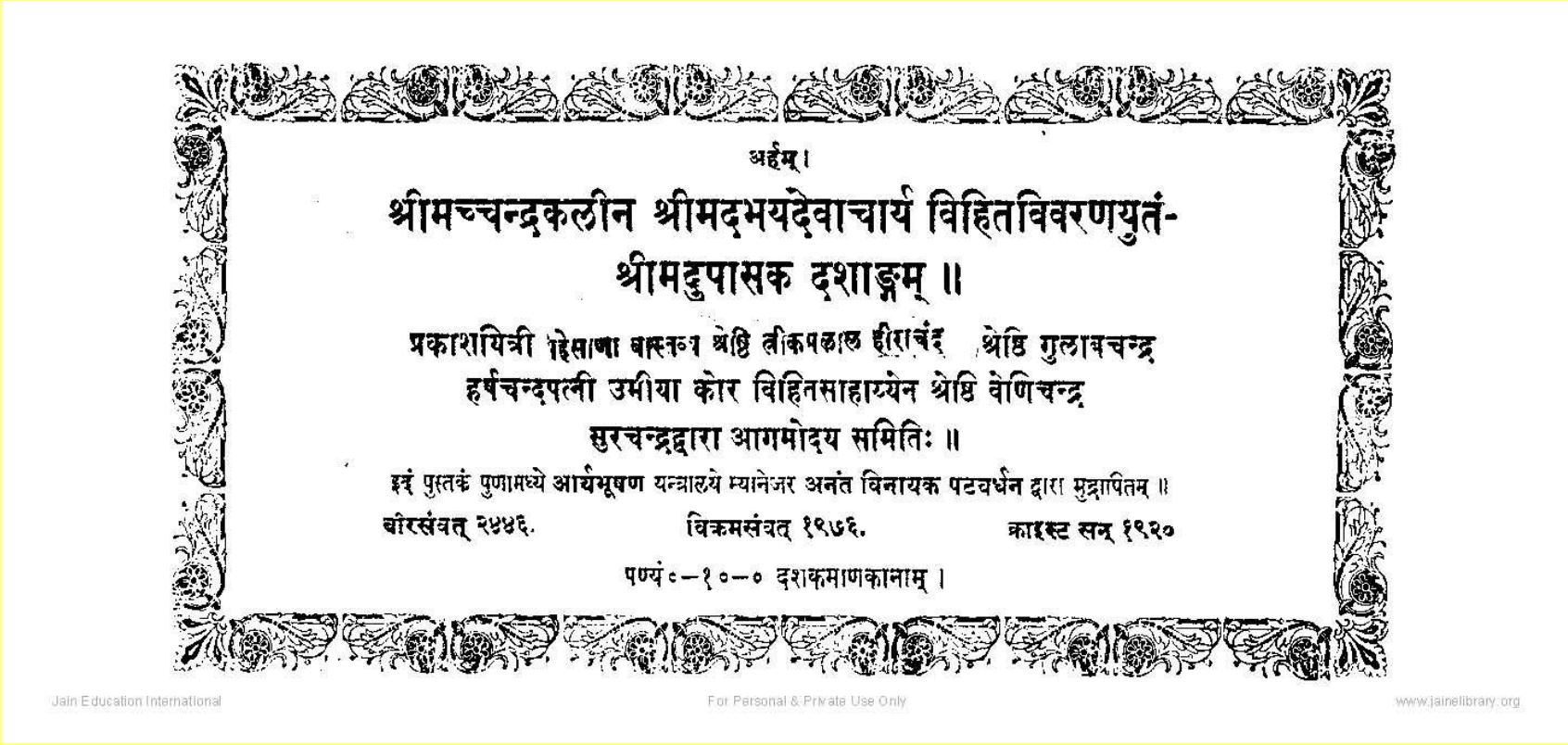

प्रत सूत्रांक [–]

दीप अनुक्रम [–]

अर्हम्।

श्रीमच्चन्द्रकलीन श्रीमदभयदेवाचार्य विहितविवरणयुतं-
श्रीमदुपासक दशाङ्गम् ॥

प्रकाशयित्री [illegible] श्रेष्ठि [illegible] हीराचंद श्रेष्ठि गुलाबचन्द्र
हर्षचन्द्रपत्नी उमीया कोर विहितसाहाय्येन श्रेष्ठि वेणिचन्द्र
सुरचन्द्रद्वारा आगमोदय समितिः ॥

इदं पुस्तकं पुणामध्ये आर्यभूषण यन्त्रालये म्यानेजर अनंत विनायक पटवर्धन द्वारा मुद्रापितम् ॥

वीरसंवत् २४४६. विक्रमसंवत् १९७६. क्राइस्ट सन् १९२०

पण्यं ०–१०–० दशकमाणकानाम् ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उपासकदशाङ्गसूत्रस्य मूल "टाइटल पेज"

मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक:	मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक	मूलांक:	अध्ययन	पृष्ठांक:
००१	०१- आनंद	००४						
			०३४	०५- चूल्लशतक	०७४	०४८	०८- महाशतक	०९८
०२०	०२- कामदेव	०४१						
			०३५	०६- कुंडकोलिक	०७६	०५७	०९- नंदीनिपिता	१०८
०२९	०३- चूलनीपिता	०६५						
			०४१	०७- सद्दालपूत्र	०८१	०५८--	१०- लेईयापिता	१०८
०३२	०४- सूरादेव	०७१				--७३		

['उपासकदशा' - मूलं एवं वृत्तिः] इस प्रकाशन की विकास-गाथा

यह प्रत सबसे पहले "उपासकदशाङ्गसूत्र" के नामसे सन १९२० (विक्रम संवत १९७६) में आगमोदय समिति द्वारा प्रकाशित हुई, इस के संपादक-महोदय थे पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी (सागरानंदसूरिजी) महाराज साहेब |

इसी प्रत को फिर से दुसरे पूज्यश्रीओने अपने-अपने नामसे भी छपवाई, जिसमे उन्होंने खुदने तो कुछ नहीं किया, मगर इसी प्रत को ऑफसेट करवा के, अपना एवं अपनी प्रकाशन संस्था का नाम छाप दिया. जिसमे किसीने पूज्यपाद् सागरानंदसूरिजी के नाम को आगे रखा, और अपनी वफादारी दिखाई, तो किसीने स्वयं को ही इस पुरे कार्य का कर्ता बता दिया और श्रीमद्सागरानंदसूरिजी तथा प्रकाशक का नाम ही मिटा दिया |

✣ **हमारा ये प्रयास क्यों?** ✣ आगम की सेवा करने के हमें तो बहोत अवसर मिले, **४५-आगम सटीक** भी हमने ३० भागोमे १२५०० से ज्यादा पृष्ठोमें प्रकाशित करवाए है, किन्तु लोगो की पूज्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी के प्रति श्रद्धा तथा प्रत स्वरुप प्राचीन प्रथा का आदर देखकर हमने इसी प्रत को स्केन करवाई, उसके बाद एक **स्पेशियल फोरमेट** बनवाया, जिसमे बीचमे पूज्यश्री संपादित प्रत ज्यों की त्यों रख दी, ऊपर **शीर्षस्थानमे** आगम का नाम, फिर अध्ययन, मूलसूत्र- आदि के नंबर लिख दिए, ताँकि पढ़नेवाले को प्रत्येक पेज पर कौनसा अध्ययन, आदि चल रहे है उसका सरलता से ज्ञान हो शके, बायीं तरफ **आगम** का **क्रम** और इसी **प्रत** का **सूत्रक्रम** दिया है, उसके साथ वहाँ **'दीप अनुक्रम'** भी दिया है, जिससे हमारे प्राकृत, संस्कृत, हिंदी गुजराती, इंग्लिश आदि सभी आगम प्रकाशनोमें प्रवेश कर शके | हमारे अनुक्रम तो प्रत्येक प्रकाशनोमें एक सामान और क्रमशः आगे बढते हुए ही है, इसीलिए सिर्फ क्रम नंबर दिए है, मगर प्रत में गाथा और सूत्रों के नंबर अलग-अलग होने से हमने जहां सूत्र है वहाँ **कौंस [-]** दिए है और जहां गाथा है वहाँ ||-|| ऐसी **दो लाइन** खींची है या फिर गाथा शब्द लिख दिया है |

हमने एक अनुक्रमणिका भी बनायी है, जिसमे प्रत्येक अध्ययन आदि लिख दिये है और साथमें इस सम्पादन के पृष्ठांक भी दे दिए है, जिससे अभ्यासक व्यक्ति अपने चहिते अध्ययन या विषय तक आसानी से पहुँच शकता है | अनेक पृष्ठ के नीचे **विशिष्ठ फूटनोट** भी लिखी है, जिसमे उस पृष्ठ पर चल रहे ख़ास विषयवस्तु की, मूल प्रतमें रही हुई कोई-कोई मुद्रण-भूल की या क्रमांकन सम्बन्धी जानकारी प्राप्त होती है |

अभी तो ये jain_e_library.org का 'इंटरनेट पब्लिकेशन' है, क्योंकि विश्वभरमें अनेक लोगो तक पहुँचने का यहीं सरल, सस्ता और आधुनिक रास्ता है, आगे जाकर ईसि को मुद्रण करवाने की हमारी मनीषा है|

.....मुनि दीपरत्नसागर.

प्रत
सूत्रांक
[१]

दीप
अनुक्रम
[१]

॥ अर्हम् ॥

॥ श्रीमत्सुधर्मस्वामिप्रणीतं नवाङ्गीवृत्तिकारकश्रीमदभयदेवसूरिवरविवृतं श्रीउपासकदशाङ्गसूत्रम् ॥

प्रथममध्ययनम् ।

श्रीवर्द्धमानमानम्य, व्याख्या काचिद्विधीयते । उपासकदशादीनां, प्रायो ग्रन्थान्तरेक्षिता ॥ १ ॥

तत्रोपासकदशाः सप्तममङ्गं, इह चायमभिधानार्थः—उपासकानां—श्रमणोपासकानां सम्बन्धिनोऽनुष्ठानस्य प्रतिपादिका दशाः—दशाध्ययनरूपा उपासकदशाः, बहुवचनान्तमेतद् ग्रन्थनाम । आसां च सम्बन्धाभिधेयप्रयोजनानि नामान्वर्थसामर्थ्येनैव प्रतिपादितान्यवगन्तव्यानि, तथाहि—उपासकानुष्ठानमिहाभिधेयं, तदवगमश्च श्रोतॄणामनन्तरप्रयोजनं, शास्त्रकृतां तु तत्प्रतिबोधनमेव तत्, परम्परप्रयोजनं तूभयेषामप्यपवर्गप्राप्तिरिति । सम्बन्धस्तु द्विविधः शास्त्रेष्वभिधीयते—उपायोपेयभावलक्षणो गुरुपर्वक्रमलक्षणश्च, तत्रोपायोपेयभावलक्षणः शास्त्रनामान्वर्थसामर्थ्येनैवासामभिहितः, तथाहि—इदं शास्त्रमुपाय एतत्साध्योपासकानुष्ठानावगमश्चोपेयमित्युपायोपेयभावलक्षणः सम्बन्धः, गुरुपर्वक्रमलक्षणं तु सम्बन्धं साक्षाद्दर्शयितुमाह—

॥ ऐं ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था, वण्णओ, पुणभद्दे चेइए, वण्णओ ॥ (सू०१) तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव जम्बू पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भन्ते !

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अध्ययनस्य प्रस्तावना

प्रत सूत्रांक [२] + गाथा

दीप अनुक्रम [२-४]

उपासकदशाङ्गे ॥ १ ॥

१ आनन्दाध्ययनं प्रस्तावना

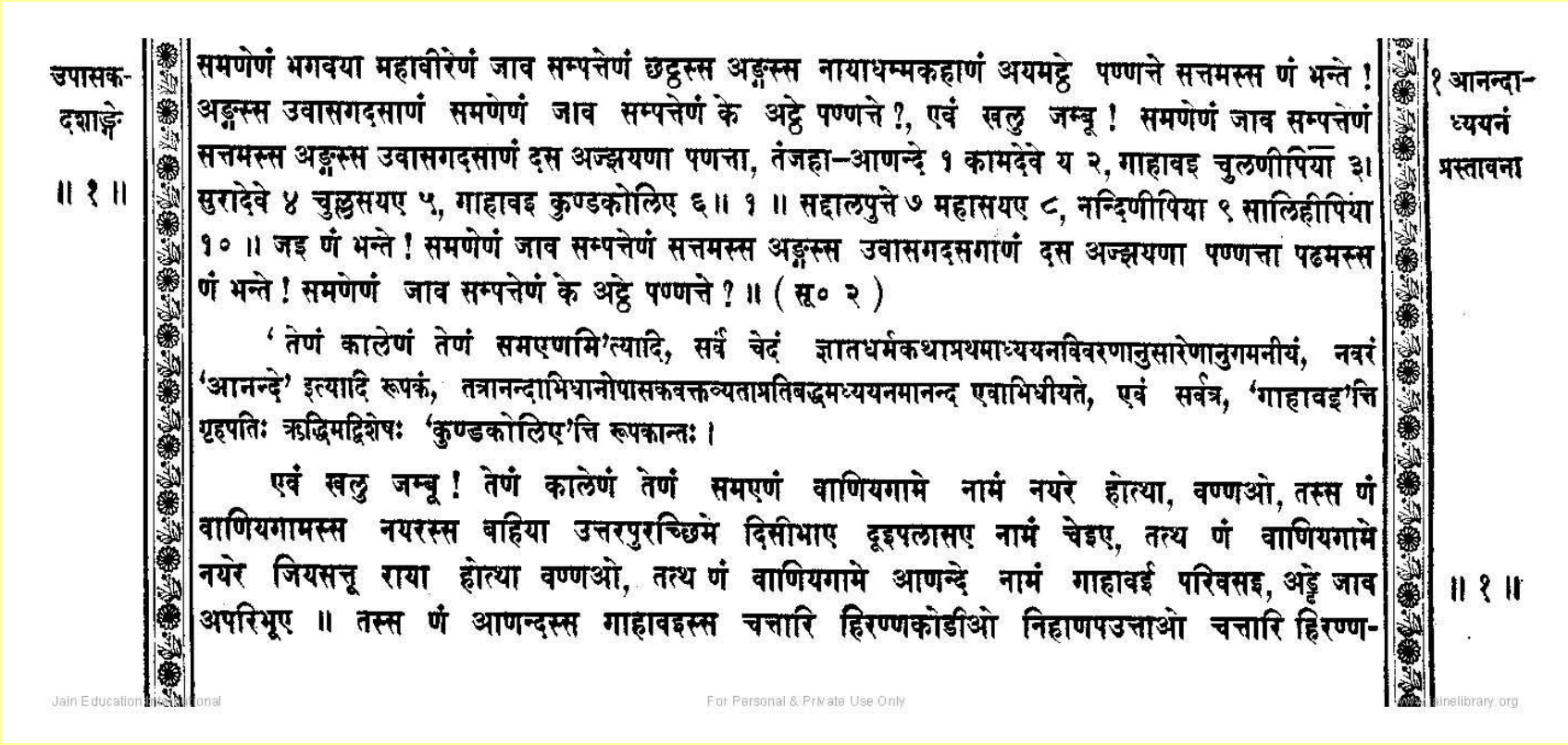

समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं छट्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तमस्स णं भन्ते ! अङ्गस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पणत्ता, तंजहा—आणन्दे १ कामदेवे य २, गाहावइ चुलणीपिया ३। सुरादेवे ४ चुल्लसयए ५, गाहावइ कुण्डकोलिए ६॥ १ ॥ सद्दालपुत्ते ७ महासयए ८, नन्दिणीपिया ९ सालिहीपिया १० ॥ जइ णं भन्ते ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसगाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भन्ते ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? ॥ (सू० २)

'तेणं कालेणं तेणं समएणमि'त्यादि, सर्वं चेदं ज्ञातधर्मकथाप्रथमाध्ययनविवरणानुसारेणानुगमनीयं, नवरं 'आनन्दे' इत्यादि रूपकं, तत्रानन्दाभिधानोपासकवक्तव्यताप्रतिबद्धमध्ययनमानन्द एवाभिधीयते, एवं सर्वत्र, 'गाहावइ'त्ति गृहपतिः ऋद्धिमद्विशेषः 'कुण्डकोलिए'त्ति रूपकान्तः।

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था, वण्णओ, तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए दूइपलासए नामं चेइए, तत्थ णं वाणियगामे नयरे जियसत्तू राया होत्था वण्णओ, तत्थ णं वाणियगामे आणन्दे नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव ॥ १ ॥
अपरिभूए ॥ तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्ण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ अध्ययन- १ "आनंद" आरभ्यते, [आनंद श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [३-५]

दीप अनुक्रम [५-७]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

कोडीओ वुड्डिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडिओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥ से णं आणन्दे गाहावई बहूणं राईसर जाव सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मन्तेसु य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स मेढी पमाणं आहारे आलम्बणं चक्खू, मेढीभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था ॥ तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स सिवानन्दा नामं भारिया होत्था, अहीण जाव सुरूवा आनन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा आणन्देणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठा सद्द जाव पञ्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥ तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय जाव पासादीए ४ ॥ तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए मित्तनाइनियगसयणसम्बन्धिपरिजणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए । तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए, परिसा निग्गया, कोणिए राया जहा तहा जियसत्तू निग्गच्छइ २ त्ता जाव पज्जुवासइ ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं महाफलं जाव गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि, एवं सम्पेहेइ २ त्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता सकोरण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

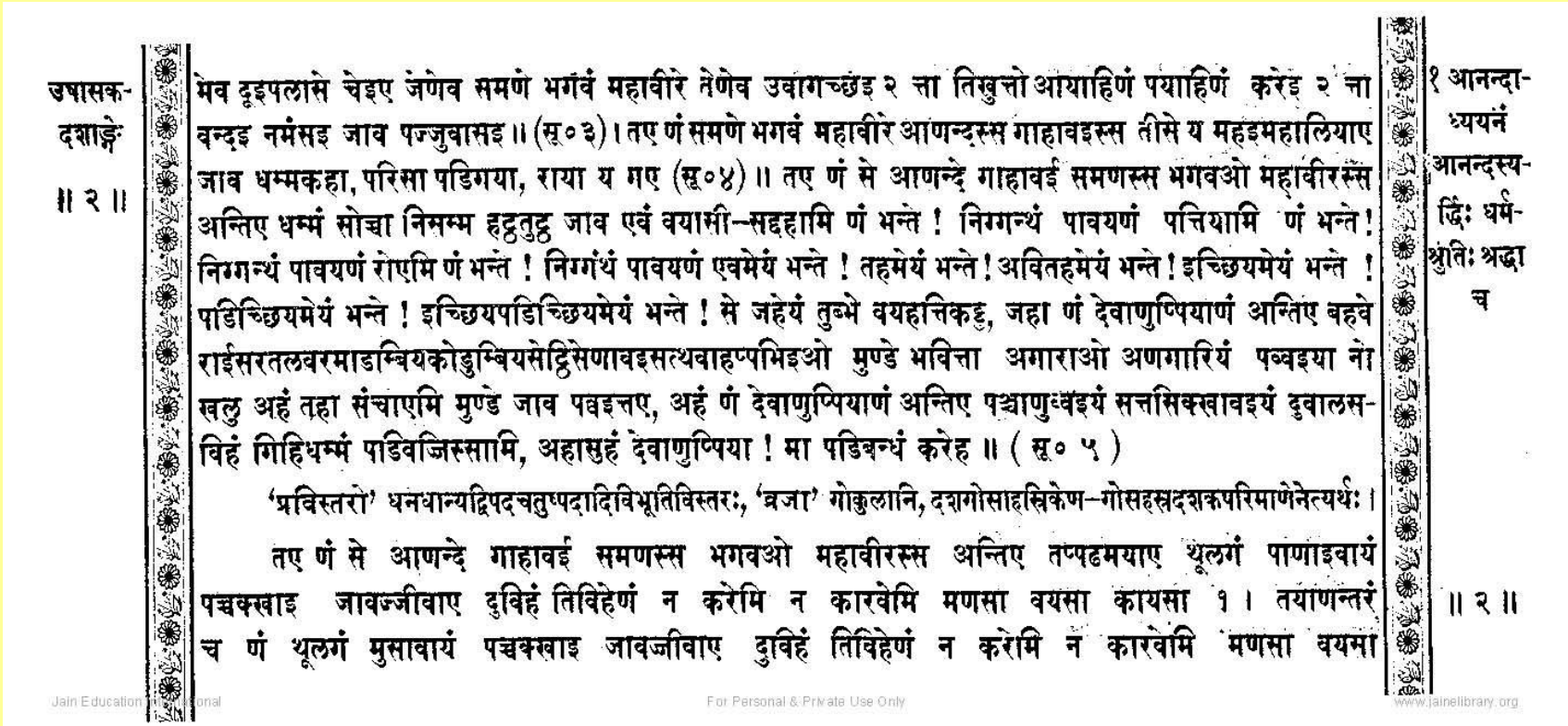

प्रत सूत्रांक [३-५] दीप अनुक्रम [५-७]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

उपासक-दशाङ्गे ॥ २ ॥

१ आनन्दाध्ययनं आनन्दस्यर्द्धिः धर्मश्रुतिः श्रद्धा च

मेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वन्दइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ ॥ (सू० ३)। तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया, राया य गए (सू०४) ॥ तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी—सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं पत्तियामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं रोएमि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं एवमेयं भन्ते ! तहमेयं भन्ते ! अवितहमेयं भन्ते ! इच्छियमेयं भन्ते ! पडिच्छियमेयं भन्ते ! इच्छियपडिच्छियमेयं भन्ते ! से जहेयं तुब्भे वयहत्तिकट्टु, जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसरतलवरमाडम्बियकोडुम्बियसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिइओ मुण्डे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे जाव पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ॥ (सू० ५)

'प्रविस्तरो' धनधान्यद्विपदचतुष्पदादिविभूतिविस्तरः, 'व्रजा' गोकुलानि, दशगोसाहस्रिकेण—गोसहस्रदशकपरिमाणेनेत्यर्थः ।

तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं पाणाइवायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा १। तयाणन्तरं च णं थूलगं मुसावायं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा ॥ २ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य धर्मश्रवण, श्रद्धा, श्रमणोपासक-व्रतस्वीकार

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [८]

कायसा २। तयाणन्तरं च णं थूलगं अदिण्णादाणं पच्चक्खाइ जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा ३। तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए परिमाणं करेइ, नन्नत्थ एक्काए सिवानन्दाए भारियाए, अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं पच्चक्खामि म० ३, ४। तयाणन्तरं च णं इच्छाविहिपरिमाणं करेमाणे हिरण्णसुवण्णविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं चउहिं वुड्ढिपउत्ताहिं चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्णसुवण्णविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं खेत्तवत्थुविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्तवत्थुविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं पञ्चहिं सगडसएहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं चउहिं वाहणेहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं वाहणविहिं पच्चक्खामि ३, ५। तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खाएमाणे उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगाए गन्धकासाईए, अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं दन्तवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं, अवसेसं दन्तवणविहिं पच्चक्खामि ३। तयाणन्तरं च फलविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं फलविहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य श्रमणोपासक-द्वादश व्रतस्वीकारं (यहाँ ख़याल रहे की उपलक्षण से १२- व्रत ऐसा लिखा है, वैसे तो यहाँ ७ व्रत दिखाई देते है, जिसमे पहेले चार व्रत के प्रत्याख्यान तो संक्षिप्त और स्पष्टरूपसे है, पांचवा व्रत थोडा विस्तार से है, फिर उपभोग-परिभोग विषयक प्रत्याख्यान ज्यादा विस्तार से है, उसके बाद अनर्थदंड विषयक प्रत्याखान का उल्लेख है | बाकी व्रतो का उल्लेख नहीं है, लेकिन अतिचार-वर्णनमें बारह व्रतो का उल्लेख है |)

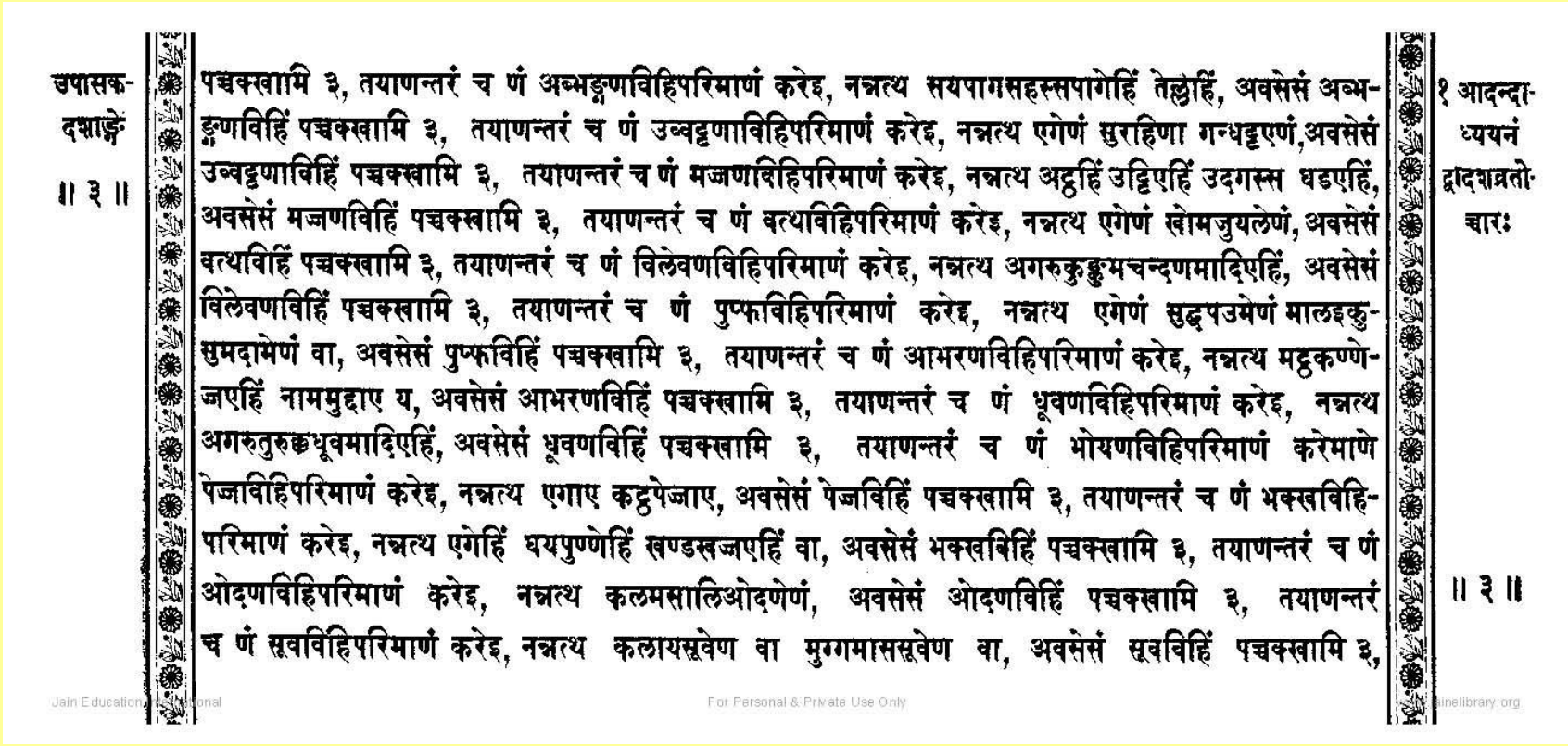

प्रत सूत्रांक [६] दीप अनुक्रम [८]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

उपासक-दशाङ्गे ॥ ३ ॥

पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं अब्भङ्गणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं, अवसेसं अब्भ-ङ्गणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा गन्धट्टएणं, अवसेसं उव्वट्टणाविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं, अवसेसं मज्जणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं वत्थविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अगरुकुङ्कुमचन्दणमादिएहिं, अवसेसं विलेवणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेणं वा, अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममुद्दाए य, अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ अगरुतुरुक्कधूवमादिएहिं, अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे पेज्जविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अवसेसं पेज्जविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खण्डखज्जएहिं वा, अवसेसं भक्खविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ कलमसालिओदणेणं, अवसेसं ओदणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं सूवविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ कलायसूवेण वा मुग्गमाससूवेण वा, अवसेसं सूवविहिं पच्चक्खामि ३,

१ आनन्दाध्ययनं द्वादशव्रतोच्चारः ॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य श्रमणोपासक-द्वादश व्रतस्वीकार

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [८]

तयाणन्तरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएणं गोघयमण्डेणं, अवसेसं घयविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ वत्थुसाएण वा सुत्थियसाएण वा मण्डुक्कियसाएण वा, अवसेसं सागविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं माहुरयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं पालङ्गामाहुरएणं, अवसेसं माहुरयविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं जेमणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सेहंबदालियंबेहिं, अवसेसं जेमणविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं पाणियविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अन्तलिक्खोदएणं, अवसेसं पाणियविहिं पच्चक्खामि ३, तयाणन्तरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ पञ्चसोगन्धिएणं तम्बोलेणं, अवसेसं मुहवासविहिं पच्चक्खामि ३, ६। तयाणन्तरं च णं चउव्विहं अणट्ठादण्डं पच्चक्खाइ, तंजहा—अवज्झाणायरियं पमायायरियं हिंसप्पयाणं पावकम्मोवएसे ३, ७। (सू० ६)

'तप्पढमयाए'त्ति तेषाम्—अणुव्रतादीनां प्रथमं तत्प्रथमं तद्भावस्तत्प्रथमता तया 'थूलगं'ति त्रसविषयं 'जावज्जीवाए'त्ति यावती चासौ जीवा च—प्राणधारणं यावज्जीवा यावान् वा जीवः—प्राणधारणं यस्यां प्रतिज्ञायां सा यावज्जीवा तया, 'दुविहं'ति करणकारणभेदेन द्विविधं प्राणातिपातं 'तिविहेणं'ति मनःप्रभृतिना करणेन 'कायस'त्ति सकारस्यागमिकत्वात्कायेनेत्यर्थः, न करोमीत्यादिनैतदेव व्यक्तीकृतं। स्थूलमृषावादः—तीव्रसंक्लेशात्तीव्रस्यैव संक्लेशस्योत्पादकः। स्थूलकमदत्तादानं—चौर इति व्यपदेशनिबन्धनं। स्वदारैः सन्तोषः स्वदारसन्तोषः स एव स्वदारसन्तोषिकः स्वदारसन्तोषिर्वा स्वदारसन्तुष्टिः, तत्र परिमाणं—बहुभिर्दारैरुपजायमानस्य सङ्क्षेपकरणं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य श्रमणोपासक-द्वादश व्रतस्वीकार

प्रत
सूत्रांक
[६]

दीप
अनुक्रम
[८]

कथम् ? –'नन्नत्थे'ति न मैथुनमाचरामि अन्यत्र एकस्याः स्त्रियाः, किमभिधानायाः ? –शिवानन्दायाः, किम्भूतायाः ? –भार्यायाः, स्वस्येति गम्यते, एतदेव स्पष्टयन्नाह–अवशेषं–तद्वर्जं मैथुनविधिं तत्प्रकारं तत्कारणं वा, तथा वृद्धव्याख्या तु 'नन्नत्थ' त्ति अन्यत्र तां वर्जयित्वेत्यर्थः। हिरण्णं ति–रजतं सुवर्णं–प्रतीतं विधिः–प्रकारः, 'नन्नत्थ' त्ति न–नैव करोमीच्छां हिरण्यादौ, अन्यत्र चतसृभ्यो हिरण्यकोटीभ्यः, ता वर्जयित्वेत्यर्थः, 'अवसेसं' ति शेषं तदतिरिक्तमित्येवं सर्वत्रावसेयम्, 'खेत्तवत्थु' त्ति–इह क्षेत्रमेव वस्तु क्षेत्रवस्तु ग्रन्थान्तरे तु क्षेत्रं च वास्तु च–गृहं क्षेत्रवास्तु इति व्याख्यायते, 'नियत्तणसइएणं' ति निवर्त्तनं–भूमिपरिमाणविशेषो देशविशेषप्रसिद्धः ततो निवर्त्तनशतं कर्षणीयत्वेन यस्यास्ति तन्निवर्त्तनशतिकं तेन, 'दिसायत्तिएहिं' ति दिग्यात्रा–देशान्तरगमनं प्रयोजनं येषां तानि दिग्यात्रिकानि तेभ्योऽन्यत्र, 'संवाहणिएहिं' ति संवाहनं क्षेत्रादिभ्यस्तृणकाष्ठधान्यादेर्गृहादावानयनं तत्प्रयोजनानि सांवाहनिकानि तेभ्योऽन्यत्र, 'वाहणेहिं' ति यानपात्रेभ्यः, 'उवभोगपरिभोग' त्ति उपभुज्यते–पौनःपुन्येन सेव्यत इत्युपभोगो–भवनवसनवनितादिः परिभुज्यते–सकृदासेव्यत इति परिभोगः–आहारकुसुमविलेपनादिः व्यत्ययो वा व्याख्येय इति, 'उल्लणिय' त्ति स्नानजलार्द्रशरीरस्य जललूषणवस्त्रं, 'गन्धकासाईए' त्ति गन्धप्रधाना कषायेण रक्ता शाटिका गन्धकाषायी तस्याः, 'दन्तवण' त्ति दन्तपावनं–दन्तमलापकर्षणकाष्ठम्, 'अल्ललट्ठीमहुएणं' ति आर्द्रेण यष्टीमधुना–मधुररसवनस्पतिविशेषेण, 'खीरामलएणं' ति अबद्धास्थिकं क्षीरमिव मधुरं वा यदामलकं तस्मादन्यत्र, 'सयपागसहस्सपागेहिं' ति द्रव्यशतस्य सत्कं क्वाथशतेन सह यत्पच्यते कार्षापणशतेन वा तच्छतपाकम्, एवं सहस्रपाकमपि, 'गन्धट्टएणं' ति गन्धद्रव्याणामुपलकुष्ठादीनां 'अट्टओ' त्ति चूर्णं गोधूमचूर्णं वा गन्धयुक्तं तस्मादन्यत्र, 'उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं' ति उष्ट्रिका–बृहन्मृन्मयभाण्डं तत्पूरणप्रयोजना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य श्रमणोपासक-द्वादश व्रतस्वीकार

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [८]

ये घटास्त उष्ट्रिकाः, उचितप्रमाणा नातिलघवो महान्तो वेत्यर्थः, इह च सर्वत्रान्यत्रेतिशब्दप्रयोगेऽपि प्राकृतत्वात्पञ्चम्यर्थे तृतीया द्रष्टव्येति, 'खोमजुयलेणं' ति कार्पासिकवस्त्रयुगलादन्यत्र, 'अगरु' त्ति अगुरुर्गन्धद्रव्यविशेषः, 'सुद्धपउमेणं'ति कुसुमान्तरवियुतं पुण्डरीकं वा शुद्धपद्मं ततोऽन्यत्र, 'मालइकुसुमदाम' त्ति जातिपुष्पमाला 'मट्ठकण्णेज्जएहिं' ति मृष्टाभ्याम्-अचित्रवद्भ्यां कर्णाभरणविशेषाभ्यां 'नाममुद्द' त्ति नामाङ्किता मुद्रा--अङ्गुलीयकं नाममुद्रा, 'तुरुक्कधूव'त्ति सेल्हकलक्षणो धूपः, 'पेज्जविहिं' ति पेयाहारप्रकारं 'कट्ठपेज्ज' त्ति मुद्गादियूषो घृततलिततण्डुलपेया वा, 'भक्ख' त्ति खरविशदमभ्यवहार्यं भक्षमित्यन्यत्र रूढम्, इह तु पक्वान्नमात्रं तद्विवक्षितं, 'घयपुण्ण' त्ति घृतपूराः प्रसिद्धाः, 'खण्डखज्ज' त्ति खण्डलिप्तानि खाद्यानि अशोकवर्त्तगः खण्डखाद्यानि, 'ओदण' त्ति ओदनः-कूरं, 'कलत्त(म)सालि' त्ति पूर्वदेशप्रसिद्धः, 'सूव' त्ति सूपः कूरस्य द्वितीयाशनं प्रसिद्ध एव 'कलायसूवे' त्ति कलायाः चणकाकारा धान्यविशेषा मुद्गा माषाश्च प्रसिद्धाः, 'सारइएणं गोघयमण्डेणं' ति शारदिकेन शरत्कालोत्पन्नेन गोघृतमण्डेन-गोघृतसारेण, 'साग' त्ति शाको वस्तुलादिः, 'चूचुसाए' त्ति चूचुशाकः, सौवस्तिकशाको मण्डूकिकाशाकश्च लोकप्रसिद्धा एव, 'माहुरय' त्ति अनम्लरसानि शालनकानि, 'पालङ्ग' त्ति वल्लीफलविशेषः, 'जेमण' त्ति जेमनानि वटकपूरणादीनि, 'सेहंबदालियंबेहिं' ति सेधे-सिद्धौ सति यानि अम्लेन-तीमनादिना संस्क्रियन्ते तानि सेधाम्लानि यानि दाल्या मुद्गादिमय्या निष्पादितानि अम्लानि च तानि दालिकाम्लानीति सम्भाव्यन्ते, 'अन्तलिक्खोदयं' ति यज्जलमाकाशात्पतदेव गृह्यते तदन्तरिक्षोदकम्, 'पञ्चसोगन्धिएणं' ति पञ्चभिः-एलालवङ्गकपूरककोलजातीफललक्षणैः सुगन्धिभिर्द्रव्यैरभिसंस्कृतं पञ्चसौगन्धिकम्। 'अणट्ठादण्ड' न्ति अनर्थेन-धर्मार्थकामव्यतिरेकेण दण्डोऽनर्थदण्डः, 'अवज्झाणायरियं' ति अपध्यानम्-आर्त्तरौद्ररूपं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य श्रमणोपासक-द्वादश व्रतस्वीकार

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

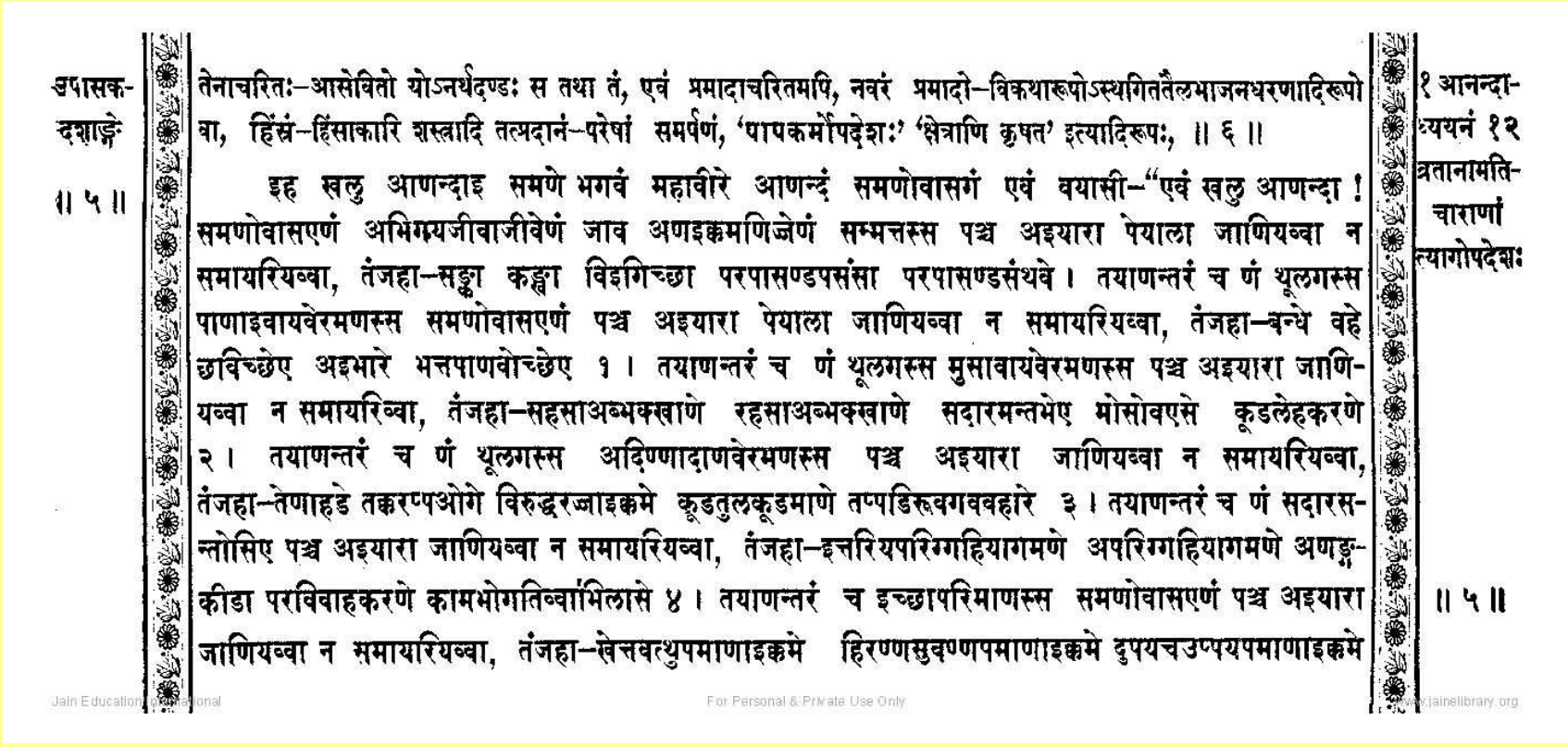

तेनाचरितः—आसेवितो योऽनर्थदण्डः स तथा तं, एवं प्रमादाचरितमपि, नवरं प्रमादो—विकथारूपोऽस्थगिततैलभाजनधरणादिरूपो वा, हिंस्रं—हिंसाकारि शस्त्रादि तत्प्रदानं—परेषां समर्पणं, 'पापकर्मोपदेशः' 'क्षेत्राणि कृषत' इत्यादिरूपः, ॥ ६ ॥

इह खलु आणन्दाइ समणे भगवं महावीरे आणन्दं समणोवासगं एवं वयासी—"एवं खलु आणन्दा! समणोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं जाव अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—सङ्का कङ्खा विइगिच्छा परपासण्डपसंसा परपासण्डसंथवे। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—बन्धे वहे छविच्छेए अइभारे भत्तपाणवोच्छेए १। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स मुसावायवेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरिव्वा, तंजहा—सहसाअब्भक्खाणे रहसाअब्भक्खाणे सदारमन्तभेए मोसोवएसे कूडलेहकरणे २। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—तेणाहडे तक्करप्पओगे विरुद्धरज्जाइक्कमे कूडतुलकूडमाणे तप्पडिरूवगववहारे ३। तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—इत्तरियपरिग्गहियागमणे अपरिग्गहियागमणे अणङ्गकीडा परविवाहकरणे कामभोगतिव्वाभिलासे ४। तयाणन्तरं च इच्छापरिमाणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा—खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७] दीप अनुक्रम [९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

धणधन्नपमाणाइक्कमे कुवियपमाणाइक्कमे ५। तयाणन्तरं च णं दिसिवयस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे अहोदिसिपमाणाइक्कमे तिरियदिसिपमाणाइक्कमे खेत्तवुड्ढी सइअन्तरद्धा ६। तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–भोयणओ य कम्मओ य, तत्थ णं भोयणओ समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–सचित्ताहारे सचित्तपडिबद्धाहारे अप्पउलिओसहिभक्खणया दुप्पउलिओसहिभक्खणया तुच्छोसहिभक्खणया, कम्मओ णं समणोवासएणं पणरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं न समायरियव्वाइं, तंजहा–इङ्गालकम्मे वणकम्मे साडीकम्मे भाडीकम्मे फोडीकम्मे दन्तवाणिज्जे लक्खवाणिज्जे रसवाणिज्जे विसवाणिज्जे केसवाणिज्जे जन्तपीलणकम्मे निल्लञ्छणकम्मे दवग्गिदावणया सरदहतलावसोसणया असईजणपोसणया ७। तयाणन्तरं च णं अणट्ठादण्डवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–कन्दप्पे कुक्कुइए मोहरिए सञ्जुत्ताहिगरणे उवभोगपरिभोगाइरित्ते ८। तयाणन्तरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–मणदुप्पणिहाणे वयदुप्पणिहाणे कायदुप्पणिहाणे सामाइयस्स सइअकरणया सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ९। तयाणन्तरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा–आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सद्दाणुवाए रूवाणुवाए बहिया पोग्गलपक्खेवे १०। तयाणन्तरं च णं पोसहोववासस्स समणोवासएणं पञ्च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

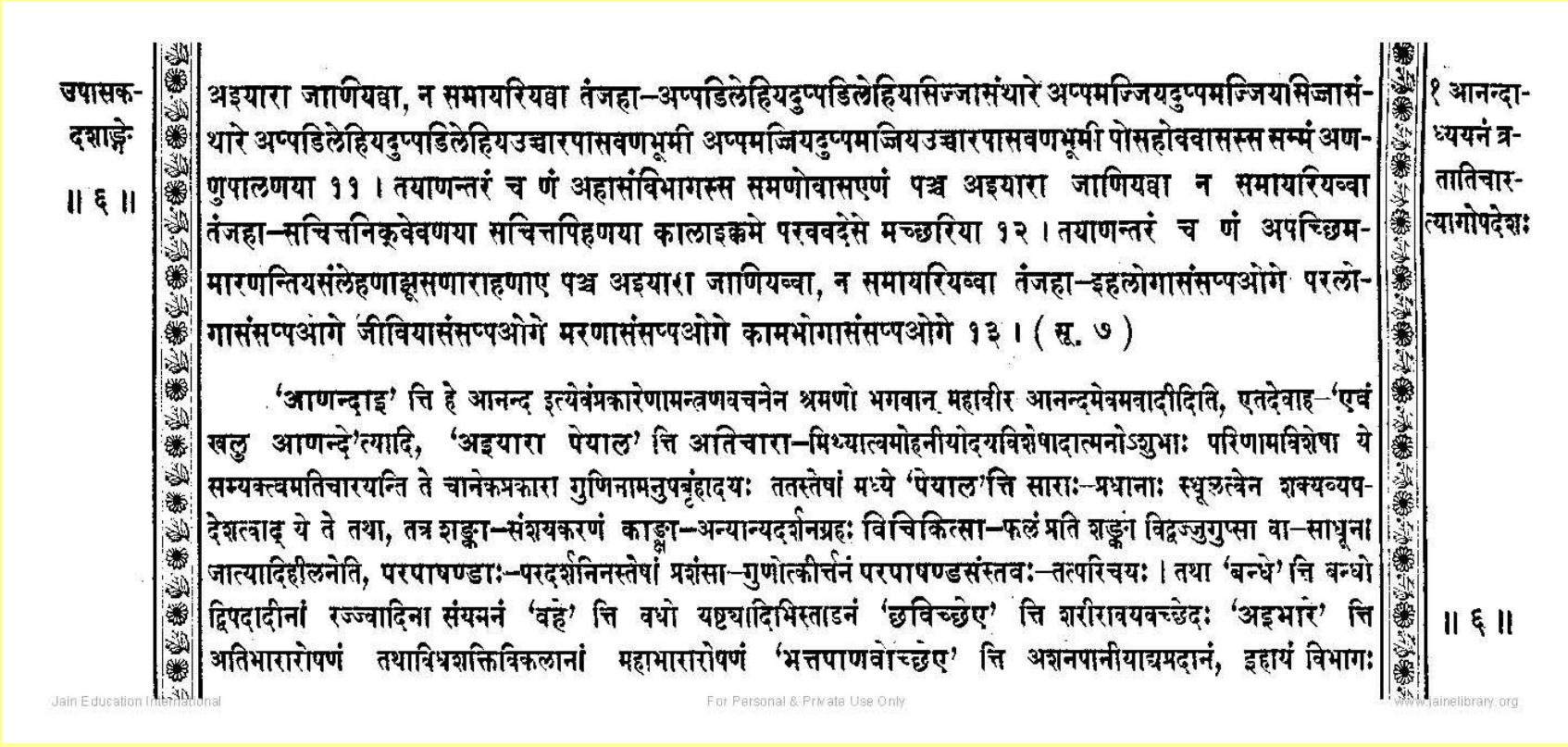

अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा तंजहा—अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारे अप्पमज्जियदुप्पमज्जियासिज्जासंथारे अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ११। तयाणन्तरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा—सचित्तनिक्खेवणया सचित्तपिहणया कालाइक्कमे परववदेसे मच्छरिया १२। तयाणन्तरं च णं अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाराहणाए पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा तंजहा—इहलोगासंसप्पओगे परलोगासंसप्पओगे जीवियासंसप्पओगे मरणासंसप्पओगे कामभोगासंसप्पओगे १३। (सू. ७)

'आणन्दाइ' त्ति हे आनन्द इत्येवंप्रकारेणामन्त्रणवचनेन श्रमणो भगवान् महावीर आनन्दमेवमवादीदिति, एतदेवाह—'एवं खलु आणन्दे'त्यादि, 'अइयारा पेयाल' त्ति अतिचारा—मिथ्यात्वमोहनीयोदयविशेषादात्मनोऽशुभाः परिणामविशेषा ये सम्यक्त्वमतिचारयन्ति ते चानेकप्रकारा गुणिनामनुपबृंहादयः ततस्तेषां मध्ये 'पेयाल'त्ति साराः—प्रधानाः स्थूलत्वेन शक्यव्यपदेशत्वाद् ये ते तथा, तत्र शङ्का—संशयकरणं काङ्क्षा—अन्यान्यदर्शनग्रहः विचिकित्सा—फलं प्रति शङ्का विद्वज्जुगुप्सा वा—साधूनां जात्यादिहीलनेति, परपाषण्डाः—परदर्शनिनस्तेषां प्रशंसा—गुणोत्कीर्त्तनं परपाषण्डसंस्तवः—तत्परिचयः। तथा 'बन्धे' त्ति बन्धो द्विपदादीनां रज्ज्वादिना संयमनं 'वहे' त्ति वधो यष्ट्यादिभिस्ताडनं 'छविच्छेए' त्ति शरीरावयवच्छेदः 'अइभारे' त्ति अतिभारारोपणं तथाविधशक्तिविकलानां महाभारारोपणं 'भत्तपाणवोच्छेए' त्ति अशनपानीयाद्यप्रदानं, इहायं विभागः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[७]

दीप
अनुक्रम
[९]

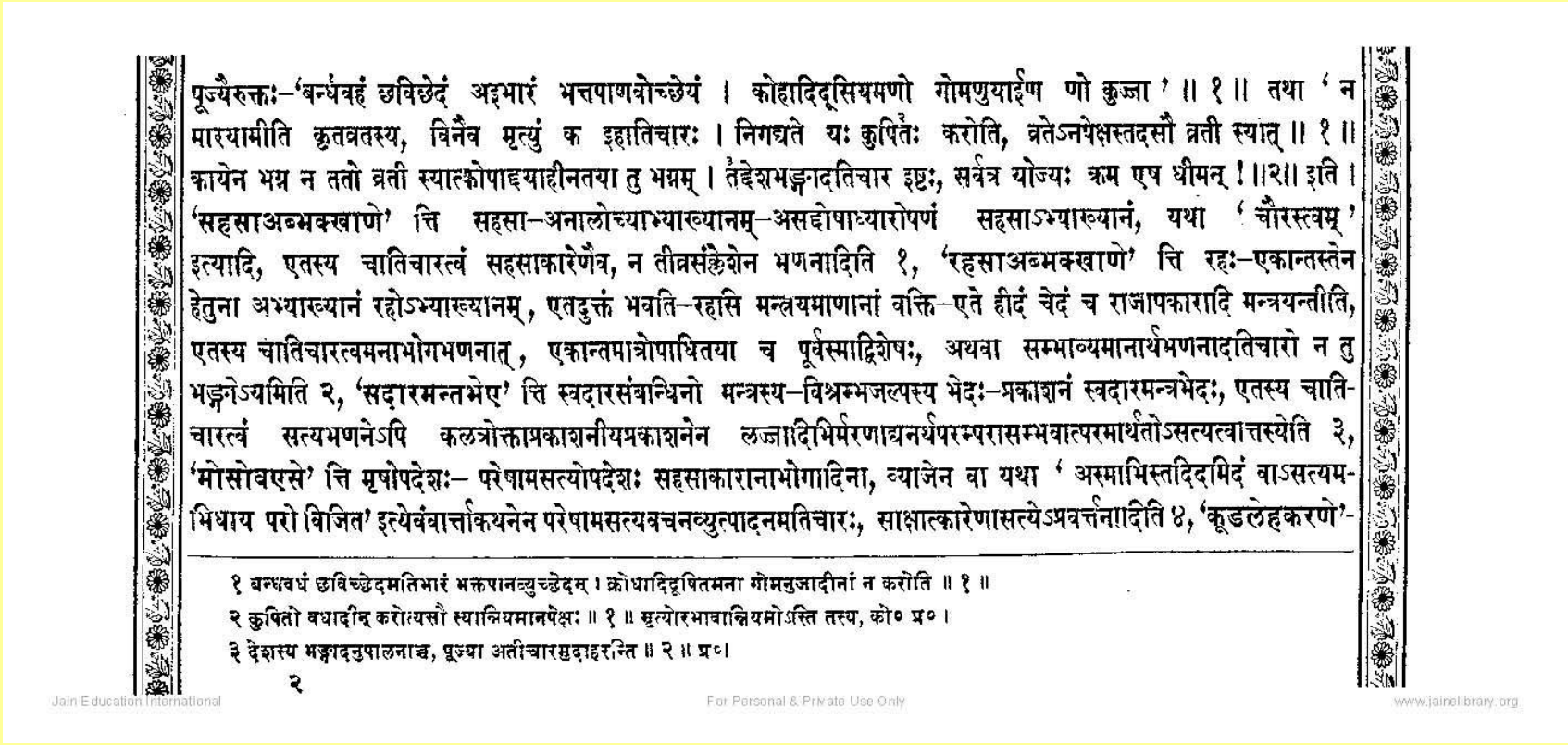

पूज्यैरुक्तः–'बन्धंवहं छविछेदं अइभारं भत्तपाणवोच्छेयं । कोहादिदूसियमणो गोमणुयाईण णो कुज्जा'॥ १॥ तथा 'न मारयामीति कृतव्रतस्य, विनैव मृत्युं क इहातिचारः । निगद्यते यः कुपितः[२] करोति, व्रतेऽनपेक्षस्तदसौ व्रती स्यात् ॥ १॥ कायेन भग्न न ततो व्रती स्यात्कोपाद्दयाहीनतया तु भग्नम् । तद्देश[३]भङ्गादतिचार इष्टः, सर्वत्र योज्यः क्रम एष धीमन्!॥२॥ इति। 'सहसाअब्भक्खाणे' त्ति सहसा–अनालोच्याभ्याख्यानम्–असद्दोषाध्यारोपणं सहसाऽभ्याख्यानं, यथा 'चौरस्त्वम्' इत्यादि, एतस्य चातिचारत्वं सहसाकारेणैव, न तीव्रसंक्लेशेन भणनादिति १, 'रहसाअब्भक्खाणे' त्ति रहः–एकान्तस्तेन हेतुना अभ्याख्यानं रहोऽभ्याख्यानम्, एतदुक्तं भवति–रहसि मन्त्रयमाणानां वक्ति–एते हीदं चेदं च राजापकारादि मन्त्रयन्तीति, एतस्य चातिचारत्वमनाभोगभणनात्, एकान्तमात्रोपाधितया च पूर्वस्माद्विशेषः, अथवा सम्भाव्यमानार्थभणनादतिचारो न तु भङ्गोऽयमिति २, 'सदारमन्तभेए' त्ति स्वदारसंबन्धिनो मन्त्रस्य–विश्रम्भजल्पस्य भेदः–प्रकाशनं स्वदारमन्त्रभेदः, एतस्य चातिचारत्वं सत्यभणनेऽपि कलत्रोक्ताप्रकाशनीयप्रकाशनेन लज्जादिभिर्मरणाद्यनर्थपरम्परासम्भवात्परमार्थतोऽसत्यत्वात्तस्येति ३, 'मोसोवएसे' त्ति मृषोपदेशः– परेषामसत्योपदेशः सहसाकारानाभोगादिना, व्याजेन वा यथा 'अस्माभिस्तदिदमिदं वाऽसत्यमभिधाय परो विजित' इत्येवंवार्त्ताकथनेन परेषामसत्यवचनव्युत्पादनमतिचारः, साक्षात्कारेणासत्येऽप्रवर्त्तनादिति ४, 'कूडलेहकरणे'-

१ बन्धवधं छविच्छेदमतिभारं भक्तपानव्युच्छेदम् । क्रोधादिदूषितमना गोमनुजादीनां न करोति ॥ १॥
२ कुपितो वधादीन् करोत्यसौ स्यान्नियमानपेक्षः ॥ १॥ मृत्योरभावान्नियमोऽस्ति तस्य, को० प्र०।
३ देशस्य भङ्गादनुपालनाच्च, पूज्या अतीचारमुदाहरन्ति ॥ २॥ प्र०।

२

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[७]

दीप
अनुक्रम
[९]

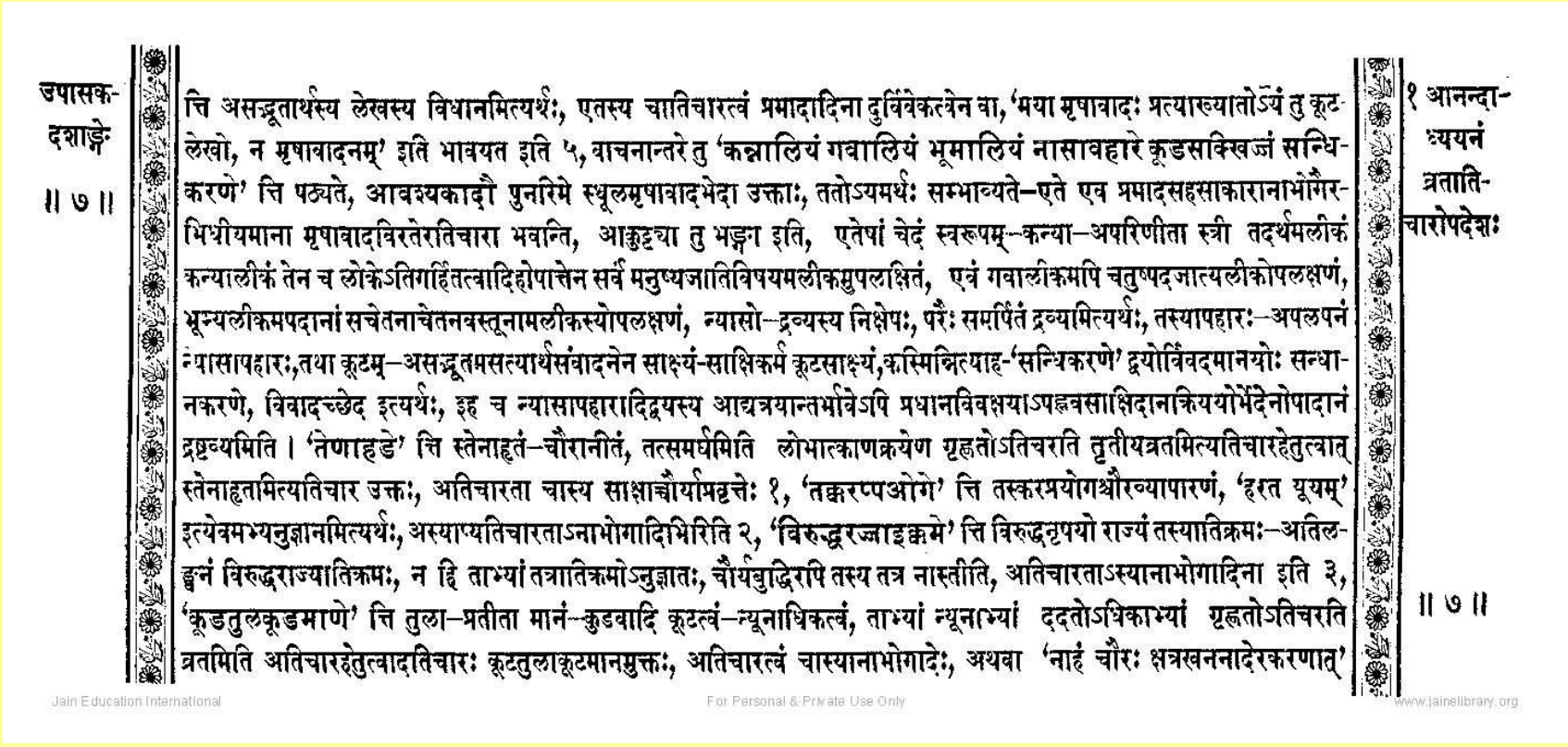

उपासक-
दशाङ्गे
॥ ७ ॥

त्ति असद्भूतार्थस्य लेखस्य विधानमित्यर्थः, एतस्य चातिचारत्वं प्रमादादिना दुर्विवेकत्वेन वा, 'मया मृषावादः प्रत्याख्यातोऽयं तु कूट-
लेखो, न मृषावादनम्' इति भावयत इति ५, वाचनान्तरे तु 'कन्नालियं गवालियं भूमालियं नासावहारे कूडसक्खिज्जं सन्धि-
करणे' त्ति पठ्यते, आवश्यकादौ पुनरिमे स्थूलमृषावादभेदा उक्ताः, ततोऽयमर्थः सम्भाव्यते—एते एव प्रमादसहसाकारानाभोगैर-
भिधीयमाना मृषावादविरतेरतिचारा भवन्ति, आकुट्टया तु भङ्गा इति, एतेषां चेदं स्वरूपम्—कन्या—अपरिणीता स्त्री तदर्थमलीकं
कन्यालीकं तेन च लोकेऽतिगर्हितत्वादिहोपात्तेन सर्वं मनुष्यजातिविषयमलीकमुपलक्षितं, एवं गवालीकमपि चतुष्पदजात्यलीकोपलक्षणं,
भून्यलीकमपदानां सचेतनाचेतनवस्तूनामलीकस्योपलक्षणं, न्यासो—द्रव्यस्य निक्षेपः, परैः समर्पितं द्रव्यमित्यर्थः, तस्यापहारः—अपलपनं
न्यासापहारः,तथा कूटम्—असद्भूतमसत्यार्थसंवादनेन साक्ष्यं-साक्षिकर्म कूटसाक्ष्यं,कस्मिन्नित्याह-'सन्धिकरणे' द्वयोर्विवदमानयोः सन्धा-
नकरणे, विवादच्छेद इत्यर्थः, इह च न्यासापहारादिद्वयस्य आद्यत्रयान्तर्भावेऽपि प्रधानविवक्षयाऽपह्नवसाक्षिदानक्रिययोर्भेदेनोपादानं
द्रष्टव्यमिति । 'तेणाहडे' त्ति स्तेनाहृतं—चौरानीतं, तत्समर्घमिति लोभात्काणक्रयेण गृह्णतोऽतिचरति तृतीयव्रतमित्यतिचारहेतुत्वात्
स्तेनाहृतमित्यतिचार उक्तः, अतिचारता चास्य साक्षाच्चौर्याप्रवृत्तेः १, 'तक्करप्पओगे' त्ति तस्करप्रयोगश्चौरव्यापारणं, 'हरत यूयम्'
इत्येवमभ्यनुज्ञानमित्यर्थः, अस्याप्यतिचारताऽनाभोगादिभिरिति २, 'विरुद्धरज्जाइक्कमे' त्ति विरुद्धनृपयो राज्यं तस्यातिक्रमः—अतिल-
ङ्घनं विरुद्धराज्यातिक्रमः, न हि ताभ्यां तत्रातिक्रमोऽनुज्ञातः, चौर्यबुद्धिरपि तस्य तत्र नास्तीति, अतिचारताऽस्यानाभोगादिना इति ३,
'कूडतुलकूडमाणे' त्ति तुला—प्रतीता मानं—कुडवादि कूटत्वं—न्यूनाधिकत्वं, ताभ्यां न्यूनाभ्यां ददतोऽधिकाभ्यां गृह्णतोऽतिचरति
व्रतमिति अतिचारहेतुत्वादतिचारः कूटतुलाकूटमानमुक्तः, अतिचारत्वं चास्यानाभोगादेः, अथवा 'नाहं चौरः क्षत्रखननादेरकरणात्'

१ आनन्दा-
ध्ययनं
व्रताति-
चारोपदेशः

॥ ७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

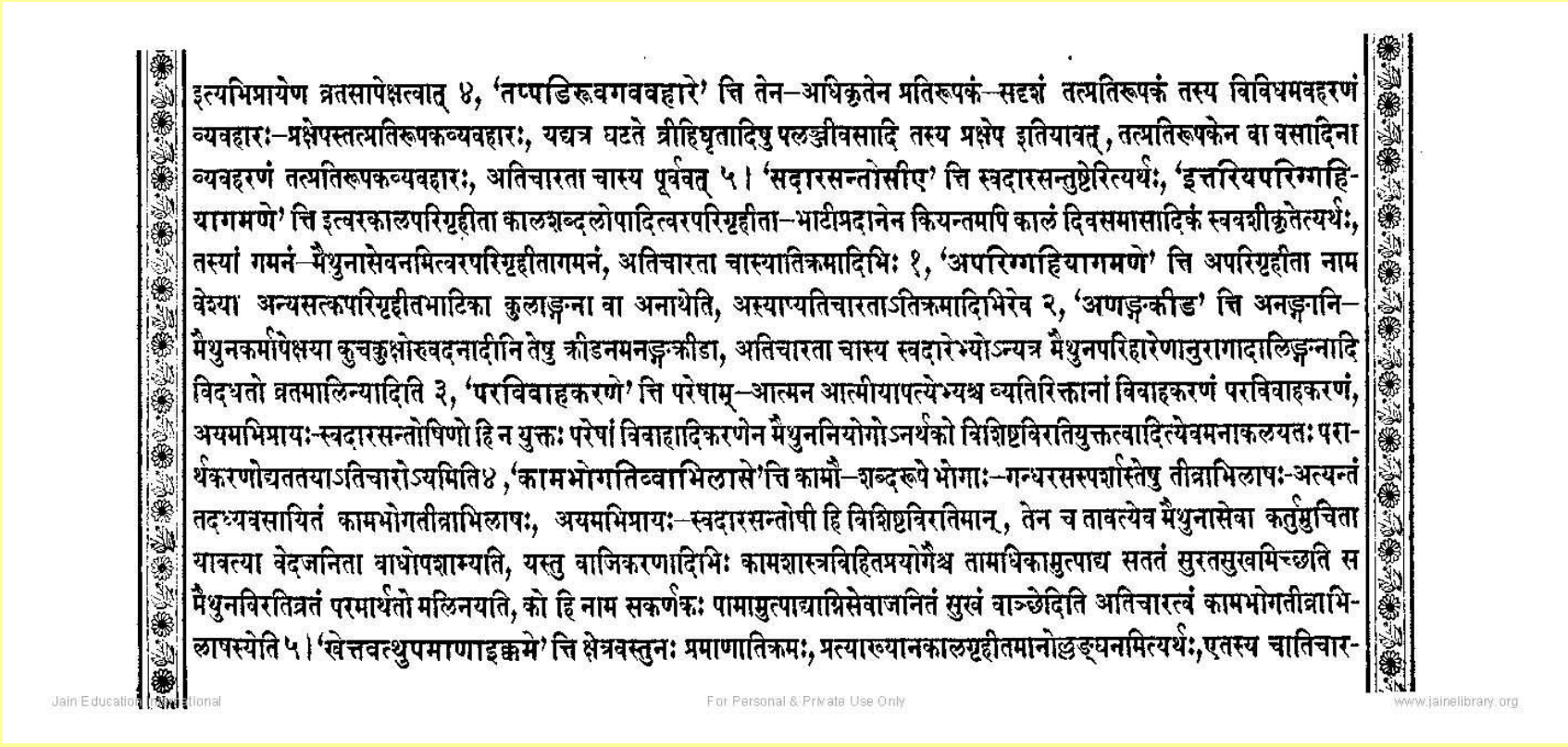

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

इत्यभिप्रायेण व्रतसापेक्षत्वात् ४, 'तप्पडिरूवगववहारे' त्ति तेन–अधिकृतेन प्रतिरूपकं–सदृशं तत्प्रतिरूपकं तस्य विविधमवहरणं व्यवहारः–प्रक्षेपस्तत्प्रतिरूपकव्यवहारः, यद्यत्र घटते व्रीहिघृतादिषु पलञ्जीवसादि तस्य प्रक्षेप इतियावत्, तत्प्रतिरूपकेन वा वसादिना व्यवहरणं तत्प्रतिरूपकव्यवहारः, अतिचारता चास्य पूर्ववत् ५। 'सदारसन्तोसीए' त्ति स्वदारसन्तुष्टेरित्यर्थः, 'इत्तरियपरिग्गहियागमणे' त्ति इत्वरकालपरिगृहीता कालशब्दलोपादित्वरपरिगृहीता–भाटीप्रदानेन कियन्तमपि कालं दिवसमासादिकं स्ववशीकृतेत्यर्थः, तस्यां गमनं–मैथुनासेवनमित्वरपरिगृहीतागमनं, अतिचारता चास्यातिक्रमादिभिः १, 'अपरिग्गहियागमणे' त्ति अपरिगृहीता नाम वेश्या अन्यसत्कपरिगृहीतभाटिका कुलाङ्गना वा अनाथेति, अस्याप्यतिचारताऽतिक्रमादिभिरेव २, 'अणङ्गकीड' त्ति अनङ्गानि–मैथुनकर्मापेक्षया कुचकुक्षोरुवदनादीनि तेषु क्रीडनमनङ्गक्रीडा, अतिचारता चास्य स्वदारेभ्योऽन्यत्र मैथुनपरिहारेणानुरागादालिङ्गनादि विदधतो व्रतमालिन्यादिति ३, 'परविवाहकरणे' त्ति परेषाम्–आत्मन आत्मीयापत्येभ्यश्च व्यतिरिक्तानां विवाहकरणं परविवाहकरणं, अयमभिप्रायः-स्वदारसन्तोषिणो हि न युक्तः परेषां विवाहादिकरणेन मैथुननियोगोऽनर्थको विशिष्टविरतियुक्तत्वादित्येवमनाकलयतः परार्थकरणोद्यततयाऽतिचारोऽयमिति४, 'कामभोगतिव्वाभिलासे'त्ति कामौ–शब्दरूपे भोगाः–गन्धरसस्पर्शास्तेषु तीव्राभिलाषः-अत्यन्तं तदध्यवसायितं कामभोगतीव्राभिलाषः, अयमभिप्रायः–स्वदारसन्तोषी हि विशिष्टविरतिमान्, तेन च तावत्येव मैथुनासेवा कर्तुमुचिता यावत्या वेदजनिता बाधोपशाम्यति, यस्तु वाजिकरणादिभिः कामशास्त्रविहितप्रयोगैश्च तामधिकामुत्पाद्य सततं सुरतसुखमिच्छति स मैथुनविरतिव्रतं परमार्थतो मलिनयति, को हि नाम सकर्णकः पामामुत्पाद्याग्निसेवाजनितं सुखं वाञ्छेदिति अतिचारत्वं कामभोगतीव्राभिलाषस्येति ५। 'खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे' त्ति क्षेत्रवस्तुनः प्रमाणातिक्रमः, प्रत्याख्यानकालगृहीतमानोल्लङ्घनमित्यर्थः, एतस्य चातिचार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

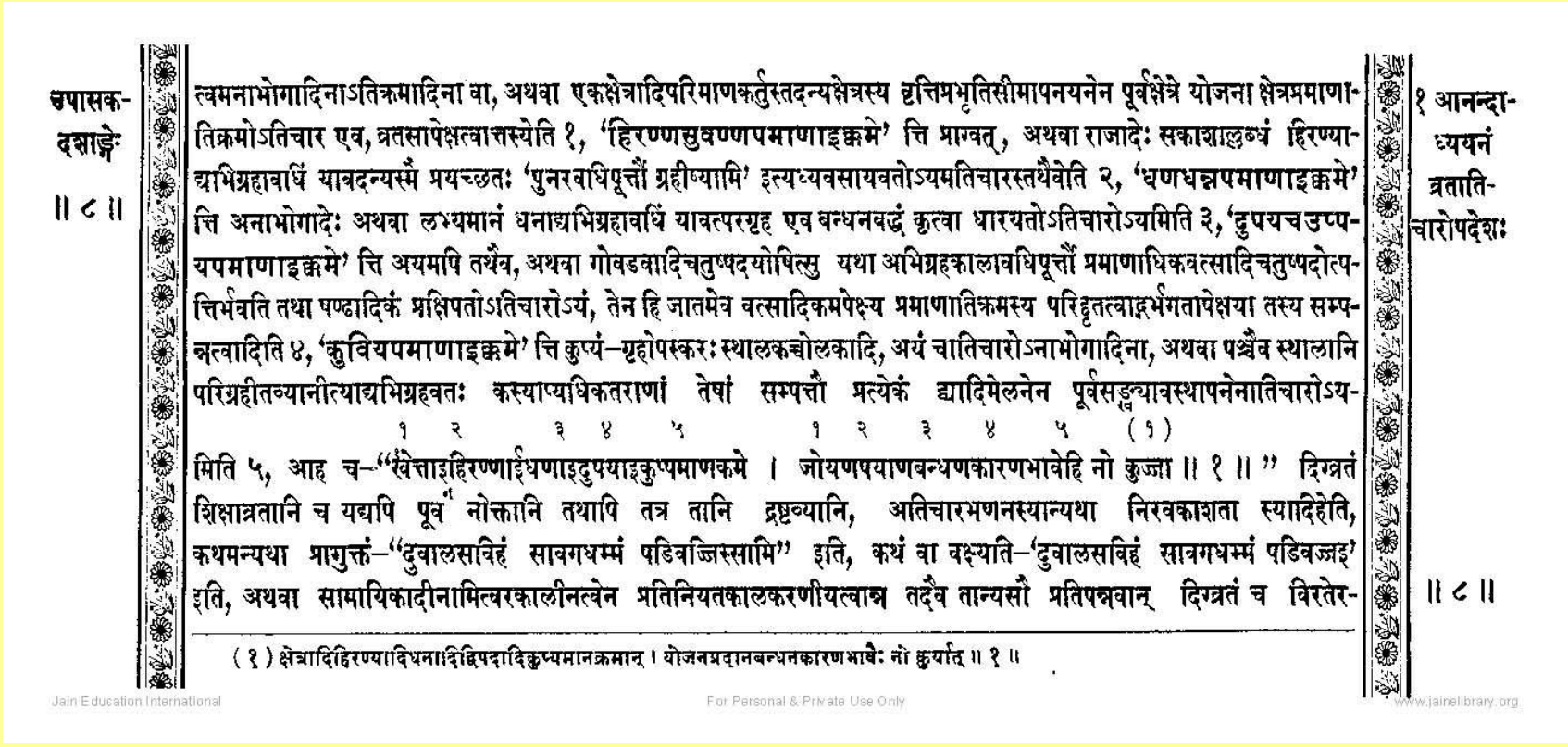

प्रत सूत्रांक [७] दीप अनुक्रम [९]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

उपासकदशाङ्गे ॥ ८ ॥

१ आनन्दाध्ययनं व्रतातिचारोपदेशः

त्वमनाभोगादिनाऽतिक्रमादिना वा, अथवा एकक्षेत्रादिपरिमाणकर्तुस्तदन्यक्षेत्रस्य वृत्तिप्रभृतिसीमापनयनेन पूर्वक्षेत्रे योजना क्षेत्रप्रमाणातिक्रमोऽतिचार एव, व्रतसापेक्षत्वात्तस्येति १, 'हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे' त्ति प्राग्वत्, अथवा राजादेः सकाशाल्लब्धं हिरण्याद्यभिग्रहावधिं यावदन्यस्मै प्रयच्छतः 'पुनरवधिपूर्त्तौ ग्रहीष्यामि' इत्यध्यवसायवतोऽयमतिचारस्तथैवेति २, 'धणधन्नपमाणाइक्कमे' त्ति अनाभोगादेः अथवा लभ्यमानं धनाद्यभिग्रहावधिं यावत्परगृह एव बन्धनबद्धं कृत्वा धारयतोऽतिचारोऽयमिति ३, 'दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे' त्ति अयमपि तथैव, अथवा गोवडवादिचतुष्पदयोषित्सु यथा अभिग्रहकालावधिपूर्त्तौ प्रमाणाधिकवत्सादिचतुष्पदोत्पत्तिर्भवति तथा षण्ढादिकं प्रक्षिपतोऽतिचारोऽयं, तेन हि जातमेव वत्सादिकमपेक्ष्य प्रमाणातिक्रमस्य परिहृतत्वाद्गर्भगतापेक्षया तस्य सम्पन्नत्वादिति ४, 'कुवियपमाणाइक्कमे' त्ति कुप्यं—गृहोपस्करः स्थालकच्चोलकादि, अयं चातिचारोऽनाभोगादिना, अथवा पञ्चैव स्थालानि परिग्रहीतव्यानीत्याद्यभिग्रहवतः कस्याप्यधिकतराणां तेषां सम्पत्तौ प्रत्येकं द्व्यादिमेलनेन पूर्वसङ्ख्यावस्थापनेनातिचारोऽयमिति ५, आह च—"खेत्ताइहिरण्णाईधणाइदुपयाइकुप्पमाणकमे । जोयणपयाणबन्धणकारणभावेहि नो कुज्जा ॥ १ ॥" (१) दिग्व्रतं शिक्षाव्रतानि च यद्यपि पूर्वं नोक्तानि तथापि तत्र तानि द्रष्टव्यानि, अतिचारभणनस्यान्यथा निरवकाशता स्यादिहेति, कथमन्यथा प्रागुक्तं—"दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि" इति, कथं वा वक्ष्यति—'दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ' इति, अथवा सामायिकादीनामित्वरकालीनत्वेन प्रतिनियतकालकरणीयत्वान्न तदैव तान्यसौ प्रतिपन्नवान् दिग्व्रतं च विरतेर- ॥ ८ ॥

(१) क्षेत्रादिहिरण्यादिधनादिद्विपदादिकुप्यमानक्रमान् । योजनप्रदानबन्धनकारणभावैः नो कुर्यात् ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

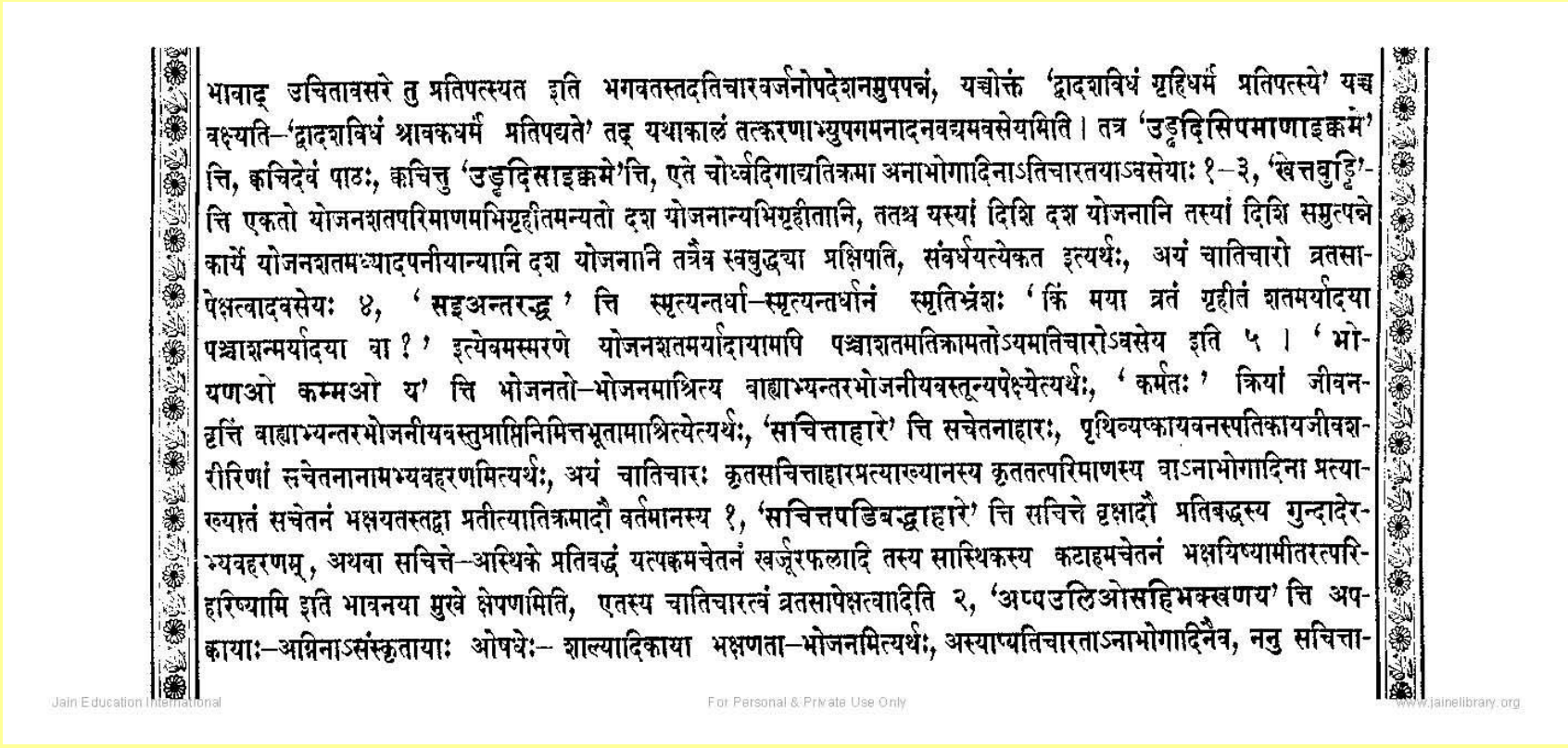

भावाद् उचितावसरे तु प्रतिपत्स्यत इति भगवतस्तदतिचारवर्जनोपदेशनमुपपन्नं, यच्चोक्तं 'द्वादशविधं गृहिधर्मं प्रतिपत्स्ये' यच्च वक्ष्यति-'द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते' तद् यथाकालं तत्करणाभ्युपगमनादनवद्यमवसेयमिति। तत्र 'उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे' त्ति, क्वचिदेवं पाठः, क्वचित्तु 'उड्ढदिसाइक्कमे'त्ति, एते चोर्ध्वदिगाद्यतिक्रमा अनाभोगादिनाऽतिचारतयाऽवसेयाः १-३, 'खेत्तवुड्ढि'-त्ति एकतो योजनशतपरिमाणमभिगृहीतमन्यतो दश योजनान्यभिगृहीतानि, ततश्च यस्यां दिशि दश योजनानि तस्यां दिशि समुत्पन्ने कार्ये योजनशतमध्यादपनीयान्यानि दश योजनानि तत्रैव स्वबुद्ध्या प्रक्षिपति, संवर्धयत्येकत इत्यर्थः, अयं चातिचारो व्रतसापेक्षत्वादवसेयः ४, 'सइअन्तरद्ध' त्ति स्मृत्यन्तर्धा-स्मृत्यन्तर्धानं स्मृतिभ्रंशः 'किं मया व्रतं गृहीतं शतमर्यादया पञ्चाशन्मर्यादया वा?' इत्येवमस्मरणे योजनशतमर्यादायामपि पञ्चाशतमतिक्रामतोऽयमतिचारोऽवसेय इति ५। 'भोयणओ कम्मओ य' त्ति भोजनतो-भोजनमाश्रित्य बाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तून्यपेक्ष्येत्यर्थः, 'कर्मतः' क्रियां जीवनवृत्तिं बाह्याभ्यन्तरभोजनीयवस्तुप्राप्तिनिमित्तभूतामाश्रित्येत्यर्थः, 'सचित्ताहारे' त्ति सचेतनाहारः, पृथिव्यप्कायवनस्पतिकायजीवशरीरिणां सचेतनानामभ्यवहरणमित्यर्थः, अयं चातिचारः कृतसचित्ताहारप्रत्याख्यानस्य कृततत्परिमाणस्य वाऽनाभोगादिना प्रत्याख्यातं सचेतनं भक्षयतस्तद्वा प्रतीत्यातिक्रमादौ वर्तमानस्य १, 'सचित्तपडिबद्धाहारे' त्ति सचित्ते वृक्षादौ प्रतिबद्धस्य गुन्दादेरभ्यवहरणम्, अथवा सचित्ते-अस्थिके प्रतिबद्धं यत्पक्वमचेतनं खर्जूरफलादि तस्य सास्थिकस्य कटाहमचेतनं भक्षयिष्यामीतरत्परिहरिष्यामि इति भावनया मुखे क्षेपणमिति, एतस्य चातिचारत्वं व्रतसापेक्षत्वादिति २, 'अप्पउलिओसहिभक्खणय' त्ति अपक्वायाः-अग्निनाऽसंस्कृतायाः ओषधेः- शाल्यादिकाया भक्षणता-भोजनमित्यर्थः, अस्याप्यतिचारताऽनाभोगादिनैव, ननु सचित्ता-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[७]

दीप
अनुक्रम
[९]

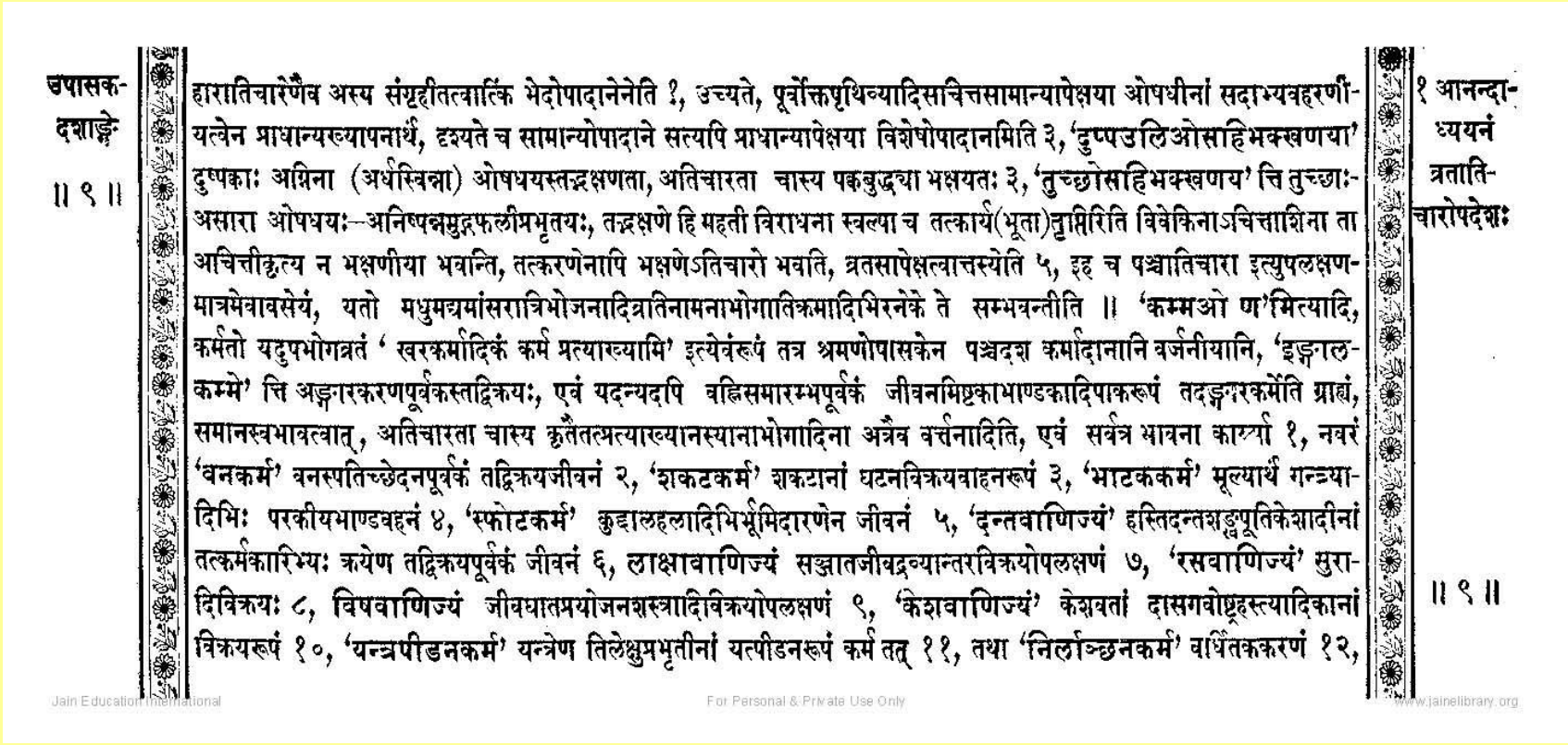

हारातिचारेणैव अस्य संगृहीतत्वात्किं भेदोपादानेनेति ?, उच्यते, पूर्वोक्तपृथिव्यादिसचित्तसामान्यापेक्षया ओषधीनां सदाऽभ्यवहरणीयत्वेन प्राधान्यख्यापनार्थं, दृश्यते च सामान्योपादाने सत्यपि प्राधान्यापेक्षया विशेषोपादानमिति ३, 'दुप्पउलिओसहिभक्खणया' दुष्पकाः अग्निना (अर्धस्विन्ना) ओषधयस्तद्भक्षणता, अतिचारता चास्य पक्वबुद्ध्या भक्षयतः ३, 'तुच्छोसहिभक्खणय' त्ति तुच्छाः-असारा ओषधयः-अनिष्पन्नमुद्गफलीप्रभृतयः, तद्भक्षणे हि महती विराधना स्वल्पा च तत्कार्य(भूता)तृप्तिरिति विवेकिनाऽचित्ताशिना ता अचित्तीकृत्य न भक्षणीया भवन्ति, तत्करणेनापि भक्षणेऽतिचारो भवति, व्रतसापेक्षत्वात्तस्येति ५, इह च पञ्चातिचारा इत्युपलक्षणमात्रमेवावसेयं, यतो मधुमद्यमांसरात्रिभोजनादिव्रातिनामनाभोगातिक्रमादिभिरनेके ते सम्भवन्तीति ॥ 'कम्मओ ण'मित्यादि, कर्मतो यदुपभोगव्रतं 'खरकर्मादिकं कर्म प्रत्याख्यामि' इत्येवंरूपं तत्र श्रमणोपासकेन पञ्चदश कर्मादानानि वर्जनीयानि, 'इङ्गालकम्मे' त्ति अङ्गारकरणपूर्वकस्तद्विक्रयः, एवं यदन्यदपि वह्निसमारम्भपूर्वकं जीवनमिष्टकाभाण्डकादिपाकरूपं तदङ्गारकर्मेति ग्राह्यं, समानस्वभावत्वात्, अतिचारता चास्य कृतैतत्प्रत्याख्यानस्यानाभोगादिना अत्रैव वर्त्तनादिति, एवं सर्वत्र भावना कार्या १, नवरं 'वनकर्म' वनस्पतिच्छेदनपूर्वकं तद्विक्रयजीवनं २, 'शकटकर्म' शकटानां घटनविक्रयवाहनरूपं ३, 'भाटककर्म' मूल्यार्थं गन्त्र्यादिभिः परकीयभाण्डवहनं ४, 'स्फोटकर्म' कुद्दालहलादिभिर्भूमिदारणेन जीवनं ५, 'दन्तवाणिज्यं' हस्तिदन्तशङ्खपूतिकेशादीनां तत्कर्मकारिभ्यः क्रयेण तद्विक्रयपूर्वकं जीवनं ६, लाक्षावाणिज्यं सञ्जातजीवद्रव्यान्तरविक्रयोपलक्षणं ७, 'रसवाणिज्यं' सुरादिविक्रयः ८, विषवाणिज्यं जीवघातप्रयोजनशस्त्रादिविक्रयोपलक्षणं ९, 'केशवाणिज्यं' केशवतां दासगवोष्ट्रहस्त्यादिकानां विक्रयरूपं १०, 'यन्त्रपीडनकर्म' यन्त्रेण तिलेक्षुप्रभृतीनां यत्पीडनरूपं कर्म तत् ११, तथा 'निर्लाञ्छनकर्म' वर्धितककरणं १२,

१ आनन्दाध्ययनं व्रतातिचारोपदेशः

॥ ९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

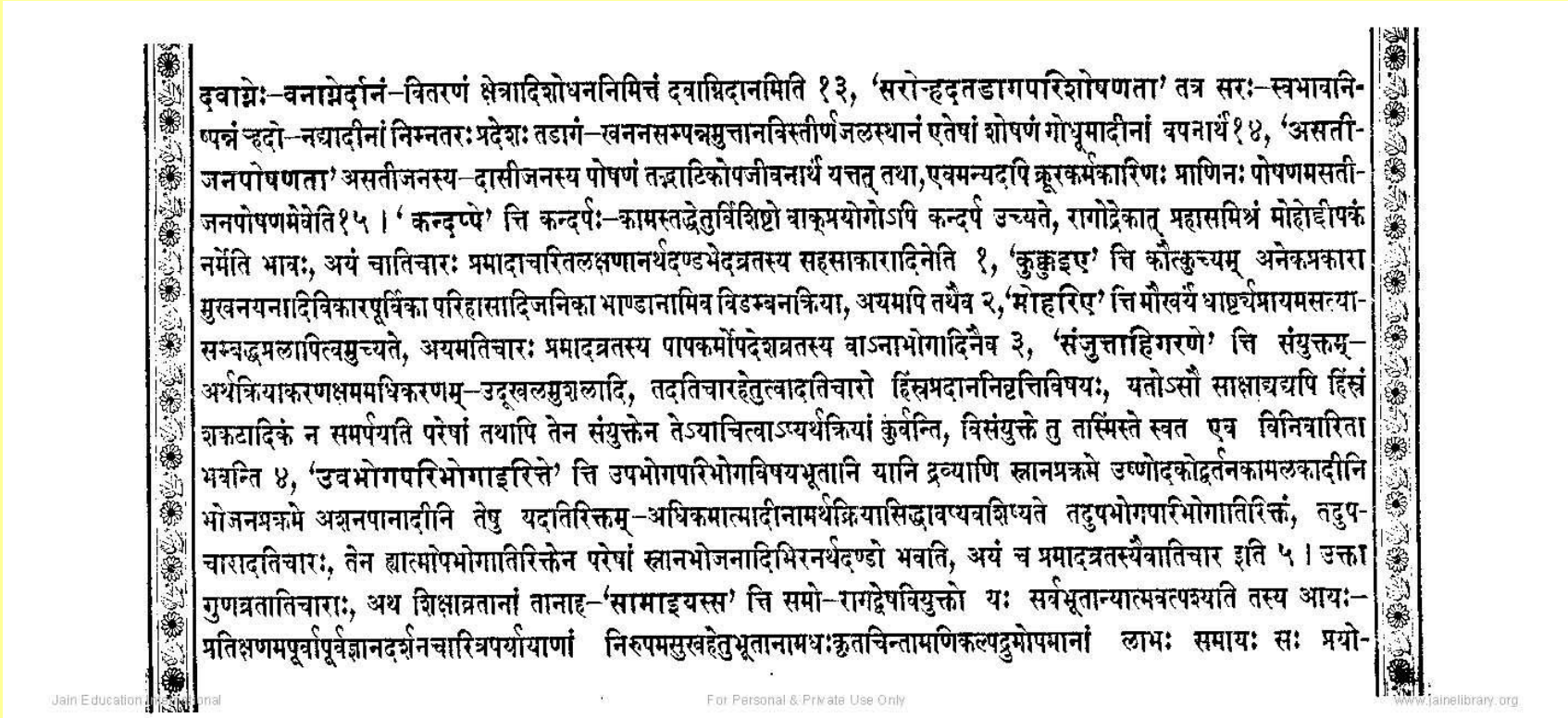

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

दवाग्नेः—वनाग्नेर्दानं—वितरणं क्षेत्रादिशोधननिमित्तं दवाग्निदानमिति १३, 'सरोन्हदतडागपरिशोषणता' तत्र सरः—स्वभावनिष्पन्नं न्हदो—नद्यादीनां निम्नतरः प्रदेशः तडागं—खननसम्पन्नमुत्तानविस्तीर्णजलस्थानं एतेषां शोषणं गोधूमादीनां वपनार्थं १४, 'असतीजनपोषणता' असतीजनस्य—दासीजनस्य पोषणं तद्भाटिकोपजीवनार्थं यत्तत् तथा, एवमन्यदपि क्रूरकर्मकारिणः प्राणिनः पोषणमसतीजनपोषणमेवेति १५। 'कन्दप्पे' त्ति कन्दर्पः—कामस्तद्धेतुर्विशिष्टो वाक्प्रयोगोऽपि कन्दर्प उच्यते, रागोद्रेकात् प्रहासमिश्रं मोहोद्दीपकं नर्मेति भावः, अयं चातिचारः प्रमादाचरितलक्षणानर्थदण्डभेदव्रतस्य सहसाकारादिनेति १, 'कुक्कुइए' त्ति कौत्कुच्यम् अनेकप्रकारा मुखनयनादिविकारपूर्विका परिहासादिजनिका भाण्डानामिव विडम्बनाक्रिया, अयमपि तथैव २, 'मोहरिए' त्ति मौखर्यं धाष्टर्यप्रायमसत्यासम्बद्धप्रलापित्वमुच्यते, अयमतिचारः प्रमादव्रतस्य पापकर्मोपदेशव्रतस्य वाऽनाभोगादिनैव ३, 'संजुत्ताहिगरणे' त्ति संयुक्तम्—अर्थक्रियाकरणक्षममधिकरणम्—उदूखलमुशलादि, तदतिचारहेतुत्वादतिचारो हिंस्रप्रदाननिवृत्तिविषयः, यतोऽसौ साक्षाद्यद्यपि हिंस्रं शकटादिकं न समर्पयति परेषां तथापि तेन संयुक्तेन तेऽयाचित्वाऽप्यर्थक्रियां कुर्वन्ति, विसंयुक्ते तु तस्मिंस्ते स्वत एव विनिवारिता भवन्ति ४, 'उवभोगपरिभोगाइरित्ते' त्ति उपभोगपरिभोगविषयभूतानि यानि द्रव्याणि स्नानप्रक्रमे उष्णोदकोद्वर्तनकामलकादीनि भोजनप्रक्रमे अशनपानादीनि तेषु यदतिरिक्तम्—अधिकमात्मादीनामर्थक्रियासिद्धावप्यवशिष्यते तदुपभोगपरिभोगातिरिक्तं, तदुपचारादतिचारः, तेन ह्यात्मोपभोगातिरिक्तेन परेषां स्नानभोजनादिभिरनर्थदण्डो भवति, अयं च प्रमादव्रतस्यैवातिचार इति ५। उक्ता गुणव्रतातिचाराः, अथ शिक्षाव्रतानां तानाह—'सामाइयस्स' त्ति समो—रागद्वेषवियुक्तो यः सर्वभूतान्यात्मवत्पश्यति तस्य आयः—प्रतिक्षणमपूर्वापूर्वज्ञानदर्शनचारित्रपर्यायाणां निरुपमसुखहेतुभूतानामधःकृतचिन्तामणिकल्पद्रुमोपमानां लाभः समायः सः प्रयो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

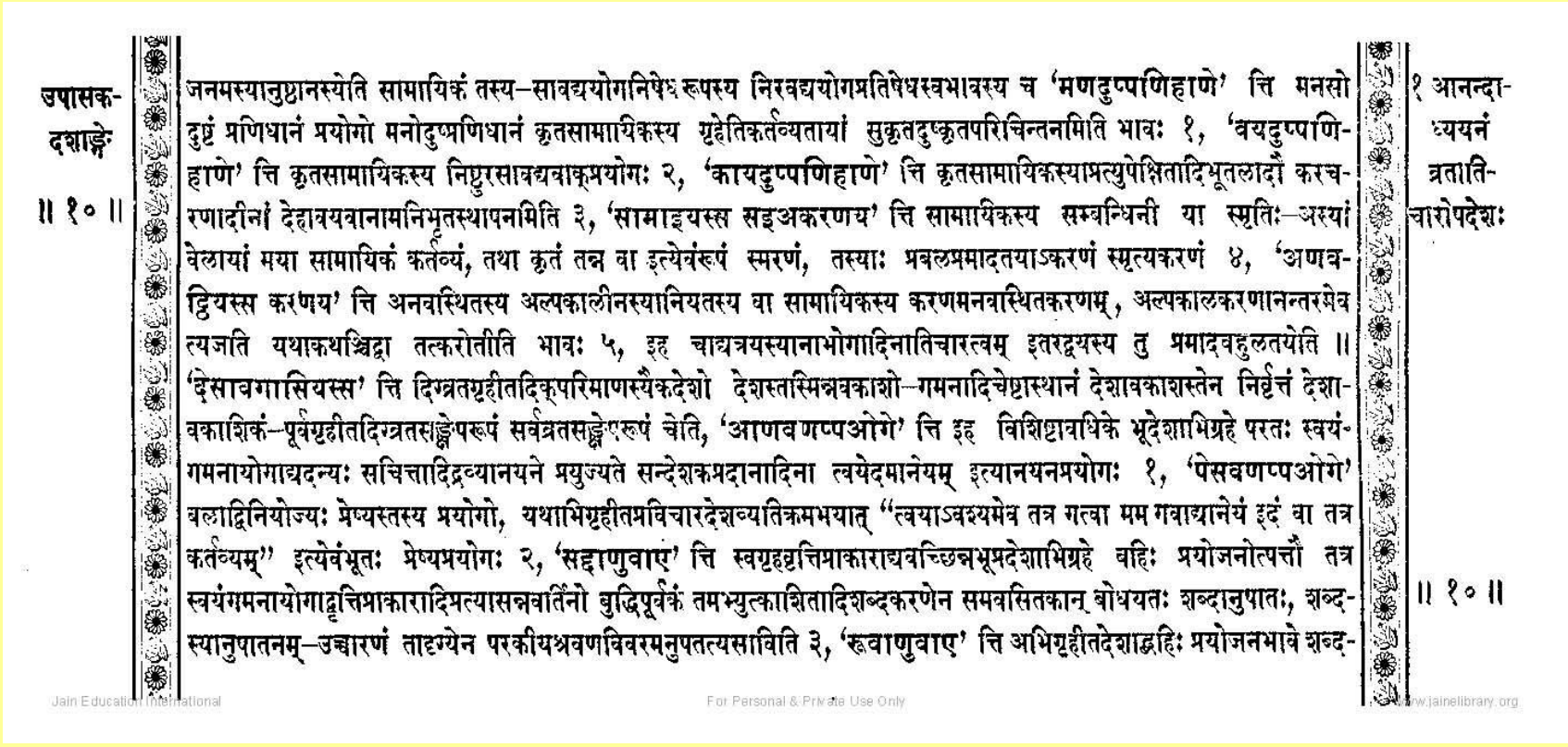

उपासक-दशाङ्गे ॥ १० ॥

जनमस्यानुष्ठानस्येति सामायिकं तस्य–सावद्ययोगनिषेधरूपस्य निरवद्ययोगप्रतिषेधस्वभावस्य च ‘मणदुप्पणिहाणे’ त्ति मनसो दुष्टं प्रणिधानं प्रयोगो मनोदुष्प्रणिधानं कृतसामायिकस्य गृहेतिकर्तव्यतायां सुकृतदुष्कृतपरिचिन्तनमिति भावः १, ‘वयदुप्पणिहाणे’ त्ति कृतसामायिकस्य निष्ठुरसावद्यवाक्प्रयोगः २, ‘कायदुप्पणिहाणे’ त्ति कृतसामायिकस्याप्रत्युपेक्षितादिभूतलादौ करचरणादीनां देहावयवानामनिभृतस्थापनमिति ३, ‘सामाइयस्स सइअकरणय’ त्ति सामायिकस्य सम्बन्धिनी या स्मृतिः–अस्यां वेलायां मया सामायिकं कर्तव्यं, तथा कृतं तन्न वा इत्येवंरूपं स्मरणं, तस्याः प्रबलप्रमादतयाऽकरणं स्मृत्यकरणं ४, ‘अणवट्ठियस्स करणय’ त्ति अनवस्थितस्य अल्पकालीनस्यानियतस्य वा सामायिकस्य करणमनवस्थितकरणम्, अल्पकालकरणानन्तरमेव त्यजति यथाकथञ्चिद्वा तत्करोतीति भावः ५, इह चाद्यत्रयस्यानाभोगादिनातिचारत्वम् इतरद्वयस्य तु प्रमादबहुलतयेति ॥ ‘देसावगासियस्स’ त्ति दिग्व्रतगृहीतदिक्परिमाणस्यैकदेशो देशस्तस्मिन्नवकाशो–गमनादिचेष्टास्थानं देशावकाशस्तेन निर्वृत्तं देशावकाशिकं–पूर्वगृहीतदिग्व्रतसङ्क्षेपरूपं सर्वव्रतसङ्क्षेपरूपं चेति, ‘आणवणप्पओगे’ त्ति इह विशिष्टावधिके भूदेशाभिग्रहे परतः स्वयंगमनायोगाद्यदन्यः सचित्तादिद्रव्यानयने प्रयुज्यते सन्देशकप्रदानादिना त्वयेदमानेयम् इत्यानयनप्रयोगः १, ‘पेसवणप्पओगे’ बलाद्विनियोज्यः प्रेष्यस्तस्य प्रयोगो, यथाभिगृहीतप्रविचारदेशव्यतिक्रमभयात् “त्वयाऽवश्यमेव तत्र गत्वा मम गवाद्यानेयं इदं वा तत्र कर्तव्यम्” इत्येवंभूतः प्रेष्यप्रयोगः २, ‘सद्दाणुवाए’ त्ति स्वगृहवृत्तिप्राकाराद्यवच्छिन्नभूप्रदेशाभिग्रहे बहिः प्रयोजनोत्पत्तौ तत्र स्वयंगमनायोगाद्वृत्तिप्राकारादिप्रत्यासन्नवर्तिनो बुद्धिपूर्वकं तमभ्युत्काशितादिशब्दकरणेन समवसितकान् बोधयतः शब्दानुपातः, शब्दस्यानुपातनम्–उच्चारणं तादृग्येन परकीयश्रवणविवरमनुपतत्यसाविति ३, ‘रूवाणुवाए’ त्ति अभिगृहीतदेशाद्बहिः प्रयोजनभावे शब्द-

१ आनन्दाध्ययनं व्रतातिचारोपदेशः ॥ १० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[७]

दीप
अनुक्रम
[९]

मनुच्चारयत एव परेषां स्वसमीपानयनार्थं स्वशरीररूपदर्शनं रूपानुपातः ४ 'बाहिया पोग्गलपक्खेवे' त्ति अभिगृहीतदेशाद्बहिः प्रयोजनसद्भावे परेषां प्रबोधनाय लेष्टादिपुद्गलप्रक्षेप इति भावना ५, इह चाद्यद्वयस्यानाभोगादिनाऽतिचारत्वं इतरस्य तु त्रयस्य व्रतसापेक्षत्वादिति ॥ 'पोसहोववासस्स' त्ति इह पोषधशब्दोऽष्टम्यादिपर्वसु रूढः, तत्र पोषधे उपवासः पोषधोपवासः, स चाहारादिविषयभेदाच्चतुर्विध इति तस्य, 'अप्पडिलेहिये'त्यादि अप्रत्युपेक्षितो–जीवरक्षार्थं चक्षुषा न निरीक्षितः 'दुष्प्रत्युपेक्षितः' उद्भ्रान्तचेतोवृत्तितयाऽसम्यग्निरीक्षितः शय्या–शयनं तदर्थं संस्तारकः–कुशकम्बलफलकादिः शय्यासंस्तारकः ततः पदत्रयस्य कर्मधारये भवत्यप्रत्युपेक्षितदुष्प्रत्युपेक्षितशय्यासंस्तारकः, एतदुपभोगस्यातिचारहेतुत्वादयमतिचार उक्तः १, 'एवमप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितशय्यासंस्तारकोऽपि' नवरं प्रमार्जनं वसनाञ्चलादिना २, एवमितरौ द्वौ, नवरमुच्चारः–पुरीषं, स्रवणं, मूत्रं तयोर्भूमिः स्थण्डिलम् ३, ४, एते चत्वारोऽपि प्रमादितयाऽतिचाराः, 'पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया' त्ति कृतपोषधोपवासस्यास्थिरचित्ततयाऽऽहारशरीरसत्काराब्रह्मव्यापाराणामभिलषणादननुपालना पोषधस्येति, अस्य चातिचारत्वं भावतो विरतेर्बाधितत्वादिति ॥ 'अहासंविभागस्से'ति अहात्ति–यथासिद्धस्य स्वार्थं निर्वर्तितस्येत्यर्थः, अशनादेः समिति–सङ्गतत्वेन पश्चात्कर्मादिदोषपरिहारेण विभजनं साधवे दानद्वारेण विभागकरणं यथासंविभागः तस्य, 'सचित्तनिक्खिवणये'–त्यादि सचित्तेषु व्रीह्यादिषु निक्षेपणमन्नादेरदानबुद्ध्या मातृस्थानतः सचित्तनिक्षेपणं १, एवं सचित्तेन फलादिना स्थगनं सचित्तपिधानं २, 'कालातिक्रमः' कालस्य– साधुभोजनकालस्यातिक्रमः–उल्लङ्घनं कालातिक्रमः, अयमभिप्रायः,– कालमूनमधिकं वा ज्ञात्वा साधवो न ग्रहीष्यन्ति ज्ञास्यन्ति च यथाऽयं ददाति एवं विकल्पतो दानार्थमभ्युत्थानमतिचार इति ३, तथा 'परव्यपदेशः'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

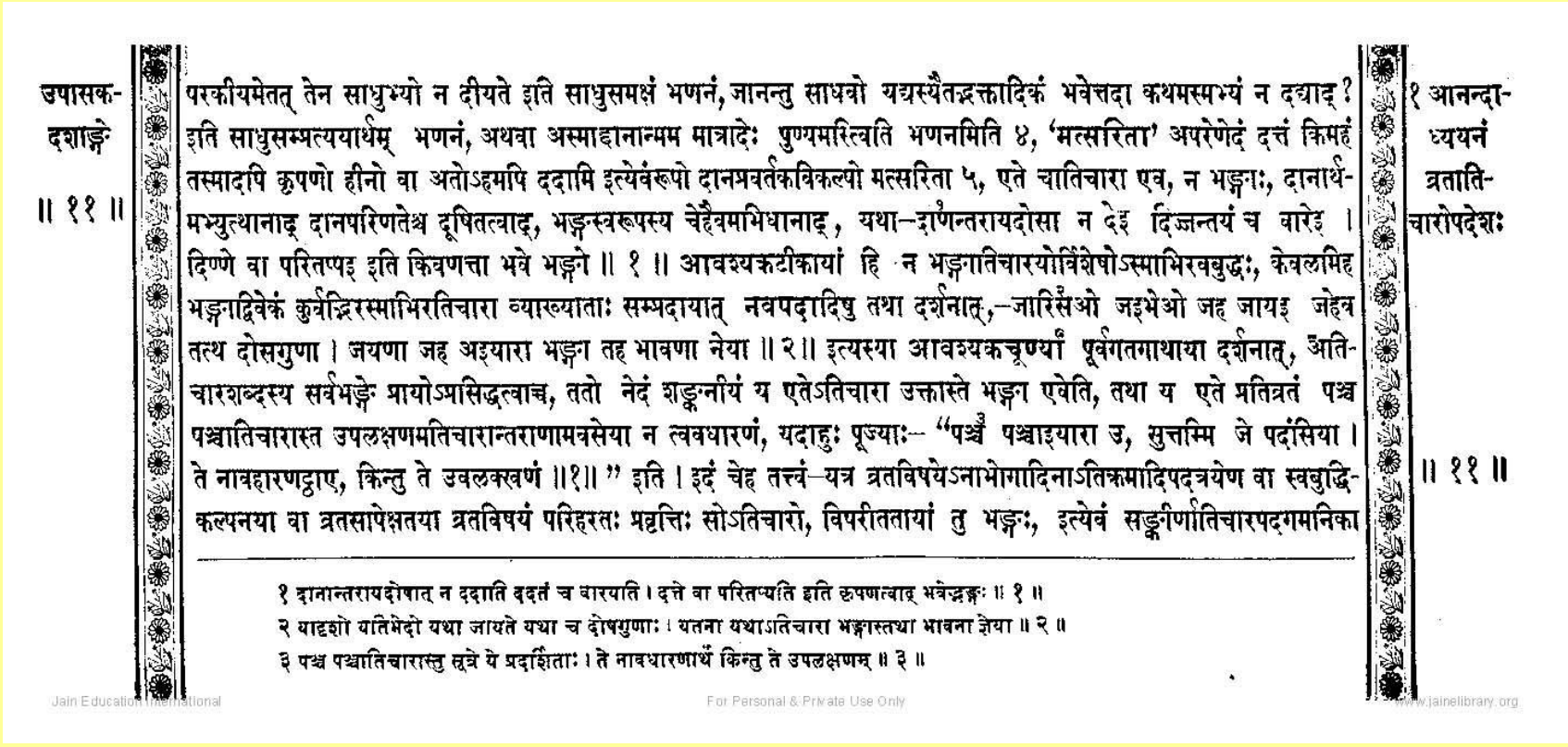

उपासक-दशाङ्गे ॥ ११ ॥

परकीयमेतत् तेन साधुभ्यो न दीयते इति साधुसमक्षं भणनं, जानन्तु साधवो यद्यस्यैतद्भक्तादिकं भवेत्तदा कथमस्मभ्यं न दद्याद्? इति साधुसम्प्रत्ययार्थम् भणनं, अथवा अस्माद्दानान्मम मात्रादेः पुण्यमस्त्विति भणनमिति ४, ‘मत्सरिता’ अपरेणेदं दत्तं किमहं तस्मादपि कृपणो हीनो वा अतोऽहमपि ददामि इत्येवंरूपो दानप्रवर्तकविकल्पो मत्सरिता ५, एते चातिचारा एव, न भङ्गाः, दानार्थ-मभ्युत्थानाद् दानपरिणतेश्च दूषितत्वाद्, भङ्गस्वरूपस्य चैहैवमभिधानाद्, यथा–दाणन्तरायदोसा न देइ दिज्जन्तयं च वारेइ । दिण्णे वा परितप्पइ इति किंवणत्ता भवे भङ्गे ॥ १ ॥ आवश्यकटीकायां हि न भङ्गातिचारयोर्विशेषोऽस्माभिरवबुद्धः, केवलमिह भङ्गाद्विवेकं कुर्वद्भिरस्माभिरतिचारा व्याख्याताः सम्प्रदायात् नवपदादिषु तथा दर्शनात्,–जारिसओ जइभेओ जह जायइ जेहेव तत्थ दोसगुणा । जयणा जह अइयारा भङ्गा तह भावणा नेया ॥ २ ॥ इत्यस्या आवश्यकचूर्ण्यां पूर्वगतगाथाया दर्शनात्, अति-चारशब्दस्य सर्वभङ्गे प्रायोऽप्रसिद्धत्वाच्च, ततो नेदं शङ्कनीयं य एतेऽतिचारा उक्तास्ते भङ्गा एवेति, तथा य एते प्रतिव्रतं पञ्च पञ्चातिचारास्त उपलक्षणमतिचारान्तराणामवसेया न त्ववधारणं, यदाहुः पूज्याः– “पञ्च पञ्चाइयारा उ, सुत्तम्मि जे पदंसिया । ते नावहारणट्ठाए, किन्तु ते उवलक्खणं ॥१॥ ” इति । इदं चेह तत्त्वं–यत्र व्रतविषयेऽनाभोगादिनाऽतिक्रमादिपदत्रयेण वा स्वबुद्धि-कल्पनया वा व्रतसापेक्षतया व्रतविषयं परिहरतः प्रवृत्तिः सोऽतिचारो, विपरीततायां तु भङ्गः, इत्येवं सङ्कीर्णातिचारपदगमनिका

१ दानान्तरायदोषात् न ददाति ददतं च वारयति । दत्ते वा परितप्यति इति कृपणत्वाद् भवेद्भङ्गः ॥ १ ॥
२ यादृशो यतिभेदो यथा जायते यथा च दोषगुणाः । यतना यथाऽतिचारा भङ्गास्तथा भावना ज्ञेया ॥ २ ॥
३ पञ्च पञ्चातिचारास्तु सूत्रे ये प्रदर्शिताः । ते नावधारणार्थं किन्तु ते उपलक्षणम् ॥ ३ ॥

१ आनन्दा-ध्ययनं व्रतातिचारोपदेशः ॥ ११ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

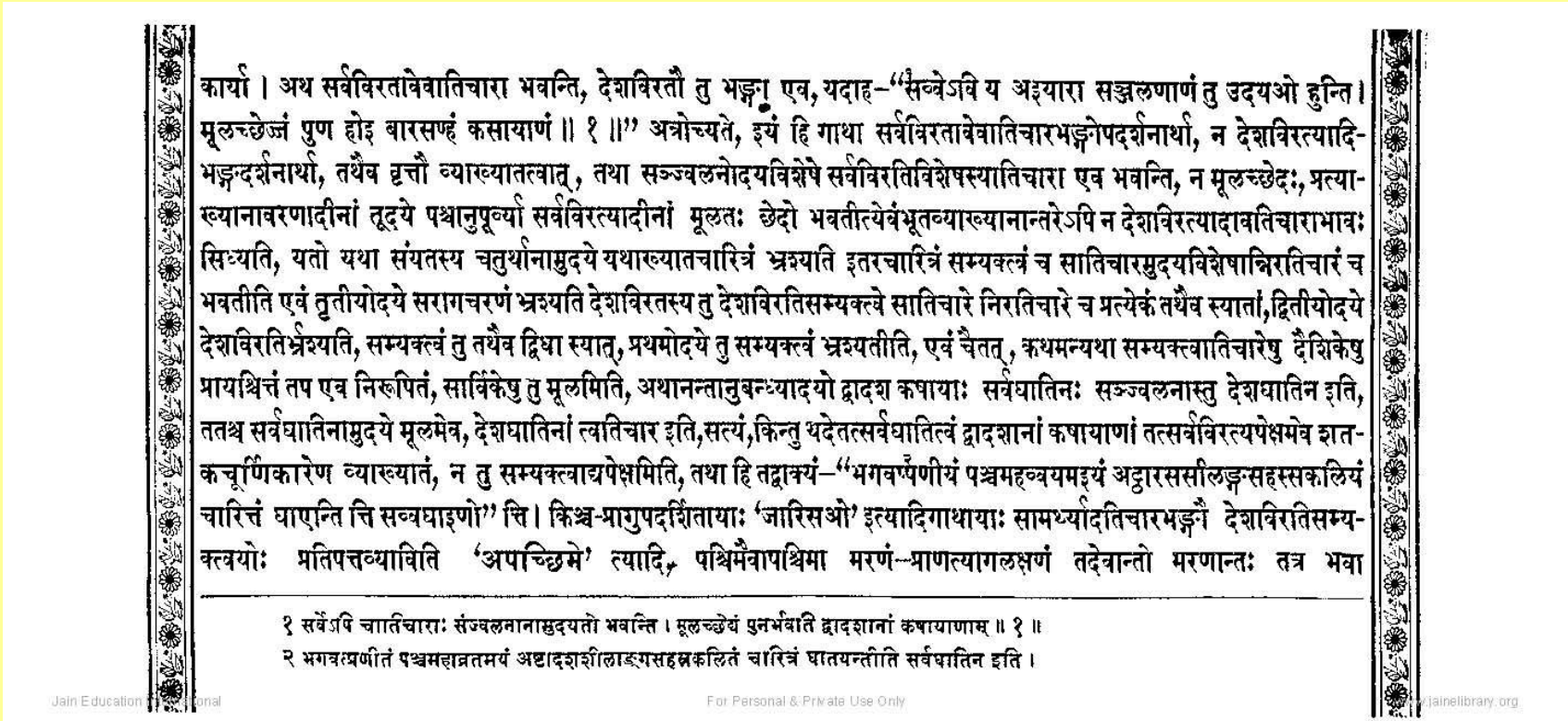

कार्या । अथ सर्वविरतावेवातिचारा भवन्ति, देशविरतौ तु भङ्गा एव, यदाह–"सव्वेऽवि य अइयारा सञ्जलणाणं तु उदयओ हुन्ति। मूलच्छेज्जं पुण होइ बारसण्हं कसायाणं ॥ १ ॥" अत्रोच्यते, इयं हि गाथा सर्वविरतावेवातिचारभङ्गोपदर्शनार्था, न देशविरत्यादि-भङ्गदर्शनार्था, तथैव वृत्तौ व्याख्यातत्वात्, तथा सञ्ज्वलनोदयविशेषे सर्वविरतिविशेषस्यातिचारा एव भवन्ति, न मूलच्छेदः, प्रत्याख्यानावरणादीनां तूदये पश्चानुपूर्व्या सर्वविरत्यादीनां मूलतः छेदो भवतीत्येवंभूतव्याख्यानान्तरेऽपि न देशविरत्यादावतिचाराभावः सिध्यति, यतो यथा संयतस्य चतुर्थानामुदये यथाख्यातचारित्रं भ्रश्यति इतरचारित्रं सम्यक्त्वं च सातिचारमुदयविशेषान्निरतिचारं च भवतीति एवं तृतीयोदये सरागचरणं भ्रश्यति देशविरतस्य तु देशविरतिसम्यक्त्वे सातिचारे निरतिचारे च प्रत्येकं तथैव स्यातां, द्वितीयोदये देशविरतिर्भ्रश्यति, सम्यक्त्वं तु तथैव द्विधा स्यात्, प्रथमोदये तु सम्यक्त्वं भ्रश्यतीति, एवं चैतत्, कथमन्यथा सम्यक्त्वातिचारेषु दैशिकेषु प्रायश्चित्तं तप एव निरूपितं, सार्विकेषु तु मूलमिति, अथानन्तानुबन्ध्यादयो द्वादश कषायाः सर्वघातिनः सञ्ज्वलनास्तु देशघातिन इति, ततश्च सर्वघातिनामुदये मूलमेव, देशघातिनां त्वतिचार इति, सत्यं, किन्तु यदेतत्सर्वघातित्वं द्वादशानां कषायाणां तत्सर्वविरत्यपेक्षमेव शतकचूर्णिकारेण व्याख्यातं, न तु सम्यक्त्वाद्यपेक्षमिति, तथा हि तद्वाक्यं–"भगवप्पणीयं पञ्चमहव्वयमइयं अट्ठारससीलङ्गसहस्सकलियं चारित्तं घाएन्ति त्ति सव्वघाइणो" त्ति। किञ्च-प्रागुपदर्शितायाः 'जारिसओ' इत्यादिगाथायाः सामर्थ्यादतिचारभङ्गौ देशविरतिसम्यक्त्वयोः प्रतिपत्तव्याविति 'अपच्छिमे' त्यादि, पश्चिमैवापश्चिमा मरणं–प्राणत्यागलक्षणं तदेवान्तो मरणान्तः तत्र भवा

१ सर्वेऽपि चातिचाराः संज्वलनानामुदयतो भवन्ति । मूलच्छेद्यं पुनर्भवति द्वादशानां कषायाणाम् ॥ १ ॥
२ भगवत्प्रणीतं पञ्चमहाव्रतमयं अष्टादशशीलाङ्गसहस्रकलितं चारित्रं घातयन्तीति सर्वघातिन इति ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [९]

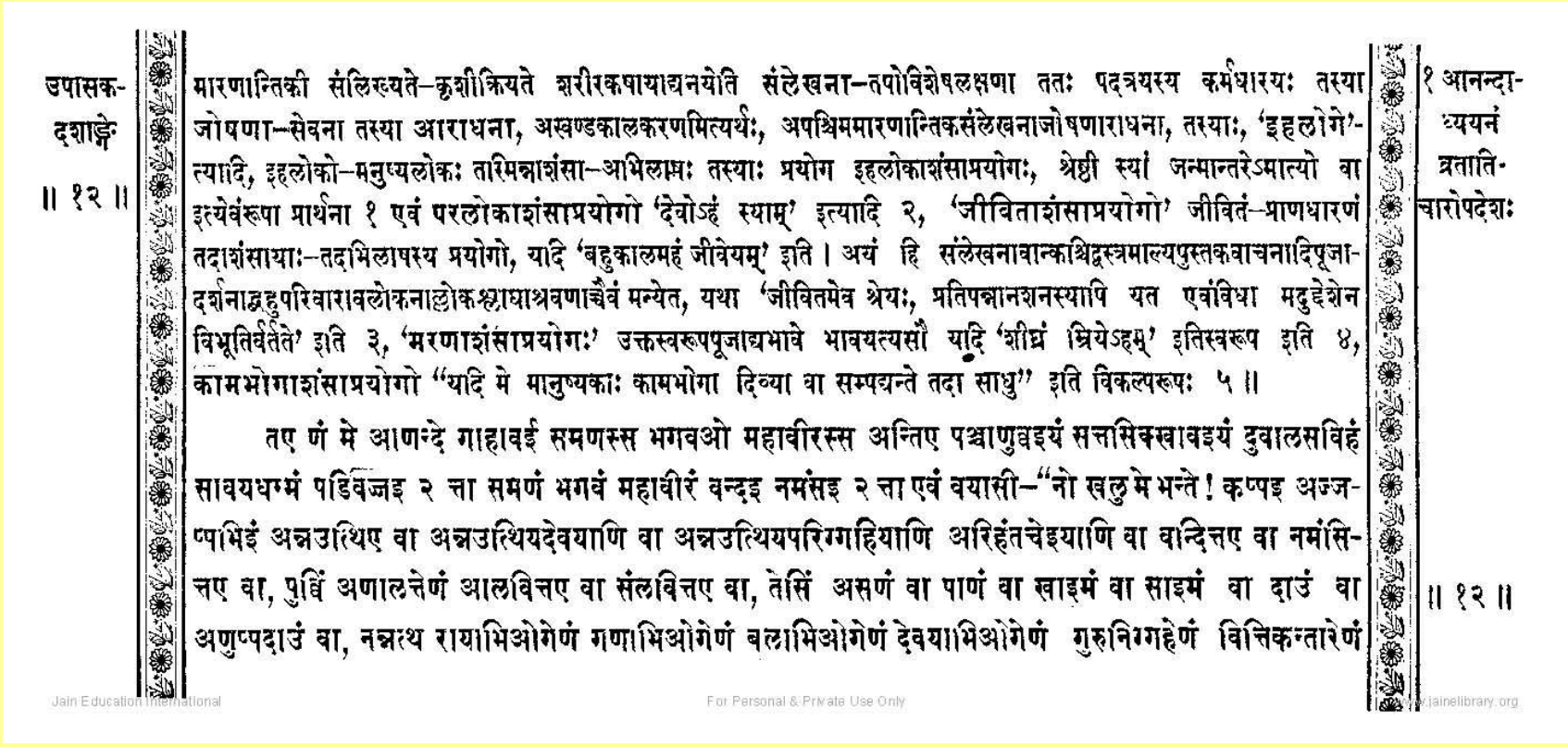

उपासक-दशाङ्गे ॥ १२ ॥

मारणान्तिकी संलिख्यते-कृशीक्रियते शरीरकषायाद्यनयेति संलेखना-तपोविशेषलक्षणा ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः तस्या जोषणा-सेवना तस्या आराधना, अखण्डकालकरणमित्यर्थः, अपश्चिममारणान्तिकसंलेखनाजोषणाराधना, तस्याः, 'इहलोगे'-त्यादि, इहलोको-मनुष्यलोकः तत्रिमन्नाशंसा-अभिलाषः तस्याः प्रयोग इहलोकाशंसाप्रयोगः, श्रेष्ठी स्यां जन्मान्तरेऽमात्यो वा इत्येवंरूपा प्रार्थना १ एवं परलोकाशंसाप्रयोगो 'देवोऽहं स्याम्' इत्यादि २, 'जीविताशंसाप्रयोगो' जीवितं-प्राणधारणं तदाशंसायाः-तदभिलाषस्य प्रयोगो, यदि 'बहुकालमहं जीवेयम्' इति। अयं हि संलेखनावान्कश्चिद्वस्त्रमाल्यपुस्तकवाचनादिपूजा-दर्शनाद्बहुपरिवारावलोकनाल्लोकश्लाघाश्रवणाच्चैवं मन्येत, यथा 'जीवितमेव श्रेयः, प्रतिपन्नानशनस्यापि यत एवंविधा मदुद्देशेन विभूतिर्वर्तते' इति ३, 'मरणाशंसाप्रयोगः' उक्तस्वरूपपूजाद्यभावे भावयत्यसौ यदि 'शीघ्रं म्रियेऽहम्' इतिस्वरूप इति ४, कामभोगाशंसाप्रयोगो "यदि मे मानुष्यकाः कामभोगा दिव्या वा सम्पद्यन्ते तदा साधु" इति विकल्परूपः ५ ॥

तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी-"नो खलु मे भन्ते! कप्पइ अज्ज-प्पभिइं अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहंतचेइयाणि वा वन्दित्तए वा नमंसि-त्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा, तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं

१ आनन्दा-ध्ययनं व्रतातिचारोपदेशः ॥ १२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सम्यक्त्व एवं द्वादश व्रतानां अतिचार-वर्णनं

प्रत
सूत्रांक
[८]

दीप
अनुक्रम
[१०]

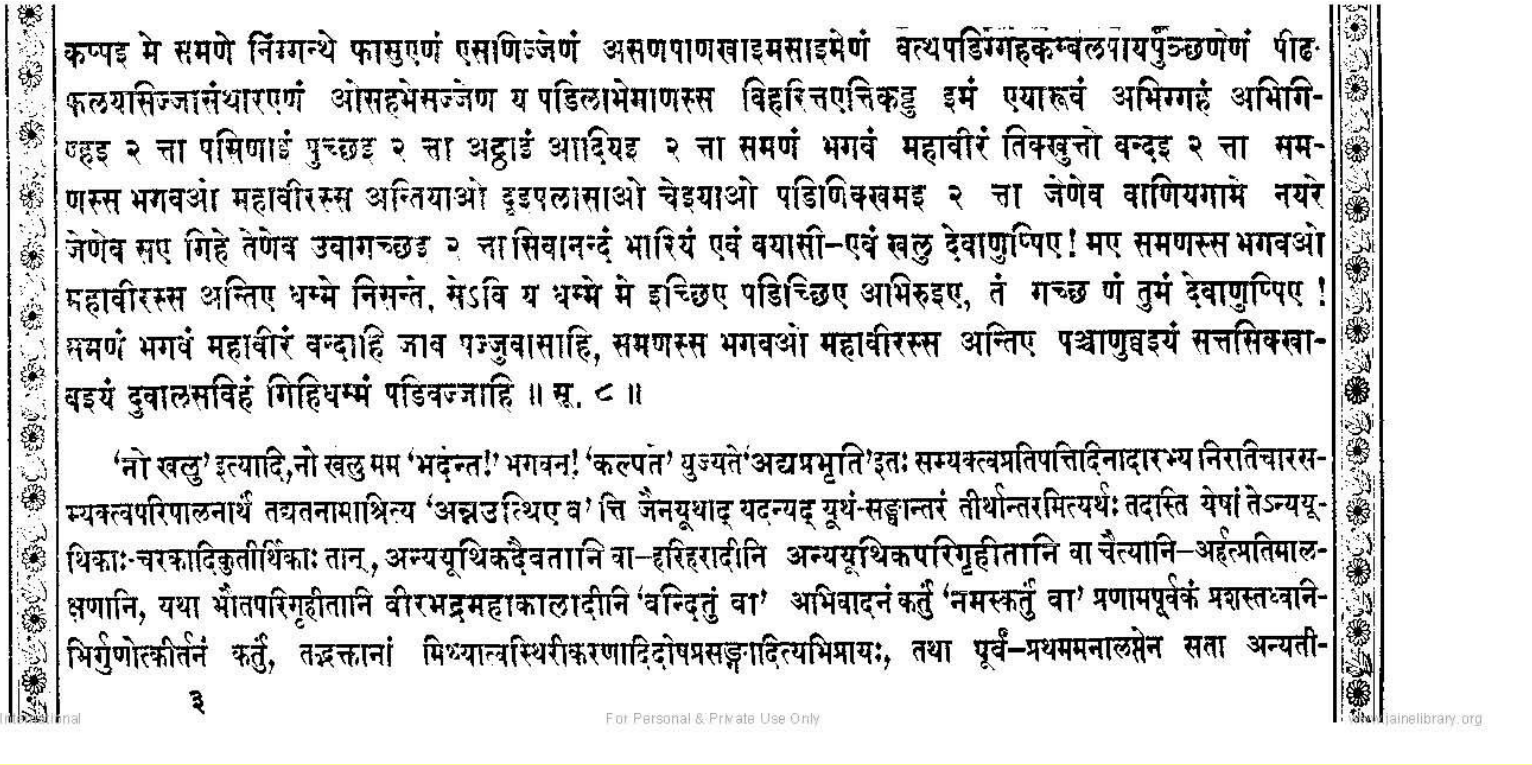

कप्पइ मे समणे निंग्गन्थे फासुएणं एसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुञ्छणेणं पीढफलयसिज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडिलाभेमाणस्स विहरित्तएत्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ २ त्ता पसिणाइं पुच्छइ २ त्ता अट्ठाइं आदियइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सिवानन्दं भारियं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मे निसन्ते, सेऽवि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिए! समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि ॥ सू. ८ ॥

'नो खलु' इत्यादि, नो खलु मम 'भदन्त!' भगवन्! 'कल्पते' युज्यते 'अद्यप्रभृति' इतः सम्यक्त्वप्रतिपत्तिदिनादारभ्य निरतिचारसम्यक्त्वपरिपालनार्थं तद्यतनामाश्रित्य 'अन्नउत्थिए व' त्ति जैनयूथाद् यदन्यद् यूथं-सङ्घान्तरं तीर्थान्तरमित्यर्थः तदस्ति येषां तेऽन्ययूथिकाः-चरकादिकुतीर्थिकाः तान्, अन्ययूथिकदैवतानि वा–हरिहरादीनि अन्ययूथिकपरिगृहीतानि वा चैत्यानि–अर्हत्प्रतिमालक्षणानि, यथा भौतपरिगृहीतानि वीरभद्रमहाकालादीनि 'वन्दितुं वा' अभिवादनं कर्तुं 'नमस्कर्तुं वा' प्रणामपूर्वकं प्रशस्तध्वनिभिर्गुणोत्कीर्तनं कर्तुं, तद्भक्तानां मिथ्यात्वस्थिरीकरणादिदोषप्रसङ्गादित्यभिप्रायः, तथा पूर्वं–प्रथममनालप्तेन सता अन्यती-

३

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८]

दीप अनुक्रम [१०]

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] “उपासकदशा” मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

उपासकदशाङ्गे ॥ १२ ॥

१ आनन्दाध्ययनं

थिकैः तानेव 'आलपितुं वा' सकृत्सम्भाषितुं 'संलपितुं वा' पुनः पुनः संलापं कर्तुं, यतस्ते तप्ततरायोगोलककल्पाः खल्वासनादिक्रियायां नियुक्ता भवन्ति, तत्प्रत्ययश्च कर्मबन्धः स्यात्, तथाऽऽलापादेः सकाशात्परिचयेन तस्यैव तत्परिजनस्य वा मिथ्यात्वप्राप्तिरिति, प्रथमालप्तेन त्वसम्भ्रमं लोकापवादभयात् "कीदृशस्त्वम्" इत्यादि वाच्यमिति, तथा 'तेभ्यः' अन्ययूथिकेभ्योऽशनादि दातुं वा सकृत्, अनुप्रदातुं वा पुनः पुनरित्यर्थः, अयं च निषेधो धर्मबुद्ध्यैव, करुणया तु दद्यादपि, किं सर्वथा न कल्पत इत्याह–'नन्नत्थ रायाभिओगेणं' ति 'न' इति न कल्पत इति योऽयं निषेधः सोऽन्यत्र राजाभियोगात्, तृतीयायाः पञ्चम्यर्थत्वाद् राजाभियोगं वर्जयित्वेत्यर्थः, राजाभियोगस्तु–राजपरतन्त्रता, गणः–समुदायस्तदभियोगो–पारवश्यता गणाभियोगस्तस्मात्, बलाभियोगो नाम–राजगणव्यतिरिक्तस्य बलवतः पारतन्त्र्यं, देवताभियोगो–देवपरतन्त्रता, गुरुनिग्रहो–मातापितृपारवश्यं गुरूणां वा–चैत्यसाधूनां निग्रहः–प्रत्यनीककृतोपद्रवो गुरुनिग्रहः तत्रोपस्थिते तद्रक्षार्थमन्ययूथिकादिभ्यो ददपि नातिक्रामति सम्यक्त्वमिति, 'वित्तिकन्तारेणं' ति वृत्तिः–जीविका तस्याः कान्तारम्–अरण्यं तदिव कान्तारं क्षेत्रं कालो वा वृत्तिकान्तारं, निर्वाहाभाव इत्यर्थः, तस्मादन्यत्र निषेधो दानप्रणामादेरिति प्रकृतमिति, 'पडिग्गहं' ति पात्रं 'पीढं' ति पट्टादिकं 'फलगं' ति अवष्टम्भादिकं फलकं 'भेसज्जं' ति पथ्यं 'अट्ठाइं' ति उत्तरभूतानर्थानाददाति ॥ (सू० ८)

तए णं सा सिवानन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सिवानन्दाए तीसे य महइ० ॥ १२ ॥
जाव धम्मं कहेइ, तए णं सा सिवानन्दा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंदस्य भार्या शिवानंदाया: धर्मश्रवण एवं व्रतस्विकार

प्रत सूत्रांक [९]

दीप अनुक्रम [११]

गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहेइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० ९ ॥

'लहुकरण' इत्यत्र यावत्करणात् 'लहुकरणजुत्तजोइयमित्यादि'र्यानवर्णको व्याख्येयःस्थानसप्तमाध्ययनादवसेयः ॥ (सू०९)

भन्ते त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–पहू णं भन्ते ! आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव पव्वइत्तए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! आणन्दे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिइ २ त्ता जाव सोहम्मे कप्पे अरुणे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं आणन्दस्सऽवि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥ तए णं समणे भगवं ! महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जाव विहरइ ॥ सू० १० ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ । तए णं सा सिवानन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ११ ॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे समुप्पज्जित्था–एवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१०-१२]

दीप अनुक्रम [१२-१४]

उपासक-दशाङ्गे ॥ १४ ॥

खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर जाव सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स जाव आधारे, तं एएणं विक्खेवेणं अहं १ आनन्दाध्ययनं
नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरित्तए। तं सेयं खलु ममं
कल्लं जाव जलन्ते विउलं असणं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेत्ता तं मित्तं जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता
कोल्लाए सन्निवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता
णं विहरित्तए। एवं संपेहेइ २ त्ता कल्लं विउलं तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ
सम्माणेइ २ त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! अहं वाणियगामे
बहूणं राईसर जहा चिन्तियं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुम्बस्स आलम्बणं ४
ठवेत्ता जाव विहरित्तए॥ तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवासगस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ॥ तए णं
से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेइ २ त्ता एवं वयासी—मा णं देवाणुप्पिया!
तुब्भे अज्जप्पभिइं केइ मम बहूसु कज्जेसु जाव आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा ममं अट्ठाए असणं वा ४ उवक्खडेउ वा
उवकरेउ वा॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्तनाइं आपुच्छइ २ त्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्ख- ॥ १४ ॥
मइ २ त्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव नायकुले जेणेव
पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत
सूत्रांक
[१०-१२]

दीप
अनुक्रम
[१२-१४]

संथरइ, दब्भसंथारयं दुरूहइ २ त्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ॥ सू० १२ ॥

'महावीरस्स अन्तियं'ति अन्ते भवा आन्तिकी महावीरसमीपाभ्युपगतेत्यर्थः तां 'धम्मपण्णत्तिं'ति धर्मप्रज्ञापनामुपसम्पद्य-अङ्गीकृत्यानुष्ठानद्वारतः 'जहा पूरणो'त्ति भगवत्यभिहितो बालतपस्वी स यथा स्वस्थाने पुत्रादिस्थापनमकरोत् तथाऽयं कृतवानित्यर्थः । एवं चासौ कृतवान् 'विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावित्ता मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणं आमन्तेत्ता तं मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणं विउलेणं ४ वत्थगन्धमल्लालङ्कारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तनाइनियगसम्बन्धिपरिजणस्स पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठावेइ ठावित्त'त्ति 'नायकुलंसि'त्ति स्वजनगृहे ॥ 'उवक्खडेउ'त्ति उपस्करोतु–राध्यतु, 'उवकरेउ'त्ति उपकरोतु, सिद्धं सद् द्रव्यान्तरैः कृतोपकारम्–आहितगुणान्तरं विदधातु (सू. १२)

तए णं से आणन्दे समणोवासए उवासगपडिमाओ उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ कित्तेइ आराहेइ ॥ तए णं से आणन्दे समणोवासए दोच्चं उवासगपडिमं, एवं तच्चं चउत्थं पञ्चमं छट्ठं सत्तमं अट्ठमं नवमं दसमं एक्कारसमं जाव आराहेइ ॥ ॥ सू० १३ ॥

'पढमं'ति एकादशानामाद्यामुपासकप्रतिमां–श्रावकोचिताभिग्रहविशेषरूपामुपसम्पद्य विहरति, तस्याश्चेदं स्वरूपम्–'सङ्कादि-

१ शङ्कादिशल्यविरहितसम्यग्दर्शनयुक्तस्तु यो जन्तुः । शेषगुणविप्रमुक्त एषा खलु भवति प्रथमा तु ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंदश्रावकस्य "११-श्रावकप्रतिमा"- स्वीकार

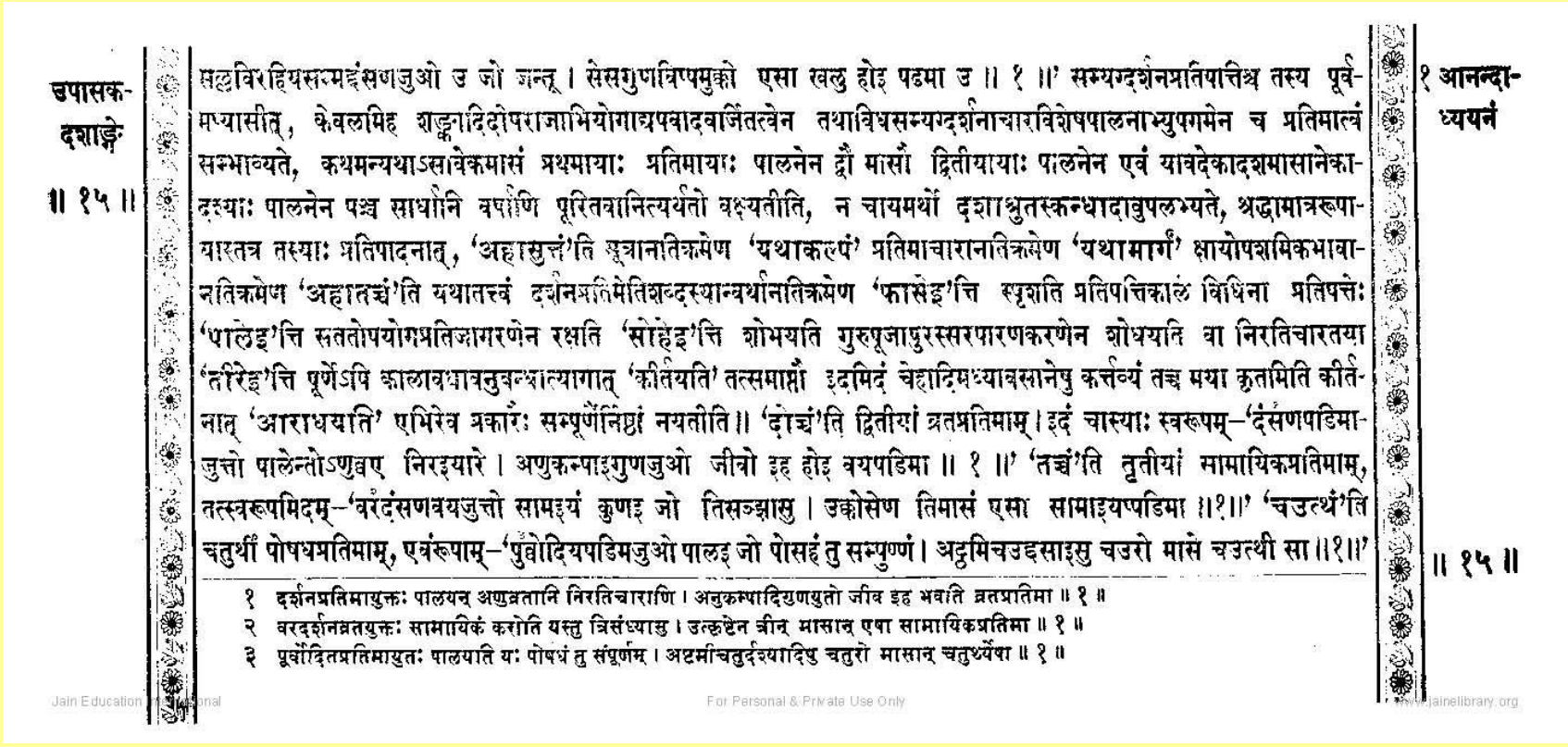

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१५]

उपासकदशाङ्गे ॥ १५ ॥

१ आनन्दाध्ययनं

सल्लविरहियसम्मद्दंसणजुओ उ जो जन्तू । सेसगुणविप्पमुक्को एसा खलु होइ पढमा उ ॥ १ ॥' सम्यग्दर्शनप्रतिपत्तिश्च तस्य पूर्वमप्यासीत्, केवलमिह शङ्कादिदोषराजाभियोगाद्यपवादवर्जितत्वेन तथाविधसम्यग्दर्शनाचारविशेषपालनाभ्युपगमेन च प्रतिमात्वं सम्भाव्यते, कथमन्यथाऽस्यावेकमासं प्रथमायाः प्रतिमायाः पालनेन द्वौ मासौ द्वितीयायाः पालनेन एवं यावदेकादशमासानेकादश्याः पालनेन पञ्च सार्धानि वर्षाणि पूरितवानित्यर्थतो वक्ष्यतीति, न चायमर्थो दशाश्रुतस्कन्धादावुपलभ्यते, श्रद्धामात्ररूपायास्तत्र तस्याः प्रतिपादनात्, 'अहासुत्तं'ति सूत्रानतिक्रमेण 'यथाकल्पं' प्रतिमाचारानतिक्रमेण 'यथामार्गं' क्षायोपशमिकभावानतिक्रमेण 'अहातच्चं'ति यथातत्त्वं दर्शनप्रतिमेतिशब्दस्यान्वर्थानतिक्रमेण 'फासेइ'त्ति स्पृशति प्रतिपत्तिकाले विधिना प्रतिपत्तेः 'पालेइ'त्ति सततोपयोगप्रतिजागरणेन रक्षति 'सोहेइ'त्ति शोभयति गुरुपूजापुरस्सरपारणकरणेन शोधयति वा निरतिचारतया 'तीरेइ'त्ति पूर्णेऽपि कालावधावनुबन्धात्यागात् 'कीर्तयति' तत्समाप्तौ इदमिदं चेहादिमध्यावसानेषु कर्त्तव्यं तच्च मया कृतमिति कीर्तनात् 'आराधयति' एभिरेव प्रकारैः सम्पूर्णैर्निष्ठां नयतीति ॥ 'दोच्चं'ति द्वितीयां व्रतप्रतिमाम् । इदं चास्याः स्वरूपम्—'दंसणपडिमाजुत्तो पालेन्तोऽणुव्वए निरइयारे । अणुकम्पाइगुणजुओ जीवो इह होइ वयपडिमा ॥ १ ॥' 'तच्चं'ति तृतीयां सामायिकप्रतिमाम्, तत्स्वरूपमिदम्—'वरदंसणवयजुत्तो सामइयं कुणइ जो तिसञ्झासु । उक्कोसेण तिमासं एसा सामाइयप्पडिमा ॥१॥' 'चउत्थं'ति चतुर्थीं पोषधप्रतिमाम्, एवंरूपाम्—'पुव्वोदियपडिमजुओ पालइ जो पोसहं तु सम्पुण्णं । अट्ठमिचउद्दसाइसु चउरो मासे चउत्थी सा ॥१॥' ॥ १५ ॥

१ दर्शनप्रतिमायुक्तः पालयन् अणुव्रतानि निरतिचाराणि । अनुकम्पादिगुणयुतो जीव इह भवति व्रतप्रतिमा ॥ १ ॥
२ वरदर्शनव्रतयुक्तः सामायिकं करोति यस्तु त्रिसंध्यासु । उत्कृष्टेन त्रीन् मासान् एषा सामायिकप्रतिमा ॥ १ ॥
३ पूर्वोदितप्रतिमायुतः पालयति यः पोषधं तु संपूर्णम् । अष्टमीचतुर्दश्यादिषु चतुरो मासान् चतुर्थ्येषा ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंदश्रावकस्य "११-श्रावकप्रतिमा"- स्वीकार

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

प्रत
सूत्रांक
[१३]

दीप
अनुक्रम
[१५]

'पञ्चमं'ति पञ्चमीं प्रतिमाप्रतिमां, कायोत्सर्गप्रतिमामित्यर्थः, स्वरूपं चास्याः—'सम्ममणुव्वयगुणवयसिक्खावयवं थिरो य नाणी य। अट्ठमिचउद्दसीसुं पडिमं ठाएगराईयं ॥१॥ असिणाण वियडभोई (अस्नानोऽरात्रिभोजी चेत्यर्थः) मउलिकडो (मुकुलकच्छ इत्यर्थः) दिवसबम्भयारी य। राइं परिमाणकडो पडिमावज्जेसु दियहेसु ॥ २ ॥ झायइ पडिमाएँ ठिओ तिलोयपुज्जे जिणे जियकसाए। नियदोसपच्चणीयं अण्णं वा पञ्च जा मासा ॥३॥' 'छट्ठिं'ति षष्ठीं अब्रह्मवर्जनप्रतिमाम्, एतत्स्वरूपं चैवम्—'पुव्वोदियगुणजुत्तो विसेसओ विजियमोहणिज्जो य। वज्जइ अबम्भमेगन्तओ य राइं पि थिरचित्तो ॥ १ ॥ सिङ्गारकहाविरओ इत्थीएँ समं रहम्मि नो ठाइ। चयइ य अइप्पसङ्गं तहा विभूसं च उक्कोसं ॥ २ ॥ एवं जा छम्मासा एसोऽहिगओ उ इयरहा दिट्ठं। जावज्जीवंपि इमं वज्जइ एयम्मि लोगम्मि ॥३॥' 'सत्तमिं'ति सप्तमीं सचित्ताहारवर्जनप्रतिमामित्यर्थः, इयं चैवम्—'सच्चित्तं आहारं वज्जइ असणाइयं निरवसेसं। सेसवयसमाउत्तो जा मासा सत्त विहिपुव्वं ॥ १ ॥' 'अट्ठमिं'ति अष्टमीं स्वयमारम्भवर्जनप्रतिमां, तद्रूपमिदम्—'वज्जइ सयमारम्भं सावज्जं कारवेइ पेसेहिं। वित्तिनिमित्तं पुव्वयगुणजुत्तो अट्ठ जा मासा ॥' 'नवमिं'ति नवमीं भृतकप्रेष्यारम्भवर्जनप्रति-

---

१ सम्यक्त्वाणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतवान् स्थिरश्च ज्ञानी च। अष्टमीचतुर्दश्योः प्रतिमां तिष्ठत्येकरात्रिकीम् ॥ १ ॥ अस्नानो दिवसभोजी मुत्कलकच्छो दिवसब्रह्मचारी च। रात्रौ कृतपरिमाणः प्रतिमावर्जेषु दिवसेषु ॥ २ ॥ ध्यायति प्रतिमया स्थितः त्रैलोक्यपूज्यान् जिनान् जितकषायान्। निजदोषप्रत्यनीकमन्यद्वा पञ्च यावन्मासान् ॥ ३ ॥

२ पूर्वोदितगुणयुक्तो विशेषतो विजितमोहनीयश्च। वर्जयत्यब्रह्मैकान्ततस्तु रात्रावपि स्थिरचित्तः ॥ १ ॥ शृङ्गारकथाविरतः स्त्रिया समं रहसि न तिष्ठति। त्यजति चातिप्रसङ्गं तथा विभूषां चोत्कृष्टाम् ॥ २ ॥ एवं यावत् षण्मासान् एषोऽधिकृतस्तु इतरथा दृष्टम्। यावज्जीवमपीदं वर्जयति एतस्मिन् लोके ॥ ३ ॥

३ सचित्तमाहारं वर्जयति अशनादिकं निरवशेषम्। शेषपदसमायुक्तो यावन्मासान् सप्त विधिपूर्वम् ॥ १ ॥

४ वर्जयति स्वयमारम्भं सावद्यं कारयति प्रेष्यैः। वृत्तिनिमित्तं पूर्वगुणयुक्तोऽष्ट यावन्मासान् ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंदश्रावकस्य "११-श्रावकप्रतिमा"- स्वीकार

प्रत सूत्रांक [१३]

दीप अनुक्रम [१५]

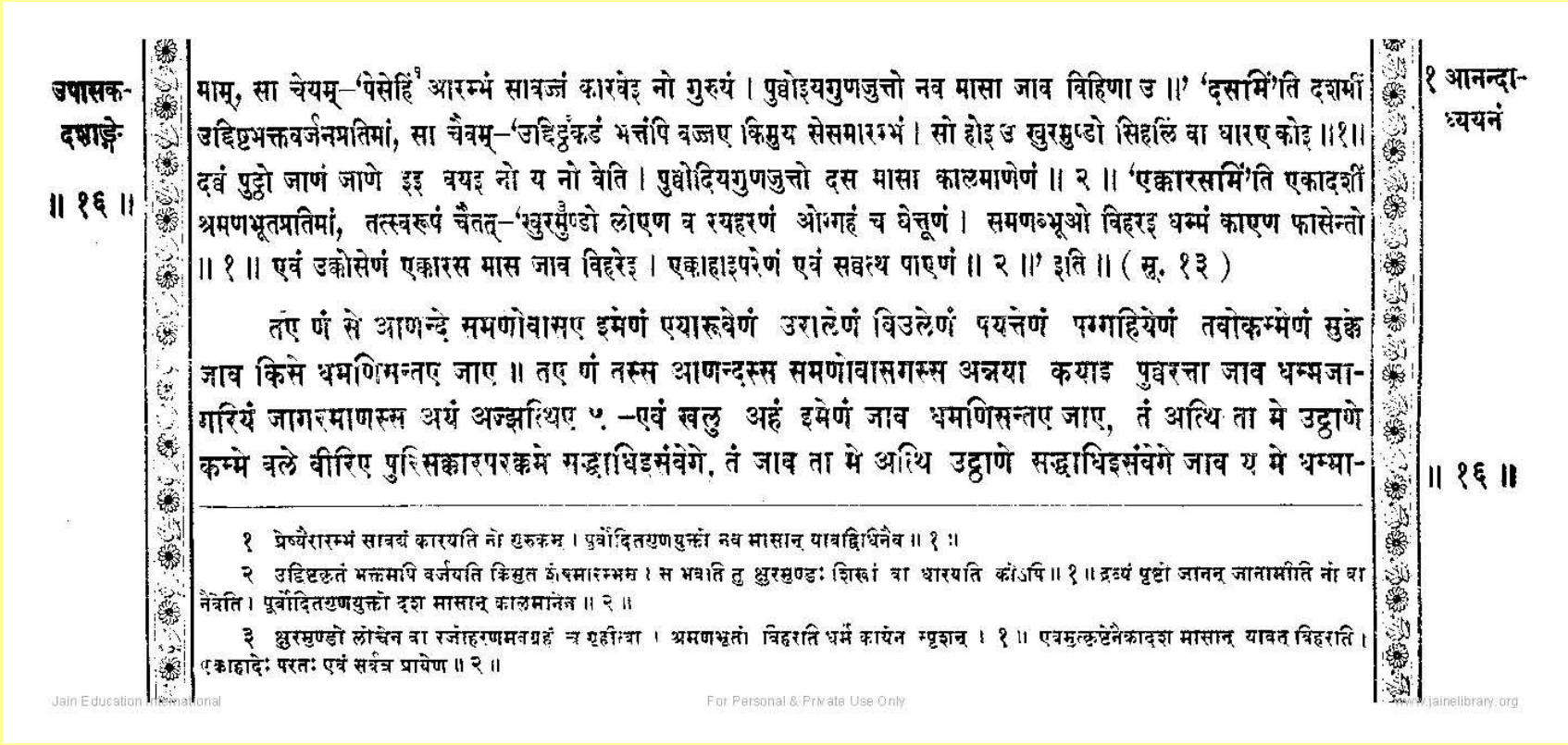

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

उपासक- दशाङ्गे ॥ १६ ॥

मासम्, सा चेयम्—'पेसेहिं[1] आरम्भं सावज्जं कारवेइ नो गुरुयं । पुव्वोइयगुणजुत्तो नव मासा जाव विहिणा उ ॥' 'दसमिं'ति दशमीं उद्दिष्टभक्तवर्जनप्रतिमां, सा चैवम्—'उद्दिट्ठकडं भत्तंपि वज्जए किमुय सेसमारम्भं । सो होइ उ खुरमुण्डो सिहलिं वा धारए कोइ ॥१॥ दव्वं पुट्ठो जाणं जाणे इइ वयइ नो य नो वेति । पुव्वोदियगुणजुत्तो दस मासा कालमाणेणं ॥ २ ॥ 'एक्कारसमिं'ति एकादशीं श्रमणभूतप्रतिमां, तत्स्वरूपं चैतत्—'खुरमुंण्डो लोएण व रयहरणं ओग्गहं च घेत्तूणं । समणब्भूओ विहरइ धम्मं काएण फासेन्तो ॥ १ ॥ एवं उक्कोसेणं एक्कारस मास जाव विहरेइ । एक्काहाइपरेणं एवं सव्वत्थ पाएणं ॥ २ ॥' इति ॥ (सू. १३) | १ आनन्दाध्ययनं

तए णं से आणन्दे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहियेणं तवोकम्मेणं सुक्के जाव किसे धमणिसन्तए जाए ॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ५ —एवं खलु अहं इमेणं जाव धमणिसन्तए जाए, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिइसंवेगे, तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे सद्धाधिइसंवेगे जाव य मे धम्मा- ॥ १६ ॥

---

१ प्रेष्यैरारम्भं सावद्यं कारयति नो गुरुकम् । पूर्वोदितगुणयुक्तो नव मासान् यावद्विधिनैव ॥ १ ॥

२ उद्दिष्टकृतं भक्तमपि वर्जयति किमुत शेषमारम्भम् । स भवति तु क्षुरमुण्डः शिखां वा धारयति कोऽपि ॥ १ ॥ द्रव्यं पृष्टो जानन् जानामीति नो वा नैवेति । पूर्वोदितगुणयुक्तो दश मासान् कालमानेन ॥ २ ॥

३ क्षुरमुण्डो लोचेन वा रजोहरणमवग्रहं च गृहीत्वा । श्रमणभूतो विहरति धर्मं कायेन स्पृशन् । १ ॥ एवमुत्कृष्टेनैकादश मासान् यावत् विहरति । एकाहादेः परतः एवं सर्वत्र प्रायेण ॥ २ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनंदश्रावकस्य "११-श्रावकप्रतिमा"- स्वीकार

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [१४-१६]

दीप अनुक्रम [१६-१८]

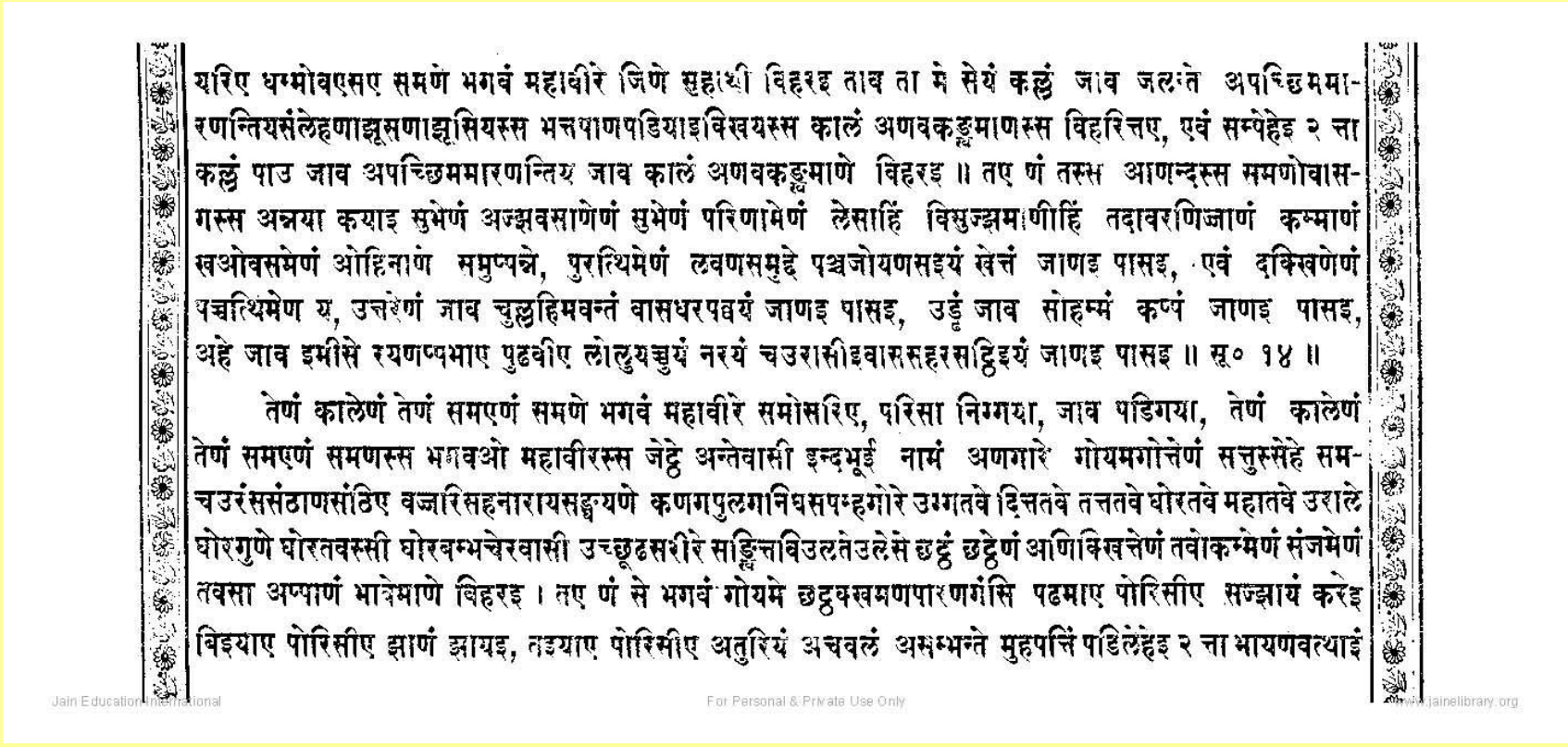

यरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ तावं ता मे सेयं कल्लं जाव जलन्ते अपच्छिममा-रणन्तियसंलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स कालं अणवकङ्खमाणस्स विहरित्तए, एवं सम्पेहेइ २ त्ता कल्लं पाउ जाव अपच्छिममारणन्तिय जाव कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ ॥ तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवास-गस्स अन्नया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिनाणं समुप्पन्ने, पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसइयं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेण य, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ, उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ, अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ॥ सू० १४ ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए, परिसा निग्गया, जाव पडिगया, तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी इन्दभूई नामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तुस्सेहे सम-चउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसङ्घयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे महातवे उराले घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबम्भचेरवासी उच्छूढसरीरे सङ्खित्तविउलतेउलेसे छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बिइयाए पोरिसीए झाणं झायइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियं अचवलं असम्भन्ते मुहपत्तिं पडिलेहेइ २ त्ता भायणवत्थाइं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य अवधिज्ञानस्य उत्पत्ति:, गौतमस्वामिन: वर्णनं एवं तस्य भिक्षाचर्यागमनं

प्रत सूत्रांक [१४-१६]

दीप अनुक्रम [१६-१८]

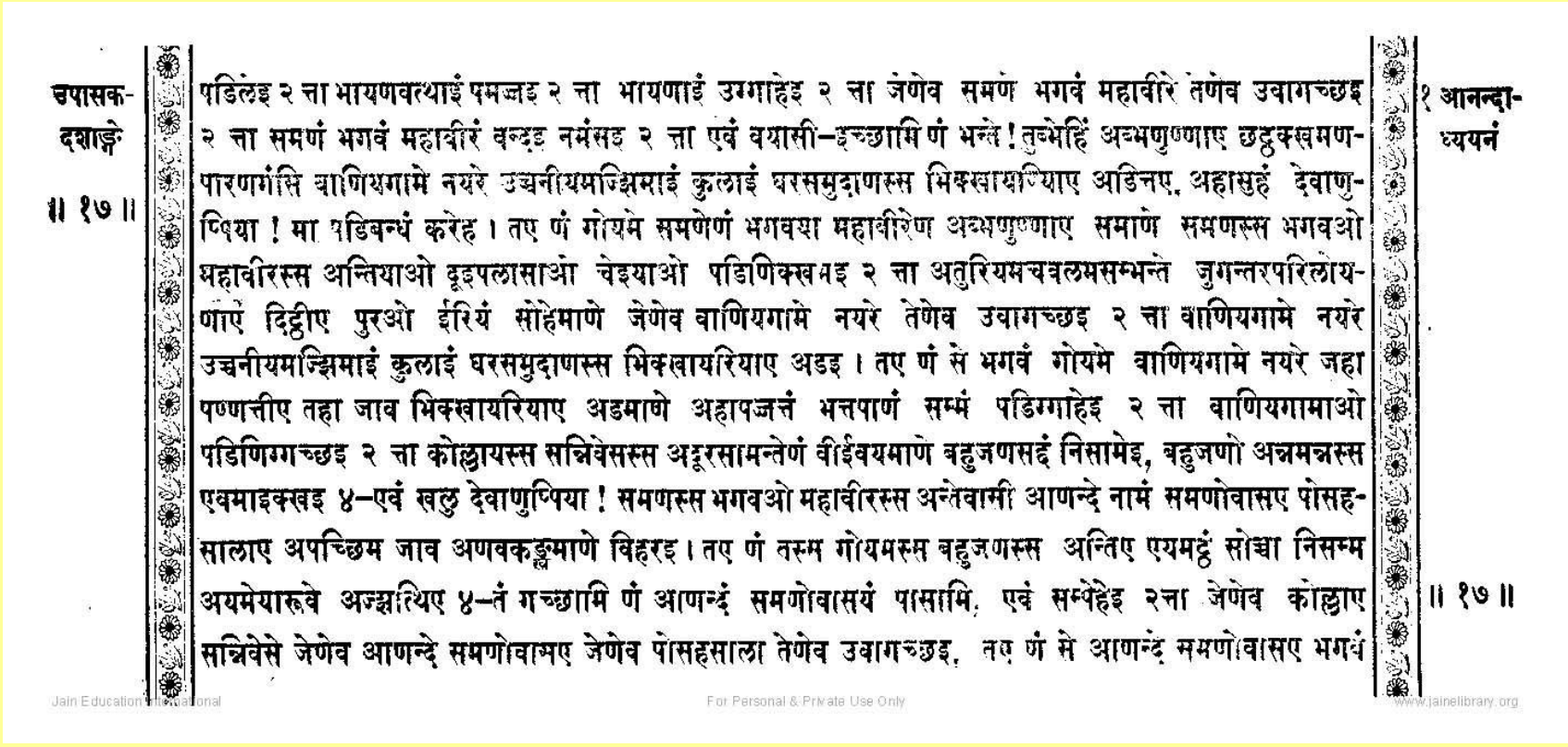

उपासक-दशाङ्गे ॥ १७ ॥

पडिलेइ २ त्ता भायणवत्थाइं पमज्जइ २ त्ता भायणाइं उग्गाहेइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भन्ते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए छट्ठक्खमण-पारणगंसि वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए, अहासुहं देवाणु-प्पिया! मा पडिबन्धं करेह। तए णं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता अतुरियमचवलमसम्भन्ते जुगन्तरपरिलोय-णाए दिट्ठीए पुरओ ईरियं सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ। तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे जहा पण्णत्तीए तहा जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं सम्मं पडिग्गाहेइ २ त्ता वाणियगामाओ पडिणिग्गच्छइ २ त्ता कोल्लायस्स सन्निवेसस्स अदूरसामन्तेणं वीईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–एवं खलु देवाणुप्पिया! समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी आणन्दे नामं समणोवासए पोसह-सालाए अपच्छिम जाव अणवकङ्खमाणे विहरइ। तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४–तं गच्छामि णं आणन्दं समणोवासयं पासामि, एवं सम्पेहेइ २त्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव आणन्दे समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं

१ आनन्दा-ध्ययनं

॥ १७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गौतमस्वामिन: वर्णनं एवं तस्य भिक्षाचर्यागमनं

प्रत सूत्रांक [१४-१६]

दीप अनुक्रम [१६-१८]

गोयमं एज्जमाणं पासइ २त्ता हट्ठ जाव हियए, भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ २त्ता एवं वयासी-एवं खलु भन्ते ! अहं इमेणं उरालेणं जाव धमणिसन्तए जाए, न संचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाए अभिवन्दित्तए, तुब्भे णं भन्ते ! इच्छाकारेणं अणभिओएणं इओ चेव एह, जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दामि नमंसामि । तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणन्दे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० १५ ॥

तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दइ नमंसइ २त्ता एवं वयासी-अत्थि णं भन्ते ! गिहिणो गिहिमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ ?, हन्ता अत्थि, जइ णं भन्ते ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, एवं खलु भन्ते ! ममवि गिहिणो गिहिमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पन्ने-पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्च जोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं नरयं जाणामि पासामि । तए णं से भगवं गोयमे आणन्दं समणोवासयं एवं वयासी-अत्थि णं आणन्दा ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, नो चेव णं एमहालए, तं णं तुमं आणन्दा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्मं पडिवज्जाहि । तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी-अत्थि णं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ ?, नो इणट्ठे समट्ठे, जइ णं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं जाव भावाणं नो आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ तं णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आनन्दस्य गौतमस्वामिना सह अवधिज्ञान-विषयक चर्चा

उपासकदशाङ्गे ॥ १८ ॥

१ आनन्दाध्ययनं

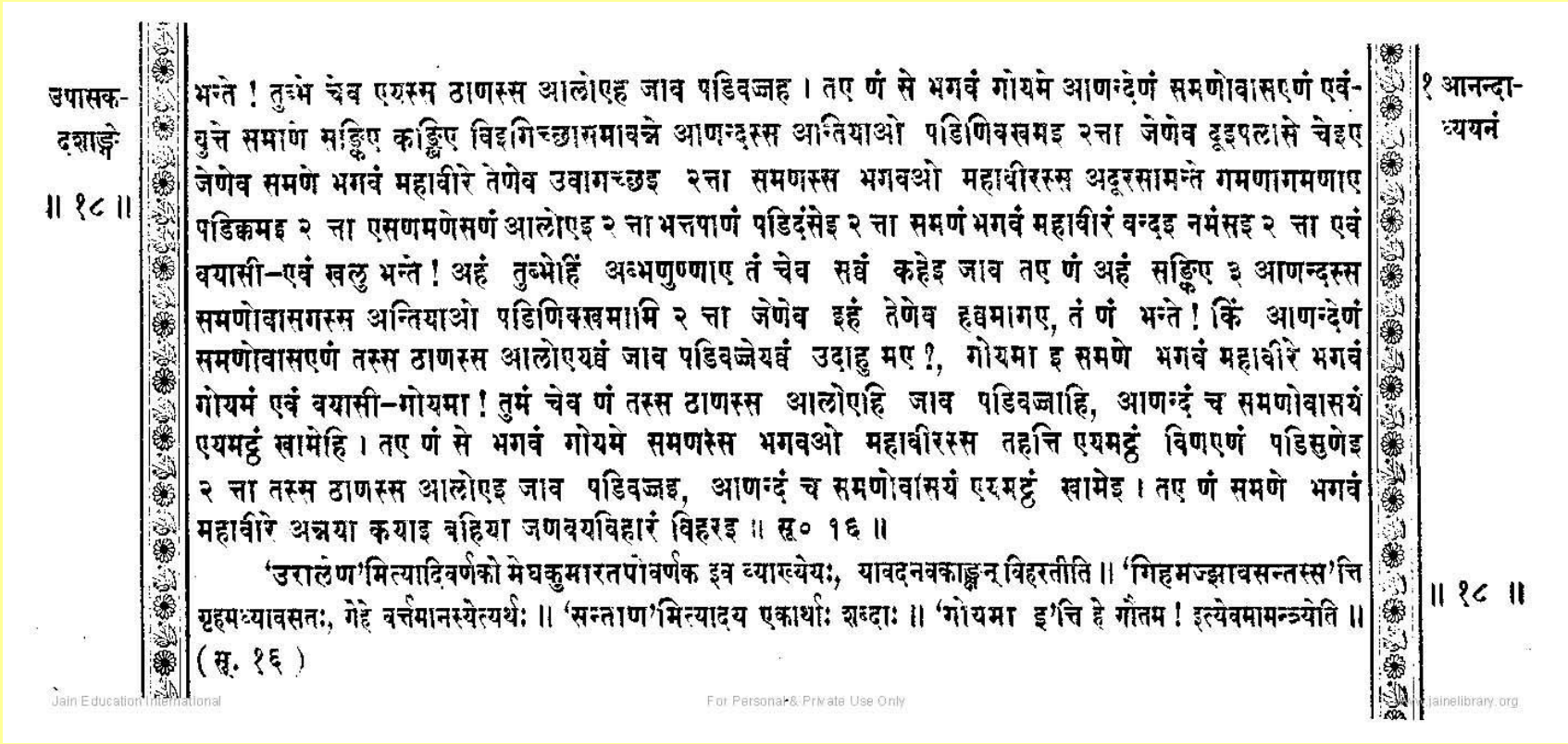

भन्ते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह जाव पडिवज्जह । तए णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवंवुत्ते समाणे सङ्किए कङ्खिए विइगिच्छासमावन्ने आणन्दस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ २त्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते गमणागमणाए पडिक्कमइ २ त्ता एसणमणेसणं आलोएइ २ त्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु भन्ते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव तए णं अहं सङ्किए ३ आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमामि २ त्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, तं णं भन्ते ! किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं उदाहु मए ?, गोयमा इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–गोयमा ! तुमं चेव णं तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेहि । तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ, आणन्दं च समणोवासयं एयमट्ठं खामेइ । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू० १६ ॥

'उरालेण'मित्यादिवर्णको मेघकुमारतपोवर्णक इव व्याख्येयः, यावदनवकाङ्क्षन् विहरतीति ॥ 'गिहमज्झावसन्तस्स'त्ति गृहमध्यावसतः, गेहे वर्त्तमानस्येत्यर्थः ॥ 'सन्ताण'मित्यादय एकार्थाः शब्दाः ॥ 'गोयमा इ'त्ति हे गौतम ! इत्येवमामन्त्र्येति ॥ (सू. १६) ॥ १८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [१७]

दीप अनुक्रम [१९]

तए णं से आणन्दे समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं जाव अप्पाणं भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस य उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं आणन्दस्सवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । आणन्दे भन्ते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ३ अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । निक्खेवो ॥ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमं अज्झयणं समत्तं ॥ सू० १७ ॥

'निक्खेवओ'त्ति निगमनं, यथा “एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि” ॥ (सू. १७)

इत्युपासकदशाङ्गे प्रथममानन्दाध्ययनम् ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र प्रथमं अध्ययनं परिसमाप्तं

प्रत सूत्रांक [१८-१९]

दीप अनुक्रम [२०-२१]

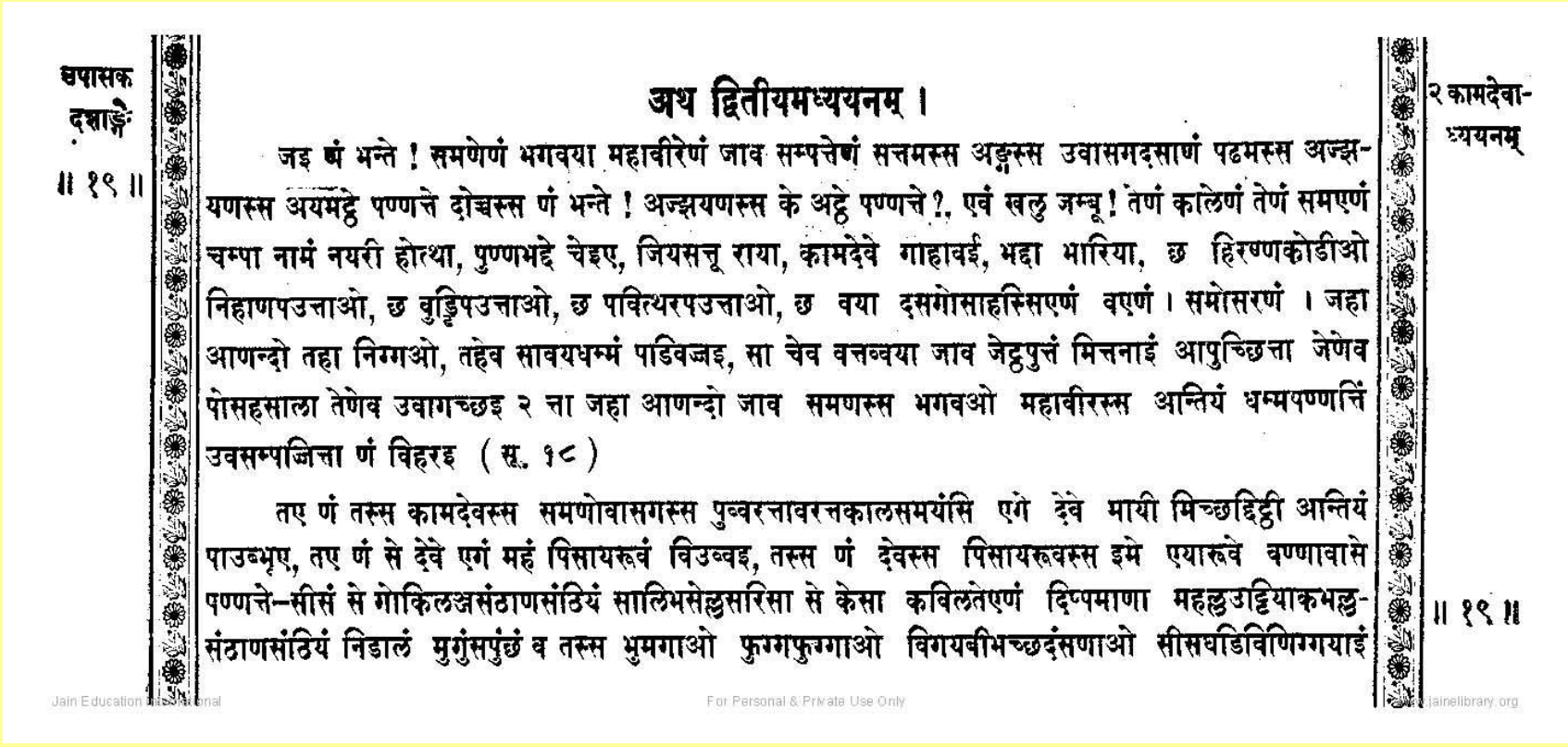

उपासक दशाङ्गे ॥ १९ ॥

अथ द्वितीयमध्ययनम् ।

२ कामदेवाध्ययनम्

जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते दोच्चस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, जियसत्तू राया, कामदेवे गाहावई, भद्दा भारिया, छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । समोसरणं । जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ, सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं मित्तनाइं आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा आणन्दो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ (सू. १८)

तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छद्दिट्ठी अन्तियं पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ, तस्स णं देवस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–सीसं से गोकिलञ्जसंठाणसंठियं सालिभसेल्लुसरिसा से केसा कविलत्तेएणं दिप्पमाणा महल्लुउट्टियाकभल्लुसंठाणसंठियं निडालं मुगुंसपुंछं व तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ विगयबीभच्छदंसणाओ सीसघडिविणिग्गयाइं

॥ १९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ द्वितीयं अध्ययनं-"कामदेव" आरभ्यते [कामदेव श्रावकस्य कथा]

प्रत सूत्रांक [१८-१९]

दीप अनुक्रम [२०-२१]

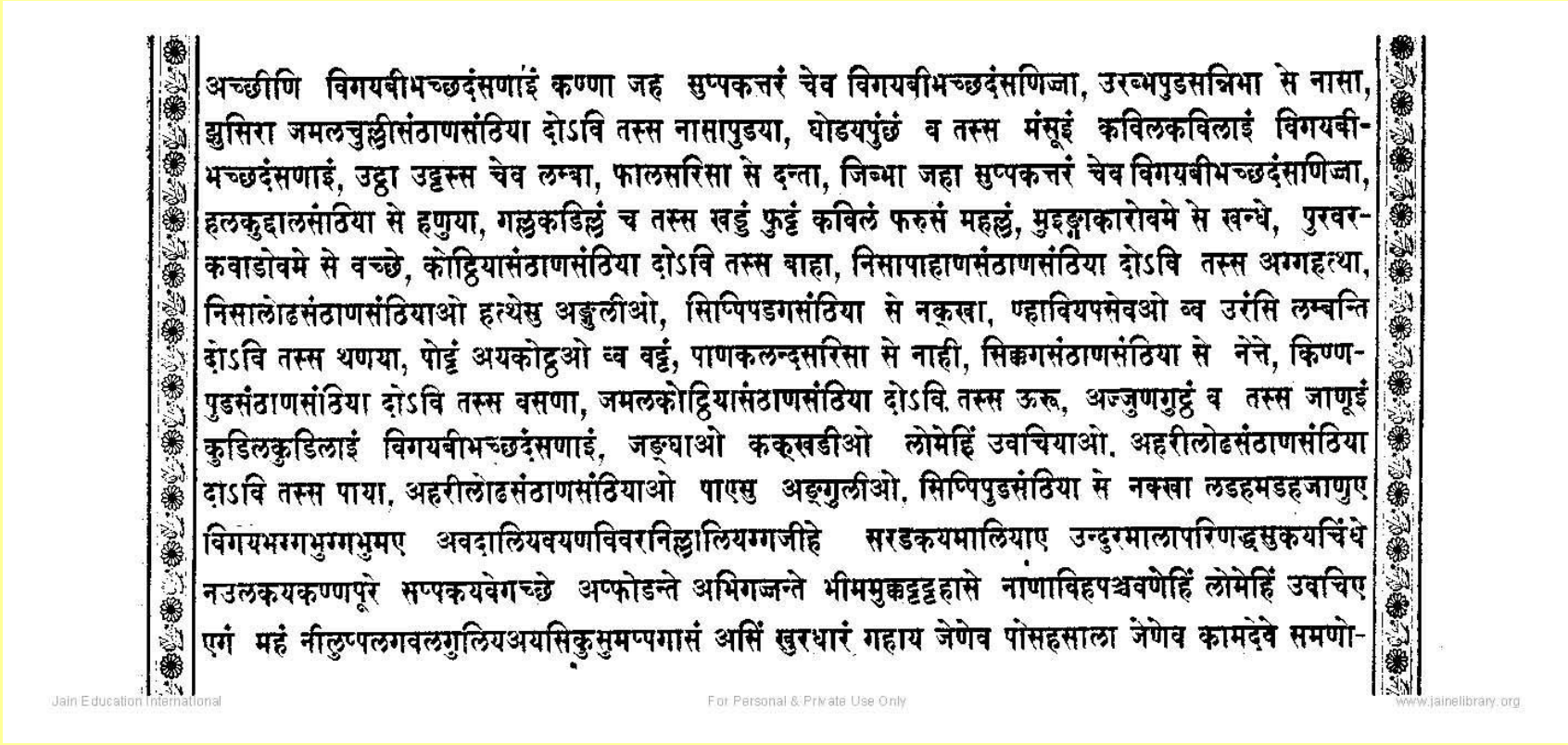

अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं कण्णा जह सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुडसन्निभा से नासा, झुसिरा जमलचुल्लीसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स नासापुडया, घोडयपुंछं व तस्स मंसूइं कविलकविलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं, उट्ठा उट्टस्स चेव लम्बा, फालसरिसा से दन्ता, जिब्भा जहा सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, हलकुद्दालसंठिया से हणुया, गल्लकडिल्लं च तस्स खड्डं फुट्टं कविलं फरुसं महल्लं, मुइङ्गाकारोवमे से खन्धे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठियासंठाणसंठिया दोऽवि तस्स बाहा, निसापाहाणसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स अग्गहत्था, निसालोढसंठाणसंठियाओ हत्थेसु अङ्गुलीओ, सिप्पिपुडगसंठिया से नक्खा, ण्हावियपसेवओ व्व उरंसि लम्बन्ति दोऽवि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, पाणकलन्दसरिसा से नाही, सिक्कगसंठाणसंठिया से नेत्ते, किण्णपुडसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स वसणा, जमलकोट्ठियासंठाणसंठिया दोऽवि तस्स ऊरू, अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिलकुडिलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं, जङ्घाओ कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ, अहरीलोढसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स पाया, अहरीलोढसंठाणसंठियाओ पाएसु अङ्गुलीओ, सिप्पिपुडसंठिया से नक्खा लडहमडहजाणुए विगयभग्गभुग्गभुमए अवदालियवयणविवरनिल्लालियग्गजीहे सरडकयमालियाए उन्दुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे नउलकयकण्णपूरे सप्पकयवेगच्छे अप्फोडन्ते अभिगज्जन्ते भीममुक्कट्टहासे नाणाविहपञ्चवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असिं खुरधारं गहाय जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [१८-१९]

दीप अनुक्रम [२०-२१]

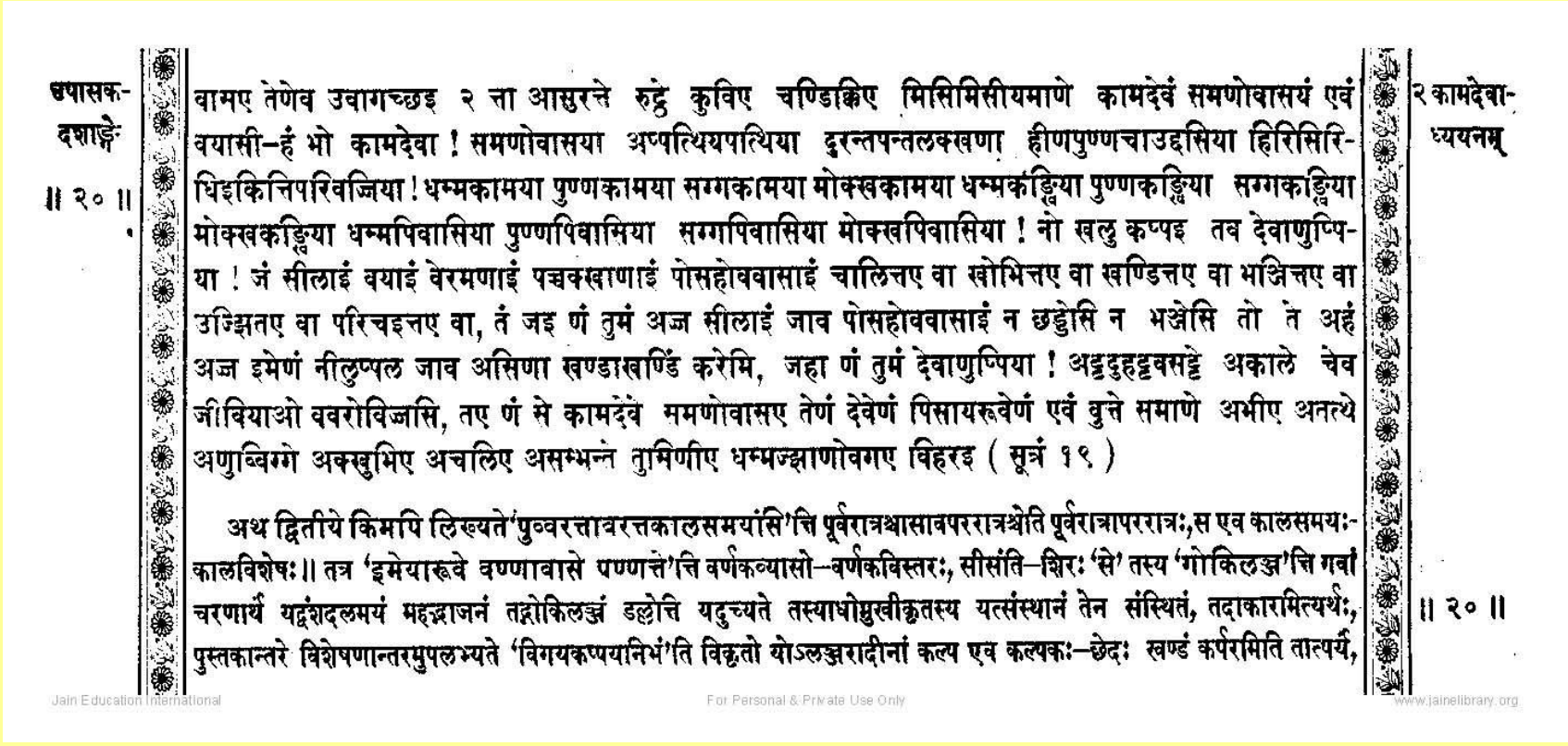

उपासक-दशाङ्गे ॥ २० ॥

वामए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! समणोवासया अप्पत्थियपत्थिया दुरन्तपन्तलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसिया हिरिसिरिधिइकित्तिपरिवज्जिया ! धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया पुण्णकङ्खिया सग्गकङ्खिया मोक्खकङ्खिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासिया ! नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खण्डित्तए वा भञ्जित्तए वा उज्झितए वा परिचइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं जाव पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भञ्जेसि तो ते अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल जाव असिणा खण्डाखण्डिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ (सूत्रं १९)

अथ द्वितीये किमपि लिख्यते'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि'त्ति पूर्वरात्रश्चासावपररात्रश्चेति पूर्वरात्रापररात्रः,स एव कालसमयः-कालविशेषः॥ तत्र 'इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते'त्ति वर्णकव्यासो–वर्णकविस्तरः, सीसंति–शिरः 'से' तस्य 'गोकिलञ्ज'त्ति गवां चरणार्थं यद्वंशदलमयं महद्भाजनं तद्गोकिलञ्जं डल्लोत्ति यदुच्यते तस्याधोमुखीकृतस्य यत्संस्थानं तेन संस्थितं, तदाकारमित्यर्थः, पुस्तकान्तरे विशेषणान्तरमुपलभ्यते 'विगयकप्पयनिभं'ति विकृतो योऽलञ्जरादीनां कल्प एव कल्पकः–छेदः खण्डं कर्परमिति तात्पर्यं,

२ कामदेवा-ध्ययनम्

॥ २० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

प्रत
सूत्रांक
[१८-१९]

दीप
अनुक्रम
[२०-२१]

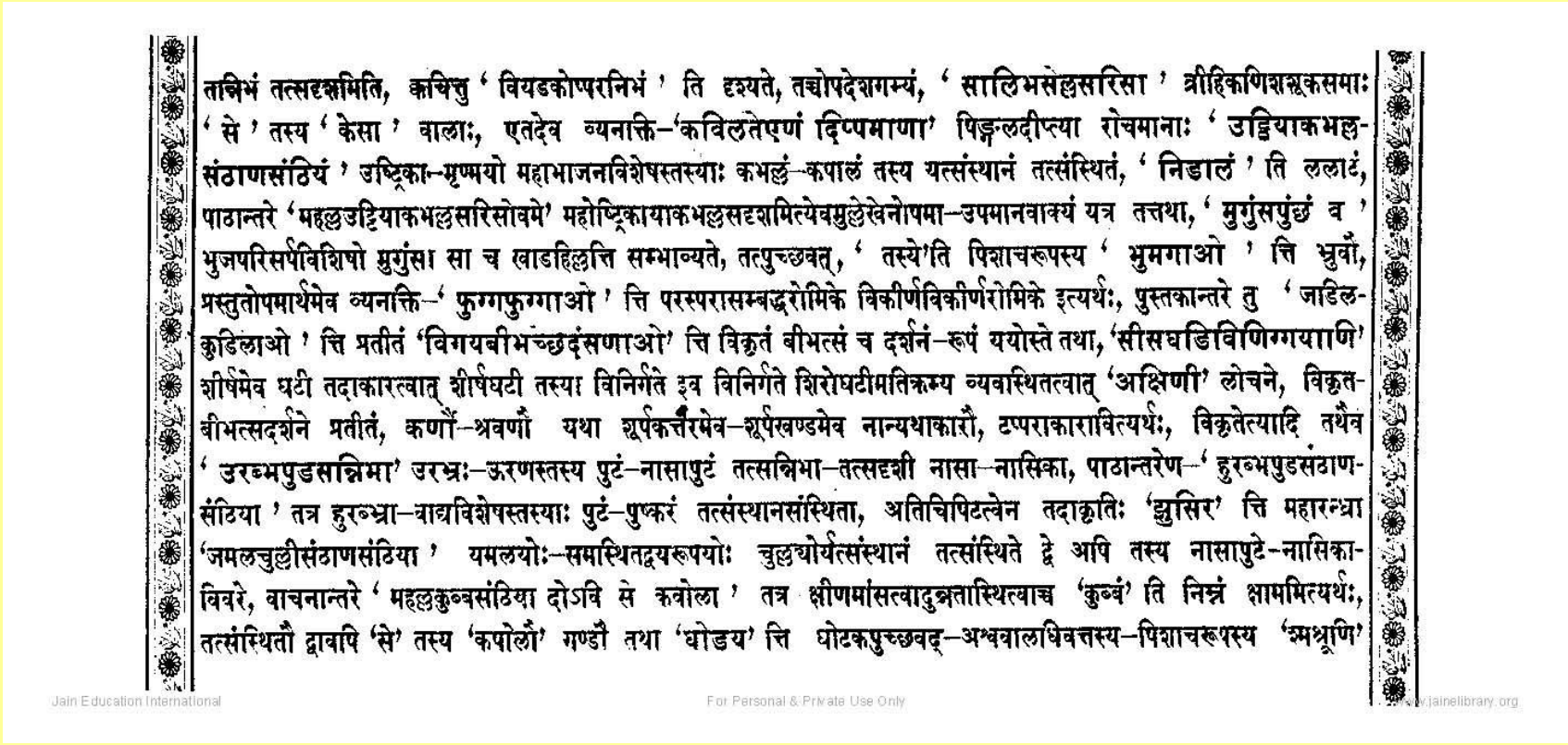

तन्निभं तत्सदृक्षमिति, क्वचित्तु 'वियडकोप्परनिभं' ति दृश्यते, तच्चोपदेशगम्यं, 'सालिभसेल्लसरिसा' व्रीहिकणिशशूकसमाः 'से' तस्य 'केसा' वालाः, एतदेव व्यनक्ति–'कविलतेएणं दिप्पमाणा' पिङ्गलदीप्त्या रोचमानाः 'उट्टियाकभल्लसंठाणसंठियं' उष्ट्रिका–मृण्मयो महाभाजनविशेषस्तस्याः कभल्लं–कपालं तस्य यत्संस्थानं तत्संस्थितं, 'निडालं' ति ललाटं, पाठान्तरे 'महल्लउट्टियाकभल्लसरिसोवमे' महोष्ट्रिकायाकभल्लसदृशमित्येवमुल्लेखेनोपमा–उपमानवाक्यं यत्र तत्तथा, 'मुगुंसपुंछं व' भुजपरिसर्पविशिषो मुगुंसा सा च खाडहिल्लत्ति सम्भाव्यते, तत्पुच्छवत्, 'तस्ये'ति पिशाचरूपस्य 'भुमगाओ' त्ति भ्रुवौ, प्रस्तुतोपमार्थमेव व्यनक्ति–'फुग्गफुग्गाओ' त्ति परस्परासम्बद्धरोमिके विकीर्णविकीर्णरोमिके इत्यर्थः, पुस्तकान्तरे तु 'जाडिलकुडिलाओ' त्ति प्रतीतं 'विगयबीभच्छदंसणाओ' त्ति विकृतं बीभत्सं च दर्शनं–रूपं ययोस्ते तथा, 'सीसघडिविणिग्गयाणि' शीर्षमेव घटी तदाकारत्वात् शीर्षघटी तस्या विनिर्गते इव विनिर्गते शिरोघटीमतिक्रम्य व्यवस्थितत्वात् 'अक्षिणी' लोचने, विकृतबीभत्सदर्शने प्रतीतं, कर्णौ–श्रवणौ यथा शूर्पकर्त्तरमेव–शूर्पखण्डमेव नान्यथाकारौ, टप्पराकारावित्यर्थः, विकृतेत्यादि तथैव 'उरब्भपुडसन्निभा' उरभ्रः–ऊरणस्तस्य पुटं–नासापुटं तत्सन्निभा–तत्सदृशी नासा–नासिका, पाठान्तरेण–'हुरब्भपुडसंठाणसंठिया' तत्र हुरब्भ्रा–वाद्यविशेषस्तस्याः पुटं–पुष्करं तत्संस्थानसंस्थिता, अतिचिपिटत्वेन तदाकृतिः 'झुसिर' त्ति महारन्ध्रा 'जमलचुल्लीसंठाणसंठिया' यमलयोः–समस्थितद्वयरूपयोः चुल्ल्योर्यत्संस्थानं तत्संस्थिते द्वे अपि तस्य नासापुटे–नासिकाविवरे, वाचनान्तरे 'महल्लकुब्बसंठिया दोऽवि से कवोला' तत्र क्षीणमांसत्वादुन्नतास्थित्वाच्च 'कुब्बं' ति निम्नं क्षाममित्यर्थः, तत्संस्थितौ द्वावपि 'से' तस्य 'कपोलौ' गण्डौ तथा 'घोडय' त्ति घोटकपुच्छवद्–अश्ववालधिवत्तस्य–पिशाचरूपस्य 'श्मश्रूणि'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

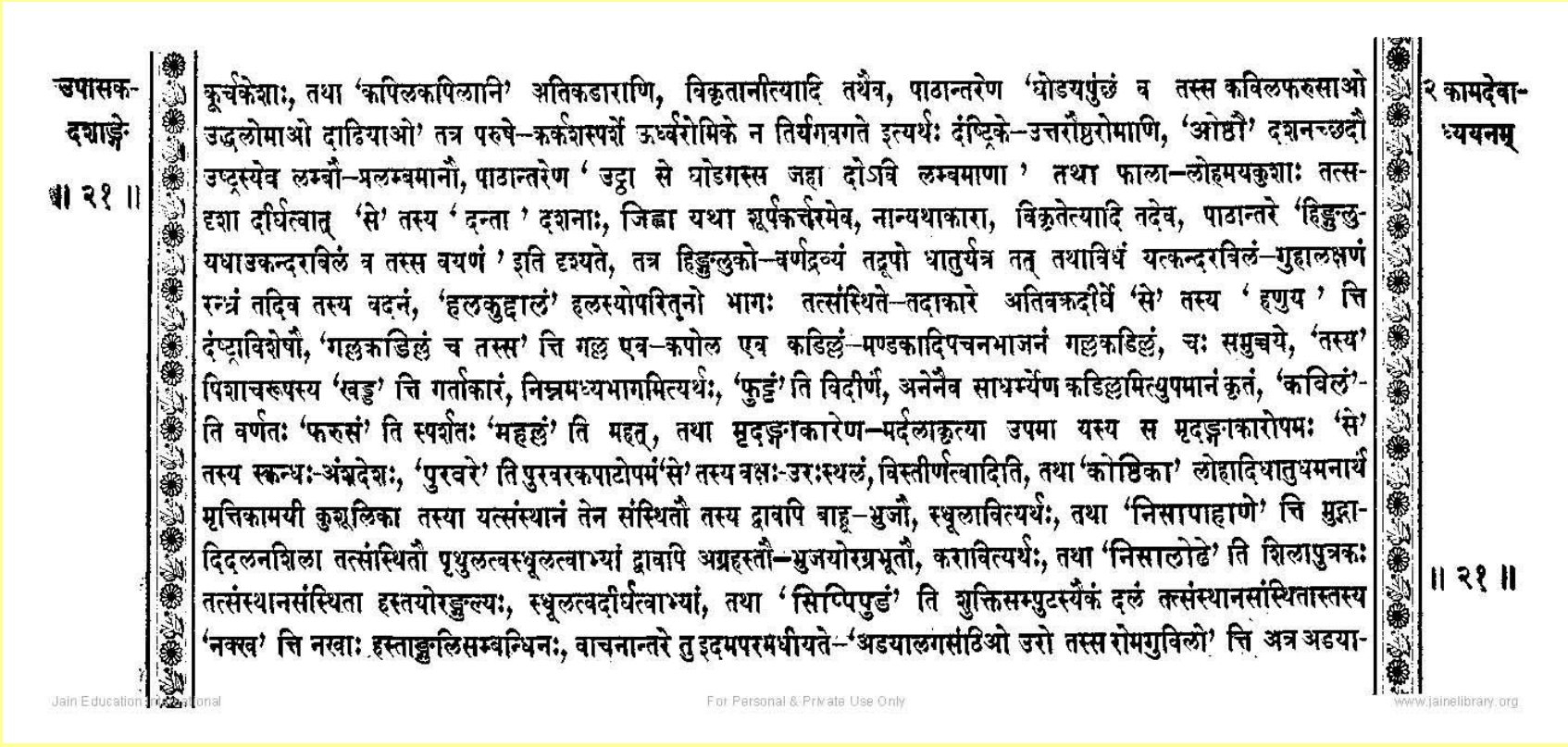

प्रत
सूत्रांक
[१८-१९]

दीप
अनुक्रम
[२०-२१]

उपासक-
दशाङ्गे
॥ २१ ॥

कूर्चकेशाः, तथा 'कपिलकपिलानि' अतिकडाराणि, विकृतानीत्यादि तथैव, पाठान्तरेण 'घोडयपुंछं व तस्स कविलफरुसाओ उद्धलोमाओ दाढियाओ' तत्र परुषे—कर्कशस्पर्शे ऊर्ध्वरोमिके न तिर्यगवगते इत्यर्थः दंष्ट्रिके—उत्तरौष्ठरोमाणि, 'ओष्ठौ' दशनच्छदौ उष्ट्रस्येव लम्बौ—प्रलम्बमानौ, पाठान्तरेण ' उट्ठा से घोडगस्स जहा दोऽवि लम्बमाणा ' तथा फाला—लोहमयकुशाः तत्सदृशा दीर्घत्वात् 'से' तस्य ' दन्ता ' दशनाः, जिह्वा यथा शूर्पकर्त्तरमेव, नान्यथाकारा, विकृतेत्यादि तदेव, पाठान्तरे 'हिङ्गुलुयधाउकन्दरबिलं व तस्स वयणं ' इति दृश्यते, तत्र हिङ्गुलुको—वर्णद्रव्यं तद्रूपो धातुर्यत्र तत् तथाविधं यत्कन्दरबिलं—गुहालक्षणं रन्ध्रं तदिव तस्य वदनं, 'हलकुद्दालं' हलस्योपरितनो भागः तत्संस्थिते—तदाकारे अतिवक्रदीर्घे 'से' तस्य ' हणुय ' त्ति दंष्ट्राविशेषौ, 'गल्लकडिल्लं च तस्स' त्ति गल्ल एव—कपोल एव कडिल्लं—मण्डकादिपचनभाजनं गल्लकडिल्लं, चः समुच्चये, 'तस्य' पिशाचरूपस्य 'खड्ड' त्ति गर्ताकारं, निम्नमध्यभागमित्यर्थः, 'फुट्टं' ति विदीर्णं, अनेनैव साधर्म्येण कडिल्लमित्युपमानं कृतं, 'कविलं'- ति वर्णतः 'फरुसं' ति स्पर्शतः 'महल्लं' ति महत्, तथा मृदङ्गाकारेण—मर्दलाकृत्या उपमा यस्य स मृदङ्गाकारोपमः 'से' तस्य स्कन्धः-अंसदेशः, 'पुरवरे' ति पुरवरकपाटोपमं 'से' तस्य वक्षः-उरःस्थलं, विस्तीर्णत्वादिति, तथा 'कोष्ठिका' लोहादिधातुधमनार्थं मृत्तिकामयी कुशूलिका तस्या यत्संस्थानं तेन संस्थितौ तस्य द्वावपि बाहू—भुजौ, स्थूलावित्यर्थः, तथा 'निसापाहाणे' त्ति मुद्गादिदलनशिला तत्संस्थितौ पृथुलत्वस्थूलत्वाभ्यां द्वावपि अग्रहस्तौ—भुजयोरग्रभूतौ, करावित्यर्थः, तथा 'निसालोढे' ति शिलापुत्रकः तत्संस्थानसंस्थिता हस्तयोरङ्गुल्यः, स्थूलत्वदीर्घत्वाभ्यां, तथा 'सिप्पिपुडं' ति शुक्तिसम्पुटस्यैकं दलं तत्संस्थानसंस्थितास्तस्य 'नक्ख' त्ति नखाः हस्ताङ्गुलिसम्बन्धिनः, वाचनान्तरे तु इदमपरमधीयते—'अडयालगसंठिओ उरो तस्स रोमगुविलो' त्ति अत्र अडया-

२ कामदेवाध्ययनम्
॥ २१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत
सूत्रांक
[१८-१९]

दीप
अनुक्रम
[२०-२१]

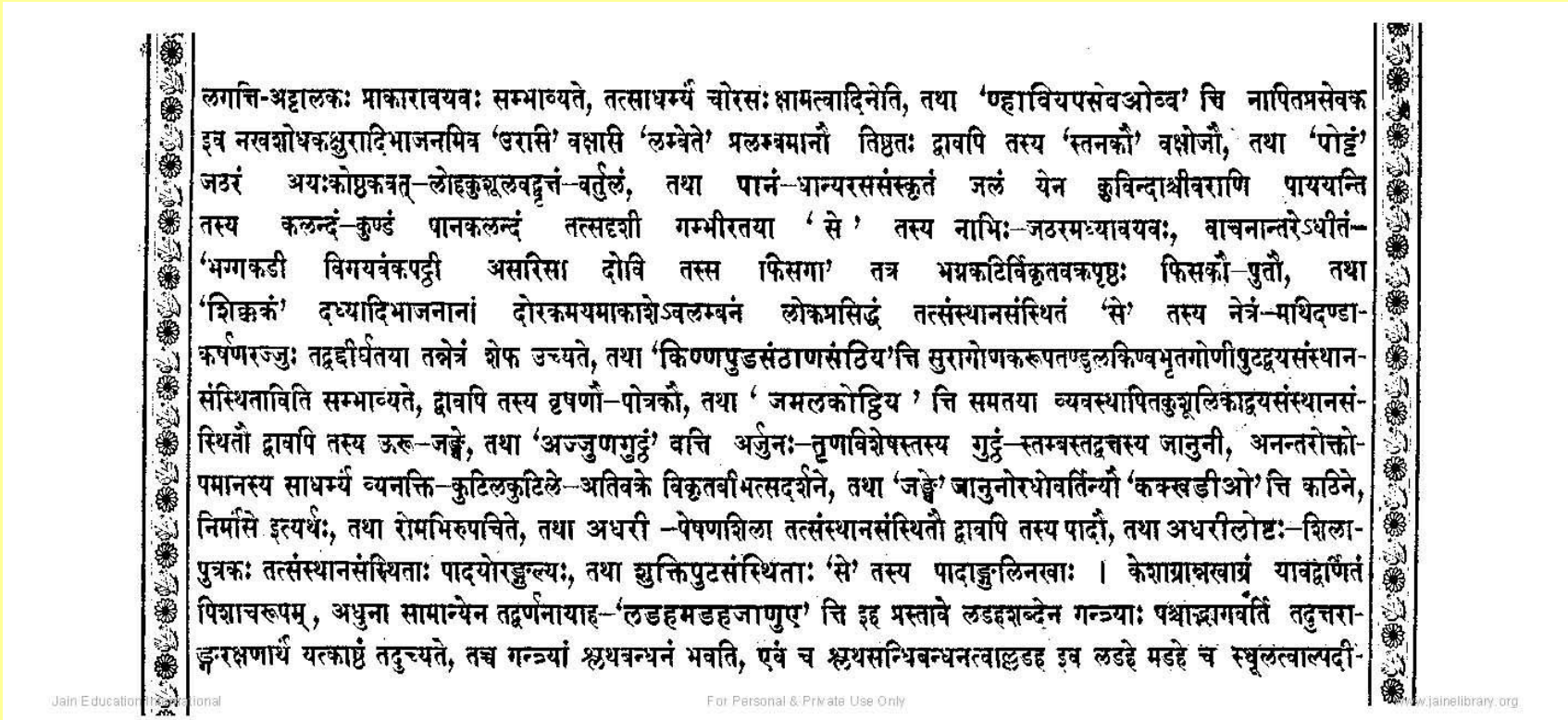

लगत्ति-अट्टालकः प्राकारावयवः सम्भाव्यते, तत्साधर्म्यं चोरसः क्षामत्वादिनेति, तथा 'ण्हावियपसेवओव्व' त्ति नापितप्रसेवक इव नखशोधकक्षुरादिभाजनमिव 'उरंसि' वक्षसि 'लम्बेते' प्रलम्बमानौ तिष्ठतः द्वावपि तस्य 'स्तनकौ' वक्षोजौ, तथा 'पोट्टं' जठरं अयःकोष्ठकवत्–लोहकुशूलवद्वृत्तं–वर्तुलं, तथा पानं–धान्यरससंस्कृतं जलं येन कुविन्दाश्चीवराणि पाययन्ति तस्य कलन्दं–कुण्डं पानकलन्दं तत्सदृशी गम्भीरतया 'से' तस्य नाभिः–जठरमध्यावयवः, वाचनान्तरेऽधीतं– 'भग्गकडी विगयवंकपट्ठी असरिसा दोवि तस्स फिसगा' तत्र भग्नकटिर्विकृतवक्रपृष्ठः फिसकौ–पुतौ, तथा 'शिक्ककं' दध्यादिभाजनानां दोरकमयमाकाशेऽवलम्बनं लोकप्रसिद्धं तत्संस्थानसंस्थितं 'से' तस्य नेत्रं–मथिदण्डाकर्षणरज्जुः तद्वद्दीर्घतया तन्नेत्रं शेफ उच्यते, तथा 'किण्णपुडसंठाणसंठिय'त्ति सुरागोणकरूपतण्डुलकिण्वभृतगोणीपुटद्वयसंस्थानसंस्थिताविति सम्भाव्यते, द्वावपि तस्य वृषणौ–पोत्रकौ, तथा 'जमलकोट्ठिय' त्ति समतया व्यवस्थापितकुशूलिकाद्वयसंस्थानसंस्थितौ द्वावपि तस्य ऊरू–जङ्घे, तथा 'अज्जुणगुट्ठं' वत्ति अर्जुनः–तृणविशेषस्तस्य गुट्ठं–स्तम्बस्तद्वत्तस्य जानुनी, अनन्तरोक्तोपमानस्य साधर्म्यं व्यनक्ति–कुटिलकुटिले–अतिवक्रे विकृतबीभत्सदर्शने, तथा 'जङ्घे' जानुनोरधोवर्तिन्यौ 'कक्खडीओ' त्ति कठिने, निर्मांसे इत्यर्थः, तथा रोमभिरुपचिते, तथा अधरी –पेषणशिला तत्संस्थानसंस्थितौ द्वावपि तस्य पादौ, तथा अधरीलोष्टः–शिलापुत्रकः तत्संस्थानसंस्थिताः पादयोरङ्गुल्यः, तथा शुक्तिपुटसंस्थिताः 'से' तस्य पादाङ्गुलिनखाः । केशाग्रान्नखाग्रं यावद्वर्णितं पिशाचरूपम्, अधुना सामान्येन तद्वर्णनायाह–'लडहमडहजाणुए' त्ति इह प्रस्तावे लडहशब्देन गन्त्र्याः पश्चाद्भागवर्ति तदुत्तराङ्गरक्षणार्थं यत्काष्ठं तदुच्यते, तच्च गन्त्र्यां श्लथबन्धनं भवति, एवं च श्लथसन्धिबन्धनत्वाल्लडह इव लडहे मडहे च स्थूलत्वाल्पदी-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

प्रत
सूत्रांक
[१८-१९]

दीप
अनुक्रम
[२०-२१]

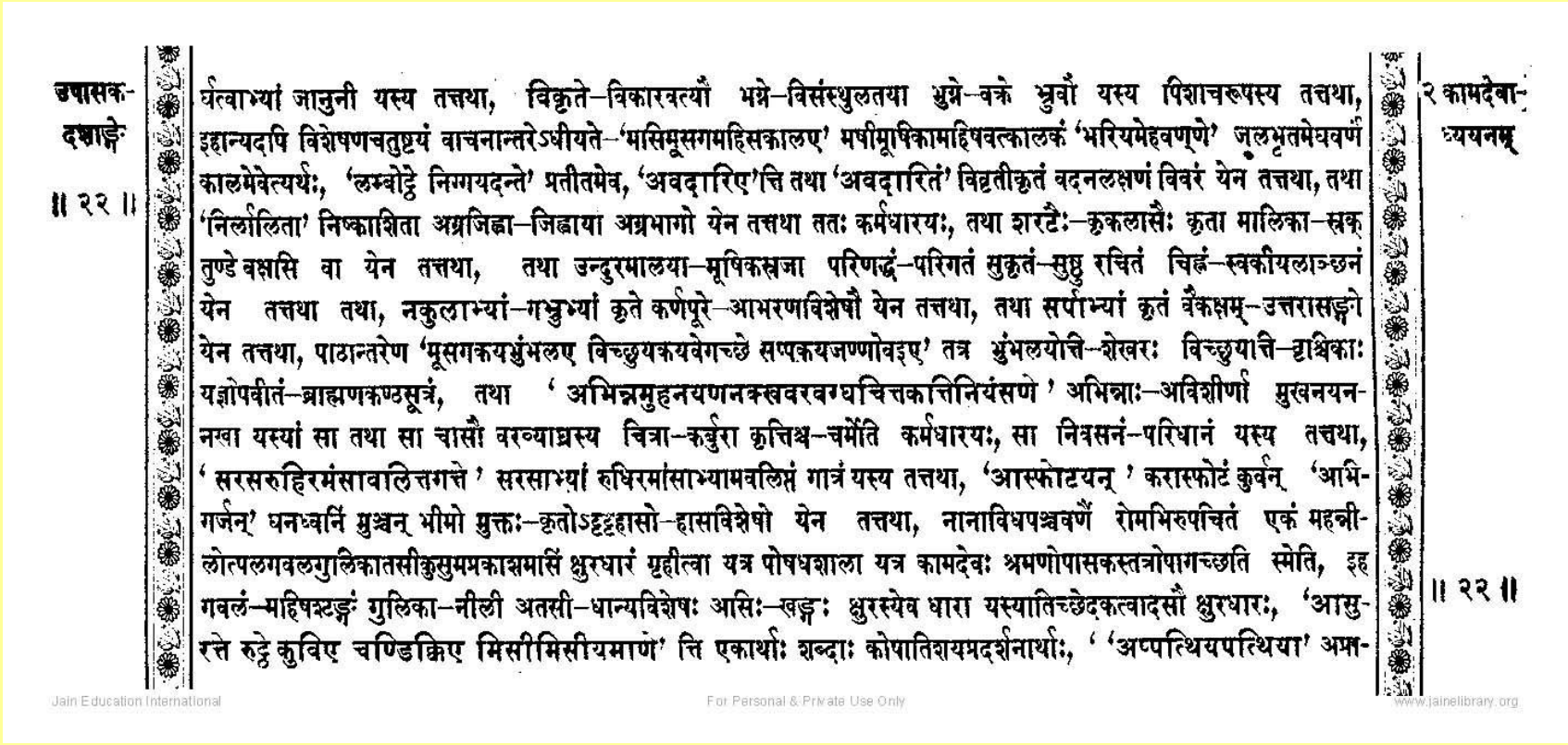

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्तिः

उपासकदशाङ्गे ॥ २२ ॥

२ कामदेवाध्ययनम्

घंत्वाभ्यां जानुनी यस्य तत्तथा, विकृते-विकारवत्यौ भग्ने-विसंस्थुलतया भुग्ने-वक्रे भ्रुवौ यस्य पिशाचरूपस्य तत्तथा, इहान्यदपि विशेषणचतुष्टयं वाचनान्तरेऽधीयते-'मसिमूसगमहिसकालए' मषीमूषिकामहिषवत्कालकं 'भरियमेहवण्णे' जलभृतमेघवर्णं कालमेवेत्यर्थः, 'लम्बोट्ठे निग्गयदन्ते' प्रतीतमेव, 'अवदारिए'त्ति तथा 'अवदारितं' विवृतीकृतं वदनलक्षणं विवरं येन तत्तथा, तथा 'निर्ललिता' निष्काशिता अग्रजिह्वा-जिह्वाया अग्रभागो येन तत्तथा ततः कर्मधारयः, तथा शरटैः-कृकलासैः कृता मालिका-स्रक् तुण्डे वक्षसि वा येन तत्तथा, तथा उन्दुरमालया-मूषिकस्रजा परिणद्धं-परिगतं सुकृतं-सुष्ठु रचितं चिह्नं-स्वकीयलाञ्छनं येन तत्तथा तथा, नकुलाभ्यां-बभ्रुभ्यां कृते कर्णपूरे-आभरणविशेषौ येन तत्तथा, तथा सर्पाभ्यां कृतं वैकक्षम्-उत्तरासङ्गो येन तत्तथा, पाठान्तरेण 'मूसगकयभुंभलए विच्छुयकयवेगच्छे सप्पकयजण्णोवइए' तत्र भुंभलयोत्ति-शेखरः विच्छुयात्ति-वृश्चिकाः यज्ञोपवीतं-ब्राह्मणकण्ठसूत्रं, तथा 'अभिन्नमुहनयणनक्खवरवग्घचित्तकत्तिनियंसणे' अभिन्नाः-अविशीर्णा मुखनयननखा यस्यां सा तथा सा चासौ वरव्याघ्रस्य चित्रा-कर्बुरा कृत्तिश्च-चर्मेति कर्मधारयः, सा निवसनं-परिधानं यस्य तत्तथा, 'सरसरुहिरमंसावलित्तगत्ते' सरसाभ्यां रुधिरमांसाभ्यामवलिप्तं गात्रं यस्य तत्तथा, 'आस्फोटयन्' करास्फोटं कुर्वन् 'अभिगर्जन्' घनध्वनिं मुञ्चन् भीमो मुक्तः-कृतोऽट्टट्टहासो-हासविशेषो येन तत्तथा, नानाविधपञ्चवर्णैः रोमभिरुपचितं एकं महन्नीलोत्पलगवलगुलिकातसीकुसुमप्रकाशमसिं क्षुरधारं गृहीत्वा यत्र पोषधशाला यत्र कामदेवः श्रमणोपासकस्तत्रोपागच्छति स्मेति, इह गवलं-महिषशृङ्गं गुलिका-नीली अतसी-धान्यविशेषः असिः-खड्गः क्षुरस्येव धारा यस्यातिच्छेदकत्वादसौ क्षुरधारः, 'आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसीमिसीयमाणे' त्ति एकार्थाः शब्दाः कोपातिशयप्रदर्शनार्थाः, ' 'अप्पत्थियपत्थिया' अप्रा- ॥ २२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

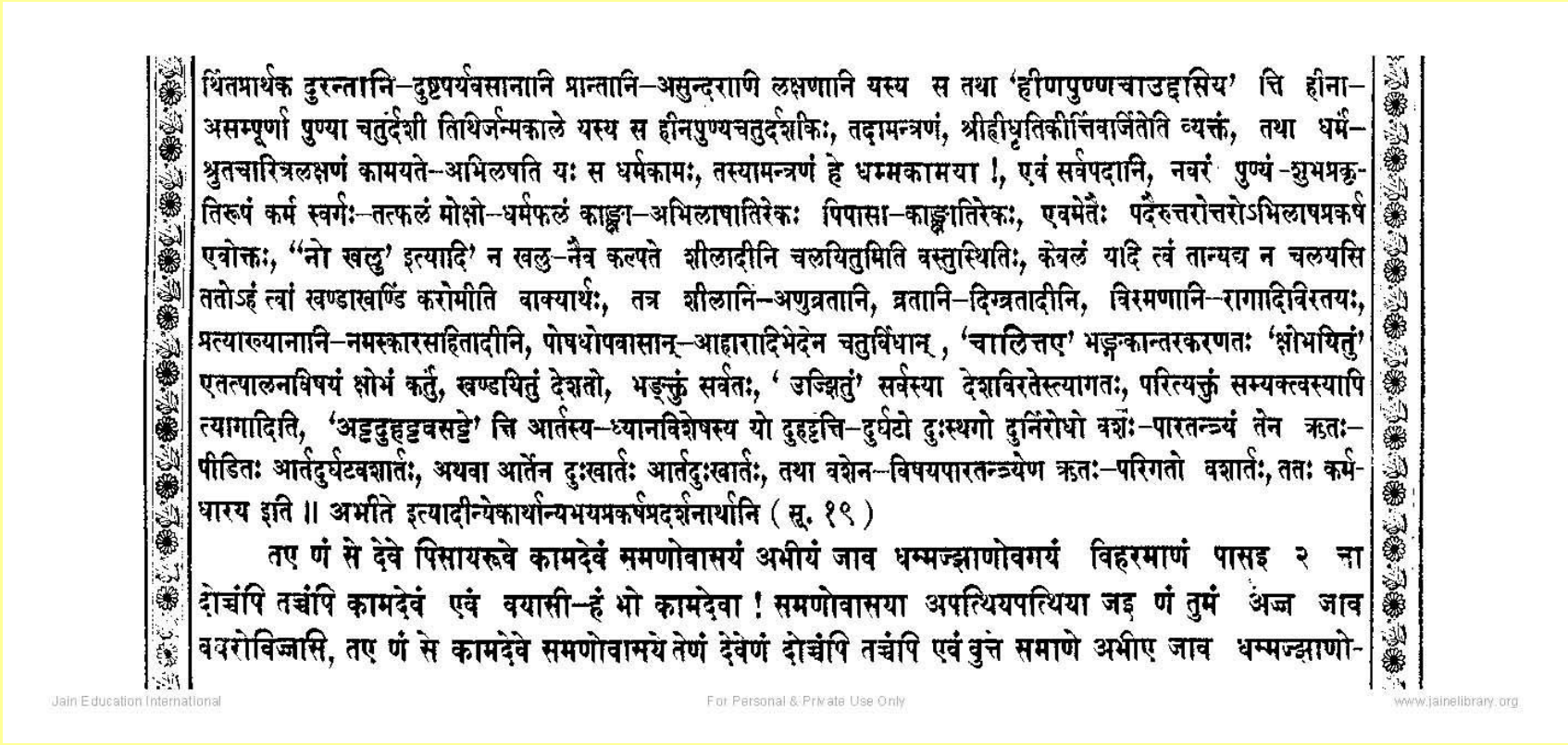

थितप्रार्थक दुरन्तानि–दुष्टपर्यवसानानि प्रान्तानि–असुन्दराणि लक्षणानि यस्य स तथा 'हीणपुण्णचाउद्दसिय' त्ति हीना–असम्पूर्णा पुण्या चतुर्दशी तिथिर्जन्मकाले यस्य स हीनपुण्यचतुर्दशीकः, तदामन्त्रणं, श्रीहीधृतिकीर्त्तिवार्जितेति व्यक्तं, तथा धर्म–श्रुतचारित्रलक्षणं कामयते–अभिलषति यः स धर्मकामः, तस्यामन्त्रणं हे धम्मकामया !, एवं सर्वपदानि, नवरं पुण्यं–शुभप्रकृतिरूपं कर्म स्वर्गः–तत्फलं मोक्षो–धर्मफलं काङ्क्षा–अभिलाषातिरेकः पिपासा–काङ्क्षातिरेकः, एवमेतैः पदैरुत्तरोत्तरोऽभिलाषप्रकर्ष एवोक्तः, "नो खलु' इत्यादि' न खलु–नैव कल्पते शीलादीनि चलयितुमिति वस्तुस्थितिः, केवलं यदि त्वं तान्यद्य न चलयसि ततोऽहं त्वां खण्डाखण्डिं करोमीति वाक्यार्थः, तत्र शीलानि–अणुव्रतानि, व्रतानि–दिग्व्रतादीनि, विरमणानि–रागादिविरतयः, प्रत्याख्यानानि–नमस्कारसहितादीनि, पोषधोपवासान्–आहारादिभेदेन चतुर्विधान्, 'चालित्तए' भङ्गकान्तरकरणतः 'क्षोभयितुं' एतत्पालनविषयं क्षोभं कर्तुं, खण्डयितुं देशतो, भङ्क्तुं सर्वतः, ' उज्झितुं' सर्वस्या देशविरतेस्त्यागतः, परित्यक्तुं सम्यक्त्वस्यापि त्यागादिति, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' त्ति आर्तस्य–ध्यानविशेषस्य यो दुहट्टत्ति–दुर्घटो दुःस्थगो दुर्निरोधो वशः–पारतन्त्र्यं तेन कृतः–पीडितः आर्तदुर्घटवशार्तः, अथवा आर्तेन दुःखार्तः आर्तदुःखार्तः, तथा वशेन–विषयपारतन्त्र्येण कृतः–परिगतो वशार्तः, ततः कर्मधारय इति ॥ अभीते इत्यादीन्येकार्थान्यभयप्रकर्षप्रदर्शनार्थानि (सू. १९)

तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! समणोवासया अपत्थियपत्थिया जइ णं तुमं अज्ज जाव ववरोविज्जासि, तए णं से कामदेवे समणोवासये तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव धम्मज्झाणो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

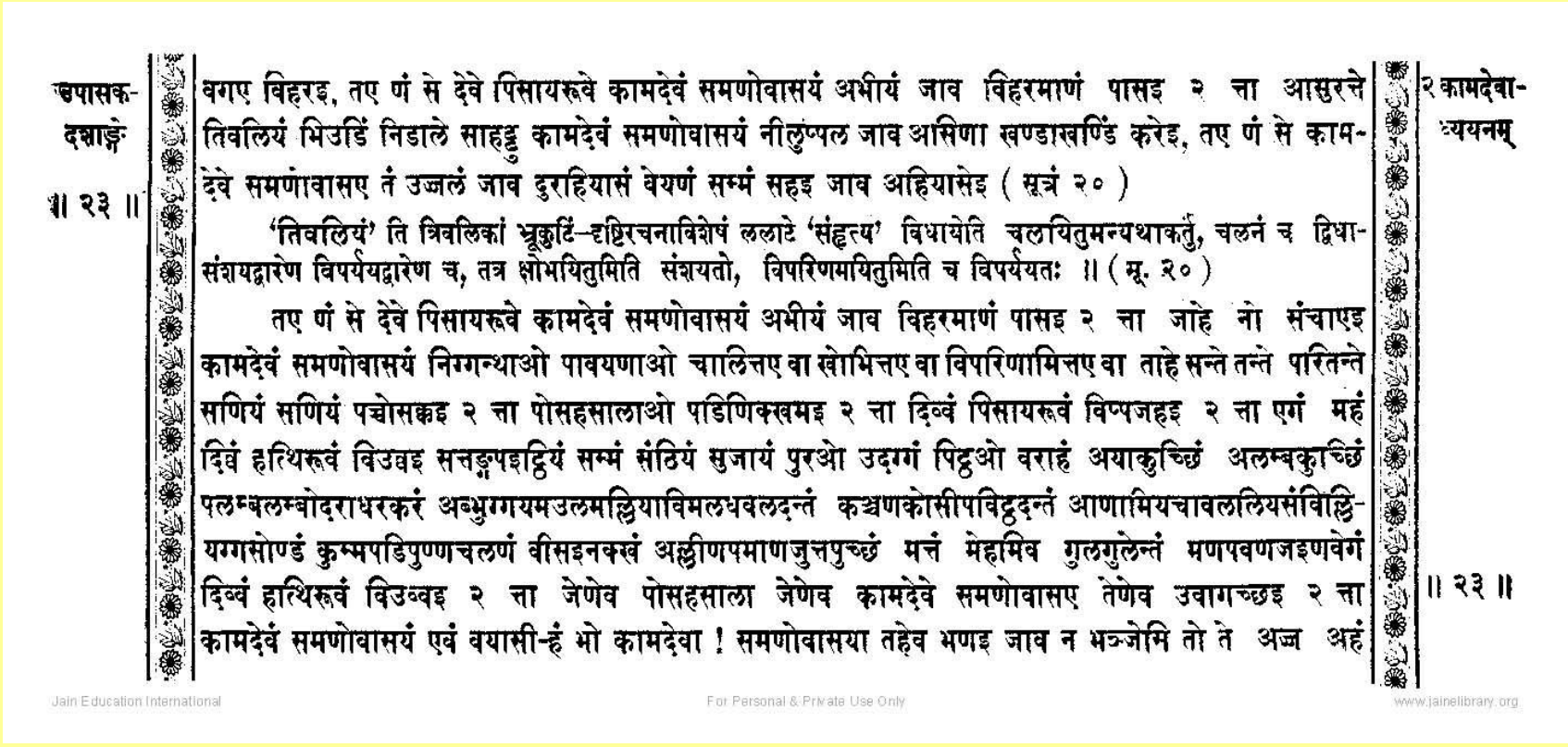

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [२०]

दीप अनुक्रम [२२]

उपासकदशाङ्गे ॥ २३ ॥ | २ कामदेवाध्ययनम्

वगए विहरइ, तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता आसुरत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल जाव असिणा खण्डाखण्डिं करेइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ जाव अहियासेइ (सूत्रं २०)

'तिवलियं' ति त्रिवलिकां भ्रूकुटिं—दृष्टिरचनाविशेषं ललाटे 'संहृत्य' विधायेति चलयितुमन्यथाकर्तुं, चलनं च द्विधा-संशयद्वारेण विपर्ययद्वारेण च, तत्र क्षोभयितुमिति संशयतो, विपरिणमयितुमिति च विपर्ययतः ॥ (सू. २०)

तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते सणियं सणियं पच्चोसक्कइ २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ २ त्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ सत्तङ्गपइट्ठियं सम्मं संठियं सुजायं पुरओ उदग्गं पिट्ठओ वराहं अयाकुच्छिं अलम्बकुच्छिं पलम्बलम्बोदराधरकरं अब्भुग्गयमउलमल्लियाविमलधवलदन्तं कञ्चणकोसीपविट्ठदन्तं आणामियचावललियसंविल्लियग्गसोण्डं कुम्मपडिपुण्णचलणं वीसइनक्खं अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलगुलेन्तं मणपवणजइणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो कामदेवा ! समणोवासया तहेव भणइ जाव न भञ्जेमि तो ते अज्ज अहं ॥ २३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [२१]

दीप अनुक्रम [२३]

सोण्डाए गिण्हामि २ त्ता पोसहसालाओ नीणेमि २ त्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि २ त्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि २ त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जासि, तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो कामदेवा! तहेव जाव सोऽवि विहरइ, तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता आसुरुत्ते ४ कामदेवं समणोवासयं सोण्डाए गिण्हेइ २ त्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ २ त्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छइ २ त्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ (सूत्रं २१)

श्रान्तादयः समानार्थाः, 'सत्तङ्गपइट्ठियं' ति सप्ताङ्गानि—चत्वारः पादाः करः पुच्छं शिश्नं चेति एतानि प्रतिष्ठितानि—भूमौ लग्नानि यस्य तत्तथा, 'सम्मं' मांसोपचयात्संस्थितं गजलक्षणोपेतसकलाङ्गोपाङ्गत्वात्सुजातमिव सुजातं पूर्णदिनजातं 'पुरओ'अग्रत उदग्रं—उच्चं, समुच्छ्रितशिर इत्यर्थः, 'पृष्ठतः' पृष्ठदेशे वराहः—शूकरः स इव वराहः, प्राकृतत्वान्नपुंसकलिङ्गता, अजाया इव कुक्षिर्यस्य तदजाकुक्षि, अलम्बकुक्षि बलवत्त्वेन प्रलम्बो—दीर्घो लम्बोदरस्येव—गणपतेरिव अधरः—ओष्ठः करश्च—हस्तो यस्य तत्प्रलम्बलम्बोदराधरकरं, अभ्युद्गतमुकुला—जातकुड्मला या मल्लिका—विचकिलस्तद्वत् विमलधवलौ दन्तौ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [२१]

दीप अनुक्रम [२३]

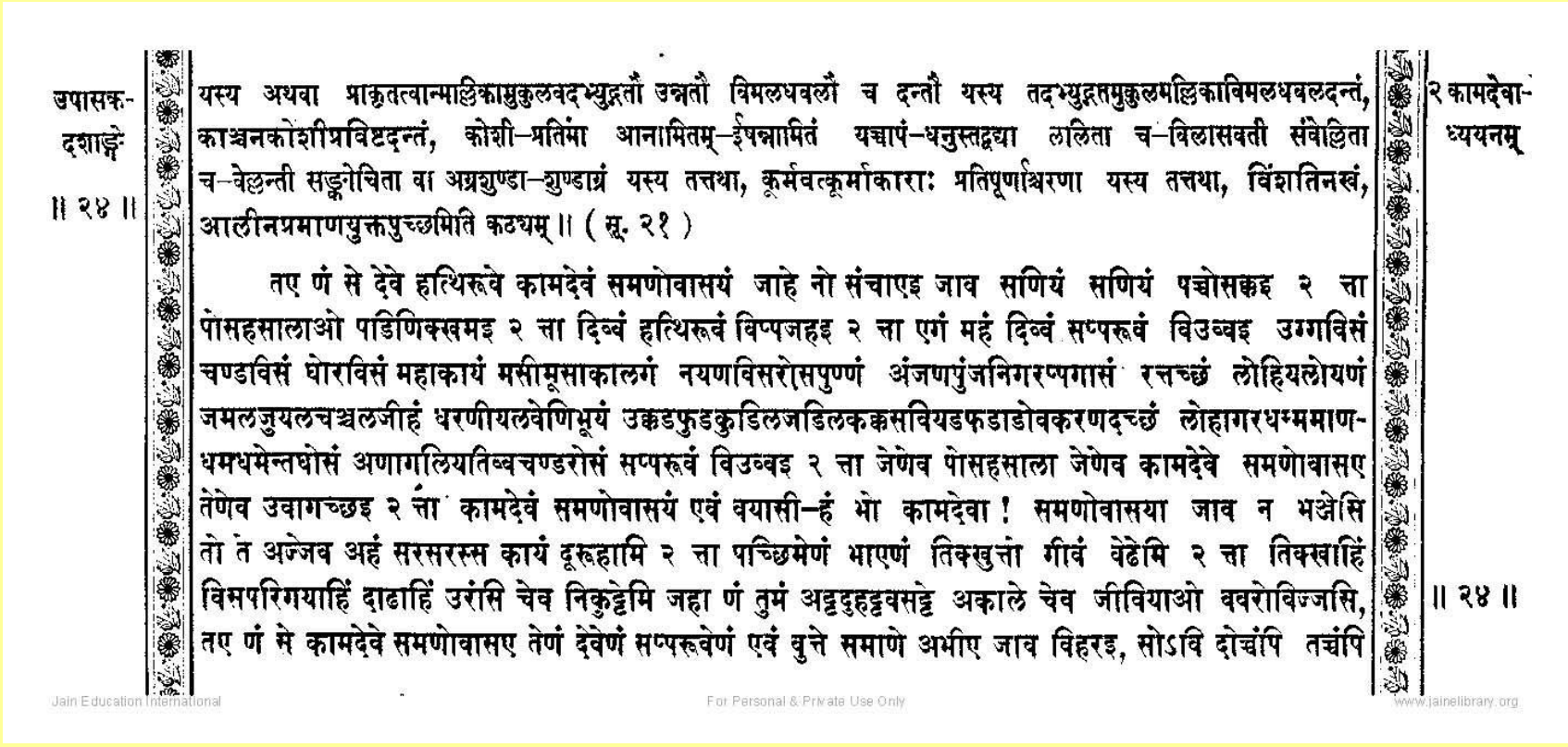

यस्य अथवा प्राकृतत्वान्माल्लिकामुकुलवदभ्युद्गतौ उन्नतौ विमलधवलौ च दन्तौ यस्य तदभ्युद्गतमुकुलमल्लिकाविमलधवलदन्तं, काञ्चनकोशीप्रविष्टदन्तं, कोशी-प्रतिमा आनामितम्-ईषन्नामितं यच्चापं-धनुस्तद्वद्या ललिता च-विलासवती संवेल्लिता च-वेल्लन्ती सङ्कोचिता वा अग्रशुण्डा-शुण्डाग्रं यस्य तत्तथा, कूर्मवत्कूर्माकाराः प्रतिपूर्णाश्चरणा यस्य तत्तथा, विंशतिनखं, आलीनप्रमाणयुक्तपुच्छमिति कठ्यम् ॥ (सू. २१)

तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ जाव सणियं सणियं पच्चोसक्कइ २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ २ त्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ उग्गविसं चण्डविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसाकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंजनिगरप्पगासं रत्तच्छं लोहियलोयणं जमलजुयलचञ्चलजीहं धरणीयलवेणिभूयं उक्कडफुडकुडिलजडिलकक्कसवियडफडाडोवकरणदच्छं लोहागरधम्ममाण-धमधमेन्तघोसं अणागलियतिव्वचण्डरोसं सप्परूवं विउव्वइ २ त्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो कामदेवा! समणोवासया जाव न भञ्जेसि तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दूरुहामि २ त्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि २ त्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, ॥ २४ ॥
तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, सोऽवि दोच्चंपि तच्चंपि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

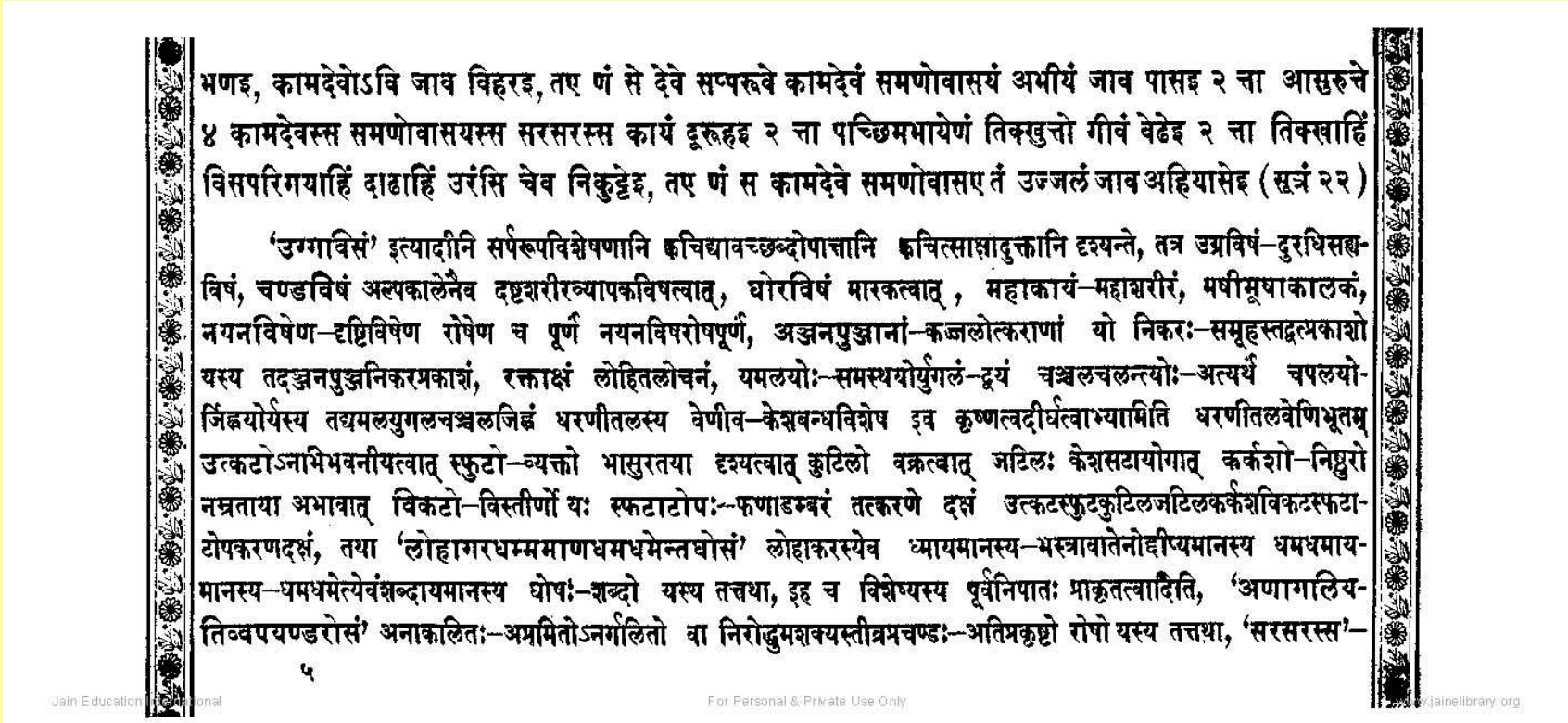

प्रत सूत्रांक [२२] दीप अनुक्रम [२४]	मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित...........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

भणइ, कामदेवोऽवि जाव विहरइ, तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता आसुरुत्ते ४ कामदेवस्स समणोवासयस्स सरसरस्स कायं दूरूहइ २ त्ता पच्छिमभायेणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ २ त्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ, तए णं स कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ (सूत्रं २२)

'उग्गविसं' इत्यादीनि सर्परूपविशेषणानि कचिद्यावच्छब्दोपात्तानि कचित्साक्षादुक्तानि दृश्यन्ते, तत्र उग्रविषं-दुरधिसह्यविषं, चण्डविषं अल्पकालेनैव दष्टशरीरव्यापकविषत्वात्, घोरविषं मारकत्वात्, महाकायं-महाशरीरं, मषीमूषाकालकं, नयनविषेण-दृष्टिविषेण रोषेण च पूर्ण नयनविषरोषपूर्णं, अञ्जनपुञ्जानां-कज्जलोत्कराणां यो निकरः-समूहस्तद्वत्प्रकाशो यस्य तदञ्जनपुञ्जनिकरप्रकाशं, रक्ताक्षं लोहितलोचनं, यमलयोः-समस्थयोर्युगलं-द्वयं चञ्चलचलन्त्योः-अत्यर्थं चपलयोर्जिह्वयोर्यस्य तद्यमलयुगलचञ्चलजिह्वं धरणीतलस्य वेणीव-केशबन्धविशेष इव कृष्णत्वदीर्घत्वाभ्यामिति धरणितलवेणिभूतम् उत्कटोऽनाभिभवनीयत्वात् स्फुटो-व्यक्तो भासुरतया दृश्यत्वात् कुटिलो वक्रत्वात् जटिलः केशसटायोगात् कर्कशो-निष्ठुरो नम्रताया अभावात् विकटो-विस्तीर्णो यः स्फटाटोपः-फणाडम्बरं तत्करणे दक्षं उत्कटस्फुटकुटिलजटिलकर्कशविकटस्फटाटोपकरणदक्षं, तथा 'लोहागरधम्ममाणधमधमेन्तघोसं' लोहाकरस्येव ध्मायमानस्य-भस्त्रावातेनोद्दीप्यमानस्य धमधमायमानस्य-धमधमेत्येवंशब्दायमानस्य घोषः-शब्दो यस्य तत्तथा, इह च विशेष्यस्य पूर्वनिपातः प्राकृतत्वादिति, 'अणागलियतिव्वपयण्डरोसं' अनाकलितः-अप्रमितोऽनर्गलितो वा निरोद्धुमशक्यस्तीव्रप्रचण्डः-अतिप्रकृष्टो रोषो यस्य तत्तथा, 'सरसरस्स'-

५

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

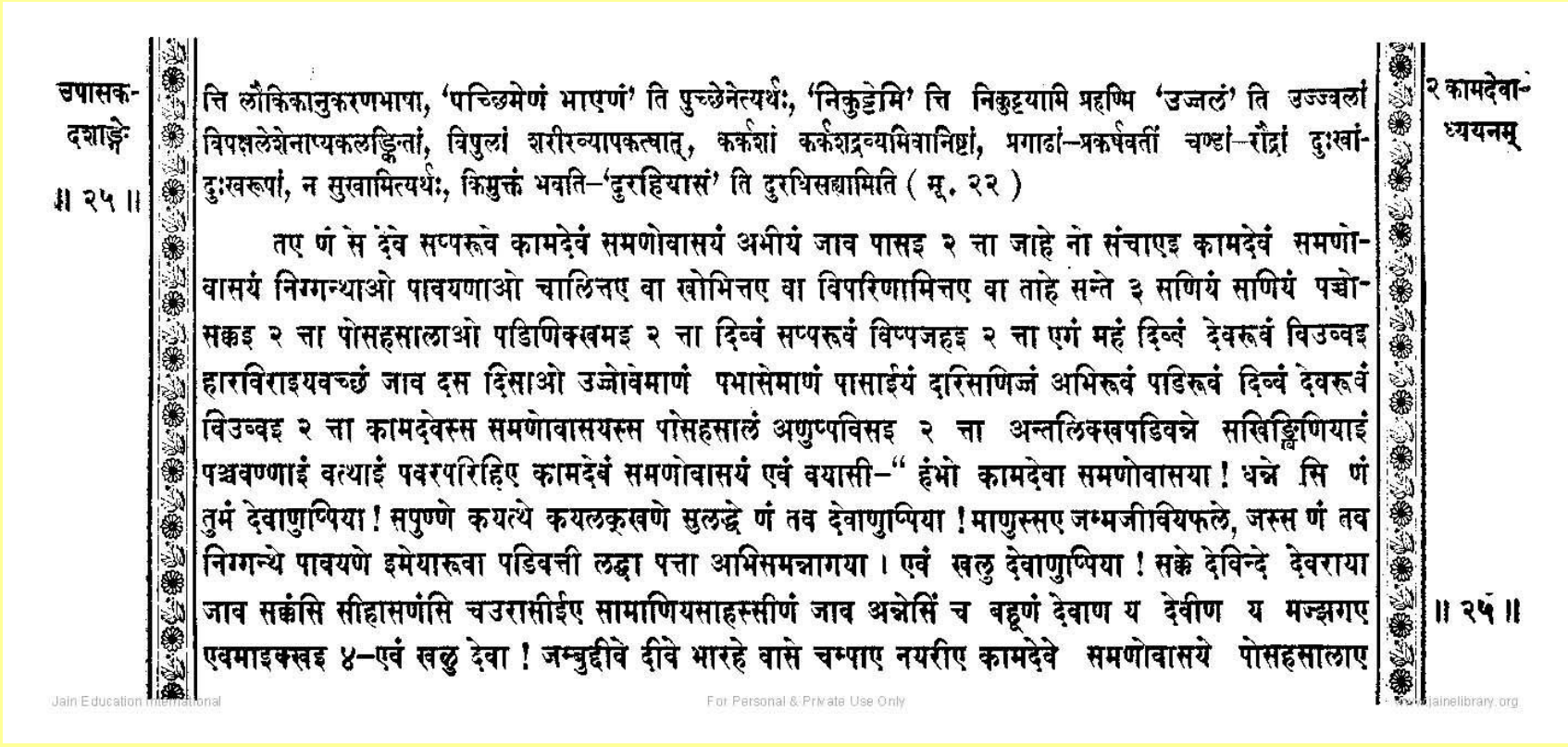

उपासक-दशाङ्गे ॥ २५ ॥

त्ति लौकिकानुकरणभाषा, 'पच्छिमेणं भाएणं' ति पुच्छेनेत्यर्थः, 'निकुट्टेमि' त्ति निकुट्टयामि ग्रहणमि 'उज्जलं' ति उज्ज्वलां विपक्षलेशेनाप्यकलङ्कितां, विपुलां शरीरव्यापकत्वात्, कर्कशां कर्कशद्रव्यमिवानिष्टां, प्रगाढां–प्रकर्षवतीं चण्डां–रौद्रां दुःखां-दुःखरूपां, न सुखामित्यर्थः, किमुक्तं भवति–'दुरहियासं' ति दुरधिसह्यामिति (सू. २२)

तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणो-वासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते ३ सणियं सणियं पच्चो-सक्कइ २ त्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पजहइ २ त्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ हारविराइयवच्छं जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ २ त्ता कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ २ त्ता अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिङ्खिणियाइं पञ्चवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–" हंभो कामदेवा समणोवासया ! धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सपुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गन्थे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविन्दे देवराया जाव सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं जाव अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए एवमाइक्खइ ४–एवं खलु देवा ! जम्बुद्दीवे दीवे भारहे वासे चम्पाए नयरीए कामदेवे समणोवासये पोसहसालाए

२ कामदेवा-ध्ययनम्

॥ २५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्तिः एवं मायी-मिथ्यादृष्टिः देवकृतः उपसर्गः

प्रत सूत्रांक [२३]

दीप अनुक्रम [२५]

पोसहियबम्भचारी जाव दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, नो खलु से सक्का केणइ देवेण वा दाणवेण वा जाव गन्धव्वेण वा निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तए णं अहं सक्कस्स देविन्दस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ इहं हव्वमागए, तं अहो णं देवाणुप्पिया ! इड्ढी ६ लद्धा ३, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पिया ! इड्ढी जाव अभिसमन्नागया, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया ! खमन्तु मज्झ देवाणुप्पिया ! खन्तुमरहन्ति णं देवाणुप्पिया नाइं भुज्जो करणयाएत्तिकट्टु पायवडिए पञ्जलिउडे एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो खामेइ २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गं तिकट्टु पडिमं पारेइ (सू० २३)

'हारविराइयवच्छ'मित्यादौ यावत्करणादिदं दृश्यं-'कडगतुडियथम्भियभुयं अङ्गदकुण्डलमट्ठगण्डतलकण्णपीढधारं विचित्तहत्थाभरणं विचित्तमालामउलिं कल्लाणगपवरवत्थपरिहियं कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरं भासुरबोन्दिं पलम्बवणमालधरं दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गन्धेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं सङ्घयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए' त्ति कण्ठ्यं नवरं कटकानि-कङ्कणविशेषाः तुटितानि-बाहुरक्षकास्ताभिरतिबहुत्वात्स्तंभितौ-स्तब्धीकृतौ भुजौ यस्य तत्तथा, अङ्गदे च-केयूरे कुण्डले च प्रतीते, मृष्टगण्डतले-घृष्टगण्डे ये कर्णपीठाभिधाने कर्णाभरणे ते च धारयति यत्तत्तथा, तथा विचित्रमालाप्रधानो मौलिः-मुकुटं मस्तकं वा यस्य तत्तथा, कल्याणकम्-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत
सूत्रांक
[२३]

दीप
अनुक्रम
[२५]

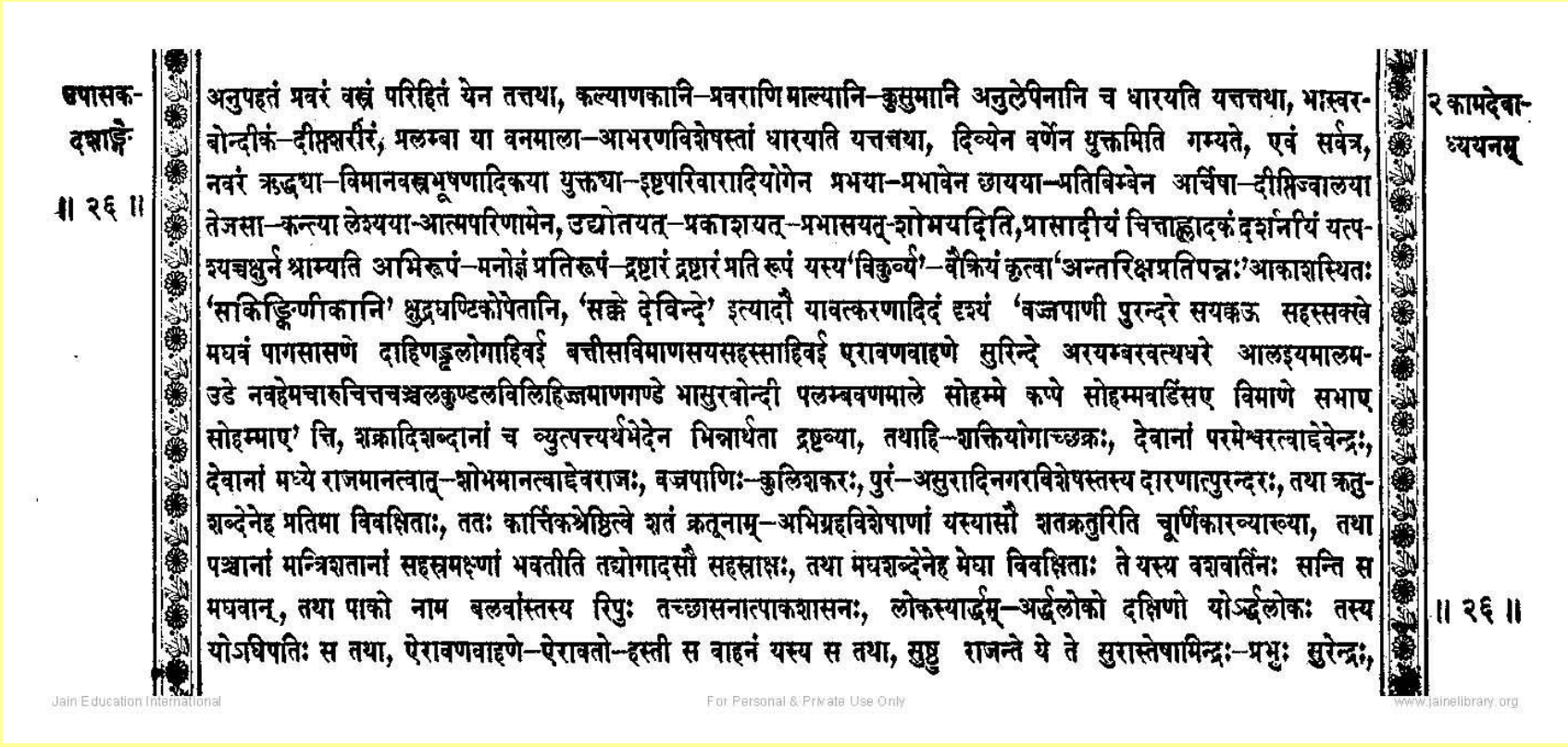

अनुपहतं प्रवरं वस्त्रं परिहितं येन तत्तथा, कल्याणकानि—प्रवराणि माल्यानि—कुसुमानि अनुलेपिनानि च धारयति यत्तत्तथा, भास्वर-बोन्दीकं—दीप्तशरीरं, प्रलम्बा या वनमाला—आभरणविशेषस्तां धारयाति यत्तत्तथा, दिव्येन वर्णेन युक्तमिति गम्यते, एवं सर्वत्र, नवरं ऋद्ध्या—विमानवस्त्रभूषणादिकया युक्तया—इष्टपरिवारादियोगेन प्रभया—प्रभावेन छायया—प्रतिबिम्बेन अर्चिषा—दीप्तिज्वालया तेजसा—कन्त्या लेश्यया-आत्मपरिणामेन, उद्योतयत्—प्रकाशयत्—प्रभासयत्-शोभयदिति, प्रासादीयं चित्ताह्लादकं दर्शनीयं यत्पश्यच्चक्षुर्न श्राम्यति अभिरूपं—मनोज्ञं प्रतिरूपं—द्रष्टारं द्रष्टारं प्रति रूपं यस्य 'विकुर्व्य'—वैक्रियं कृत्वा 'अन्तरिक्षप्रतिपन्नः' आकाशस्थितः 'सकिङ्किणीकानि' क्षुद्रघण्टिकोपेतानि, 'सक्के देविन्दे' इत्यादौ यावत्करणादिदं दृश्यं 'वज्जपाणी पुरन्दरे सयक्कऊ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिन्दे अरयम्बरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचञ्चलकुण्डलविलिहिज्जमाणगण्डे भासुरबोन्दी पलम्बवणमाले सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसए विमाणे सभाए सोहम्माए' त्ति, शक्रादिशब्दानां च व्युत्पत्त्यर्थभेदेन भिन्नार्थता द्रष्टव्या, तथाहि—शक्तियोगाच्छक्रः, देवानां परमेश्वरत्वाद्देवेन्द्रः, देवानां मध्ये राजमानत्वात्—शोभमानत्वाद्देवराजः, वज्रपाणिः—कुलिशकरः, पुरं—असुरादिनगरविशेषस्तस्य दारणात्पुरन्दरः, तथा क्रतुशब्देनेह प्रतिमा विवक्षिताः, ततः कार्त्तिकश्रेष्ठित्वे शतं क्रतूनाम्—अभिग्रहविशेषाणां यस्यासौ शतक्रतुरिति चूर्णिकारव्याख्या, तथा पञ्चानां मन्त्रिशतानां सहस्रमक्ष्णां भवतीति तद्योगादसौ सहस्राक्षः, तथा मघशब्देनेह मेघा विवक्षिताः ते यस्य वशवर्तिनः सन्ति स मघवान्, तथा पाको नाम बलवांस्तस्य रिपुः तच्छासनात्पाकशासनः, लोकस्यार्द्धम्—अर्द्धलोको दक्षिणो योऽर्द्धलोकः तस्य योऽधिपतिः स तथा, ऐरावणवाहणे—ऐरावतो—हस्ती स वाहनं यस्य स तथा, सुष्ठु राजन्ते ये ते सुरास्तेषामिन्द्रः—प्रभुः सुरेन्द्रः,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेवस्य धर्मप्रज्ञप्ति: एवं मायी-मिथ्यादृष्टि: देवकृत: उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [२३]

दीप अनुक्रम [२५]

सुराणां–देवानां वा इंद्रः सुरेंद्रः, पूर्वत्र देवेन्द्रत्वेन प्रतिपादितत्वात्, अन्यथा वा पुनरुक्तपरिहारः कार्यः, अरजांसि–निर्मलानि अम्बरम्–आकाशं तद्वदच्छत्वेन यानि तान्यम्बराणि तानि च वस्त्राणि च २ तानि धारयति यः स तथा, आलगितमालम्–आरोपितस्रग् मुकुटं यस्य स तथा, नवे इव नवे हेम्नः–सुवर्णस्य सम्बन्धिनी चारुणी–शोभने चित्रे–चित्रवती चञ्चले ये कुण्डले ताभ्यां विलिख्यमानौ गण्डौ–कपोलौ यस्य स तथा, शेषं प्रागिवेति, 'सामाणियसाहस्सीण'मिह यावत्करणादिदं दृश्यं 'तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं' ति, तत्र त्रयस्त्रिंशाः–पूज्या महत्तरकल्पाः, चत्वारो लोकपालाः पूर्वादिदिगधिपतयः सोमयमवरुणवैश्रवणाख्याः, अष्टौ अग्रमहिष्यः–प्रधानभार्याः, तत्परिवारः प्रत्येकं पञ्चसहस्राणि, सर्वमीलने चत्वारिंशत्सहस्राणि, तिस्रः परिषदः–अभ्यन्तरा मध्यमा बाह्या च, सप्तानीकानि–पदातिगजाश्वरथवृषभभेदात्पञ्च साङ्ग्रामिकाणि, गन्धर्वानीकं नाट्यानीकं चेति सप्त, अनीकाधिपतयश्च सप्तैव–प्रधानः पत्तिः प्रधानो गज एवमन्येऽपि, आत्मरक्षा–अङ्गरक्षास्तेषां चतस्रः सहस्राणां चतुरशीत्यः। आख्याति–सामान्यतो भाषते विशेषतः, एतदेव प्रज्ञापयति प्ररूपयतीति पदद्वयेन क्रमेणोच्यत इति, 'देवेण वे'त्यादौ यावत्करणादेवं द्रष्टव्यं 'जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किम्पुरिसेण वा महोरगेण वा गन्धव्वेण वा' इति ॥ 'इड्ढी' इत्यादि यावत्करणादिदं दृश्यं 'जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कारपरक्कमे' त्ति॥ 'नाइं भुज्जो करणयाए' न–नैव, आइंतिनिपातो वाक्यालङ्कारे अवधारणे वा, भूयःकरणतायां–पुनराचरणे न प्रवर्त्तिष्ये इति गम्यते ॥ (सू. २३)

तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे कहाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [२६]

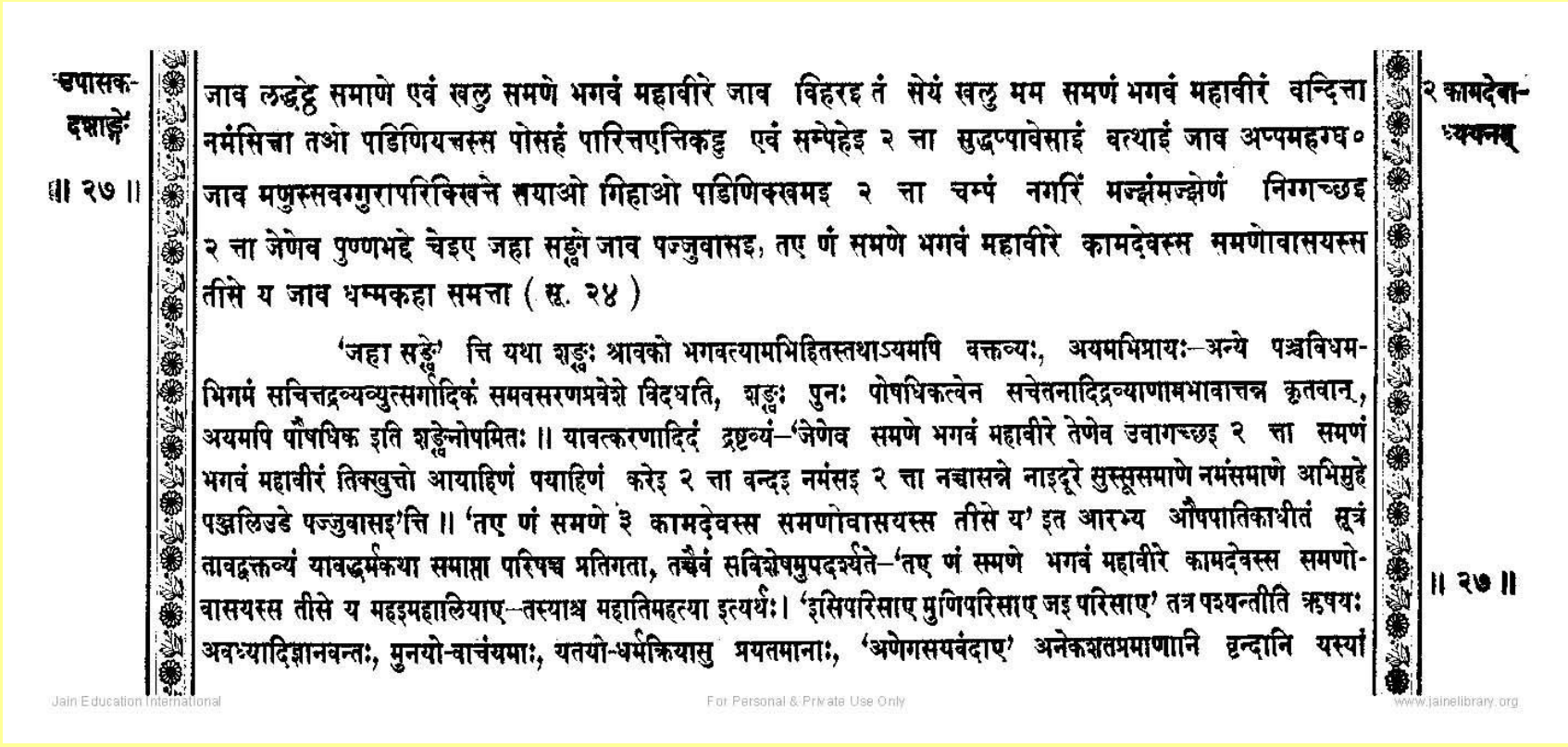

उपासक-दशाङ्गे ॥ २७ ॥

जाव लद्धट्ठे समाणे एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स पोसहं पारित्तएत्तिकट्टु एवं सम्पेहेइ २ त्ता सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव अप्पमहग्घ० जाव मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता चम्पं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा सङ्खे जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य जाव धम्मकहा समत्ता (सू. २४)

‘जहा सङ्खे’ त्ति यथा शङ्खः श्रावको भगवत्यामभिहितस्तथाऽयमपि वक्तव्यः, अयमभिप्रायः—अन्ये पञ्चविधमभिगमं सचित्तद्रव्यव्युत्सर्गादिकं समवसरणप्रवेशे विदधति, शङ्खः पुनः पोषधिकत्वेन सचेतनादिद्रव्याणामभावात्तन्न कृतवान्, अयमपि पौषधिक इति शङ्खेनोपमितः ॥ यावत्करणादिदं द्रष्टव्यं—‘जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वन्दइ नमंसइ २ त्ता नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पञ्जलिउडे पज्जुवासइ’त्ति ॥ ‘तए णं समणे ३ कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य’ इत आरभ्य औपपातिकाधीतं सूत्रं तावद्वक्तव्यं यावद्धर्मकथा समाप्ता परिषच्च प्रतिगता, तच्चैवं सविशेषमुपदर्श्यते—‘तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य महइमहालियाए—तस्याश्च महातिमहत्या इत्यर्थः। ‘इसिपरिसाए मुणिपरिसाए जइ परिसाए’ तत्र पश्यन्तीति ऋषयः अवध्यादिज्ञानवन्तः, मुनयो-वाचंयमाः, यतयो-धर्मक्रियासु प्रयतमानाः, ‘अणेगसयवंदाए’ अनेकशतप्रमाणानि वृन्दानि यस्यां

२ कामदेवाध्ययनम् ॥ २७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकारः

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [२६]

सा तथा 'अणेगसयवन्दपरिवाराए' अनेकशतप्रमाणानि यानि वृन्दानि तानि वृन्दानि परिवारो यस्य । सा तथा, तस्याः धर्मं परिकथयतीति सम्बन्धः,किम्भूतो भगवान् ?–'ओहबले अइब्बले महब्बले' ओघबलः–अव्यवच्छिन्नबलः अतिबलः–अतिक्रान्ताशेष-पुरुषामरतिर्यग्बलः, महाबलः–अप्रमितबलः, एतदेव प्रपञ्च्यते–'अपरिमियबलविरियतेयमाहप्पकंतिजुत्ते' अपरिमितानि यानि-बलादीनि तैर्युक्तो यः स तथा, तत्र बलं-शारीरः प्राणः वीर्यं-जीवप्रभवः तेजो-दीप्तिः माहात्म्यं-महानुभावता कान्तिः-काम्यता 'सारयनवमेहथणियमहुरनिग्घोसदुन्दुभिसरे' शरत्कालप्रभवाभिनवमेघशब्दवन्मधुरो निर्घोषो यस्य दुन्दुभेरिव च स्वरो यस्य स तथा, 'उरेवित्थडाए' उरसि विस्तृतया उरसो विस्तीर्णत्वात् सरस्वत्येति सम्बन्धः, 'कण्ठे पवट्टियाए' गलविवरस्य वर्तुलत्वात् , 'सिरे सङ्किण्णाए' मूर्धनि सङ्कीर्णया, आयामस्य मूर्ध्ना स्खलितत्वात् , 'अगरलाए' व्यक्तवर्णयेत्यर्थः, 'अमम्मणाए' अनवरखश्रूय-मानयेत्यर्थः, 'सव्वक्खरसन्निवाइयाए' सर्वाक्षरसंयोगवत्या 'पुण्णरत्ताए' परिपूर्णमधुरया 'सव्वभासाणुगामिणीए' सरस्सईए-भणित्या 'जोयणनीहारिणा सरेणं' योजनातिक्रामिणा शब्देन, ' अद्धमागहाए भासाए भासइ अरहा धम्मं परिकहेइ, ' अर्धमागधी भाषा यस्यां 'रसोर्लशौ मागध्या'मित्यादिकं मागधभाषालक्षणं परिपूर्णं नास्ति, भाषते सामान्येन भणति, किंविधो भगवान्?-अर्हन्-पूजितो पूजोचितः, अरहस्यो वा सर्वज्ञत्वात् , कं ? 'धर्म्मं' श्रद्धेयज्ञेयानुष्ठेयवस्तुश्रद्धानज्ञानानुष्ठानरूपं । तथा परिकथयति अशेष-विशेषकथनेनेति । तथा 'तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्ममाइक्खइ' न केवलं ऋषिपर्षदादीनां, ये वन्दनाद्यर्थ-मागतास्तेषां च सर्वेषामार्याणाम्-आर्यदेशोत्पन्नानामनार्याणां-म्लेच्छानामग्लान्या-अखेदेनेति ॥ 'साऽवि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो भासाए परिणामेणं परिणमइ'स्वभाषापरिणामेनेत्यर्थः,धर्मकथामेव दर्शयति–'अत्थि लोए अत्थि अलोए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकार:

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [२६]

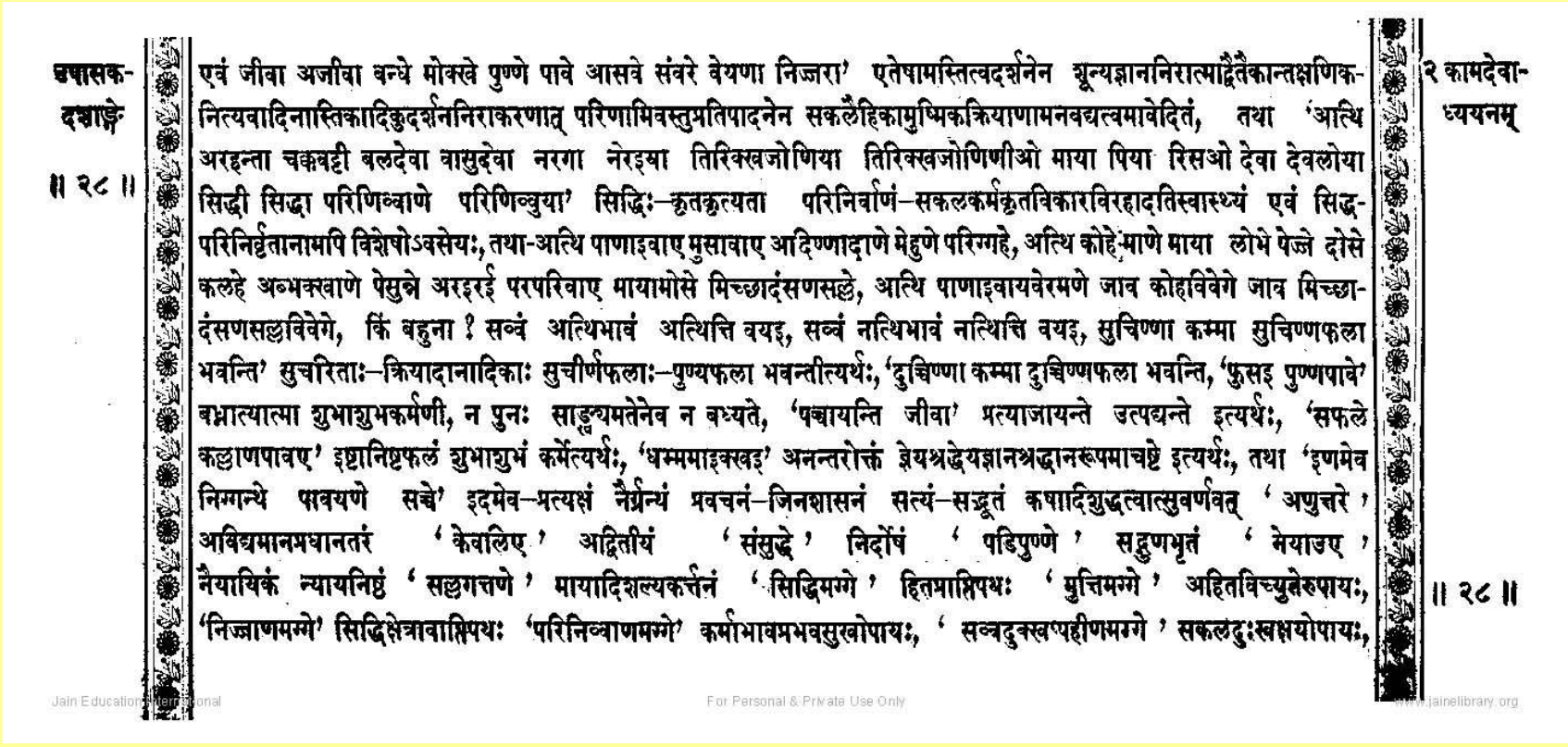

उपासक-दशाङ्गे ॥ २८ ॥

२ कामदेवा-ध्ययनम्

एवं जीवा अजीवा बन्धे मोक्खे पुण्णे पावे आसवे संवरे वेयणा निज्जरा' एतेषामस्तित्वदर्शनेन शून्यज्ञाननिरात्माद्वैतैकान्तक्षणिक-नित्यवादिनास्तिकादिकुदर्शननिराकरणात् परिणामिवस्तुप्रतिपादनेन सकलैहिकामुष्मिकक्रियाणामनवद्यत्वमावेदितं, तथा 'अत्थि अरहन्ता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा नरगा नेरइया तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ माया पिया रिसओ देवा देवलोया सिद्धी सिद्धा परिणिव्वाणे परिणिव्वुया' सिद्धिः—कृतकृत्यता परिनिर्वाणं—सकलकर्मकृतविकारविरहादतिस्वास्थ्यं एवं सिद्ध-परिनिर्वृतानामपि विशेषोऽवसेयः, तथा-अत्थि पाणाइवाए मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे, अत्थि कोहे माणे माया लोभे पेज्जे दोसे कलहे अब्भक्खाणे पेसुन्ने अरइरई परपरिवाए मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले, अत्थि पाणाइवायवेरमणे जाव कोहविवेगे जाव मिच्छा-दंसणसल्लविवेगे, किं बहुना ? सव्वं अत्थिभावं अत्थित्ति वयइ, सव्वं नत्थिभावं नत्थित्ति वयइ, सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णफला भवन्ति' सुचरिताः—क्रियादानादिकाः सुचीर्णफलाः—पुण्यफला भवन्तीत्यर्थः, 'दुच्चिण्णा कम्मा दुच्चिण्णफला भवन्ति, 'फुसइ पुण्णपावे' बध्नात्यात्मा शुभाशुभकर्मणी, न पुनः साङ्ख्यमतेनेव न बध्यते, 'पच्चायन्ति जीवा' प्रत्याजायन्ते उत्पद्यन्ते इत्यर्थः, 'सफले कल्लाणपावए' इष्टानिष्टफलं शुभाशुभं कर्मेत्यर्थः, 'धम्ममाइक्खइ' अनन्तरोक्तं ज्ञेयश्रद्धेयज्ञानश्रद्धानरूपमाचष्टे इत्यर्थः, तथा 'इणमेव निग्गन्थे पावयणे सच्चे' इदमेव—प्रत्यक्षं नैर्ग्रन्थं प्रवचनं—जिनशासनं सत्यं—सद्भूतं कषादिशुद्धत्वात्सुवर्णवत् 'अणुत्तरे' अविद्यमानप्रधानतरं 'केवलिए' अद्वितीयं 'संसुद्धे' निर्दोषं 'पडिपुण्णे' सद्गुणभृतं 'नेयाउए' नैयायिकं न्यायनिष्ठं 'सल्लगत्तणे' मायादिशल्यकर्त्तनं 'सिद्धिमग्गे' हितप्राप्तिपथः 'मुत्तिमग्गे' अहितविच्युतेरुपायः, 'निज्जाणमग्गे' सिद्धिक्षेत्रावाप्तिपथः 'परिनिव्वाणमग्गे' कर्माभावप्रभवसुखोपायः, 'सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे' सकलदुःखक्षयोपायः,

॥ २८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकार:

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [२६]

इदमेव प्रवचनं फलतः प्ररूपयति—'इत्थं ठिया जीवा सिज्झंति निष्ठितार्थतया बुज्झन्ति केवलितया मुच्चन्ति—कर्मभिः परिणिव्वायन्ति-स्वथीभवन्ति, किमुक्तं भवति ?—सव्वदुक्खाणमन्तं करेन्ति, एगच्चा पुण एगे भयन्तारो, एकार्च्या—अद्वितीयपूज्याः संयमानुष्ठाने वा असदृशी अर्चा—शरीरं येषां ते एकार्चाः, ते पुनरेके केचन ये न सिध्यन्ति ते भक्तारो—निर्ग्रन्थप्रवचनसेवका भदन्ता वा—भट्टारका भयत्रातारो वा, 'पुव्वकम्मावसेसेणं अन्नतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवन्ति महिड्डिएसु महज्जुइएसु महाजसेसु महाबलेसु महाणुभावेसु महासुक्खेसु दूरङ्गइएसु चिरट्ठिइएसु, ते णं तत्थ देवा भवन्ति महिड्ढिया जाव चिरट्ठिइया हारविराइयवच्छा कडगतुडियथम्भियभुया अङ्गन्दकुण्डलमट्ठगण्डतलकण्णपीढधारा विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलीमउडा—विदीप्तानि विचित्राणि वा 'मउली'त्ति मुकुटविशेषः कल्लाणपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोन्दी पलम्बवणमालाधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गन्धेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं सङ्घयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्डीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दस दिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा गइकल्लाणा ठिइकल्लाणा आगमेसिभद्दा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, तमाइक्खइ' यदेतत् धर्मफलं तदाख्याति, तथा 'एवं खलु चउहिं ठाणेहिं जीवा नेरइयत्ताए कम्मं पकरेन्ति, 'एव'मिति वक्ष्यमाणप्रकारेणेति, नेरइयत्ताए कम्मं पकरेत्ता नेरइएसु उववज्जन्ति, तंजहा—महारम्भयाए महापरिग्गहयाए पञ्चेन्दियवहेणं कुणिमाहारेणं' 'कुणिमं' ति मांसं, एवं च एएणं अभिलावेणं तिरिक्खजोणिएसु माइल्लयाए अलियवयणेणं उक्कञ्चणयाए वञ्चणयाए, तत्र माया—वञ्चनबुद्धिः उत्कञ्चनं—मुग्धवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपवर्तिविदग्धचित्तरक्षणार्थं क्षणमव्यापारतया अवस्थानं, वञ्चनं—प्रतारणं ॥ मणूसेसु पगइभद्दयाए पगइविणीययाए साणुक्कोसयाए अमच्छरियाए, प्रकृतिभद्र-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकार:

प्रत सूत्रांक [२४] दीप अनुक्रम [२६]

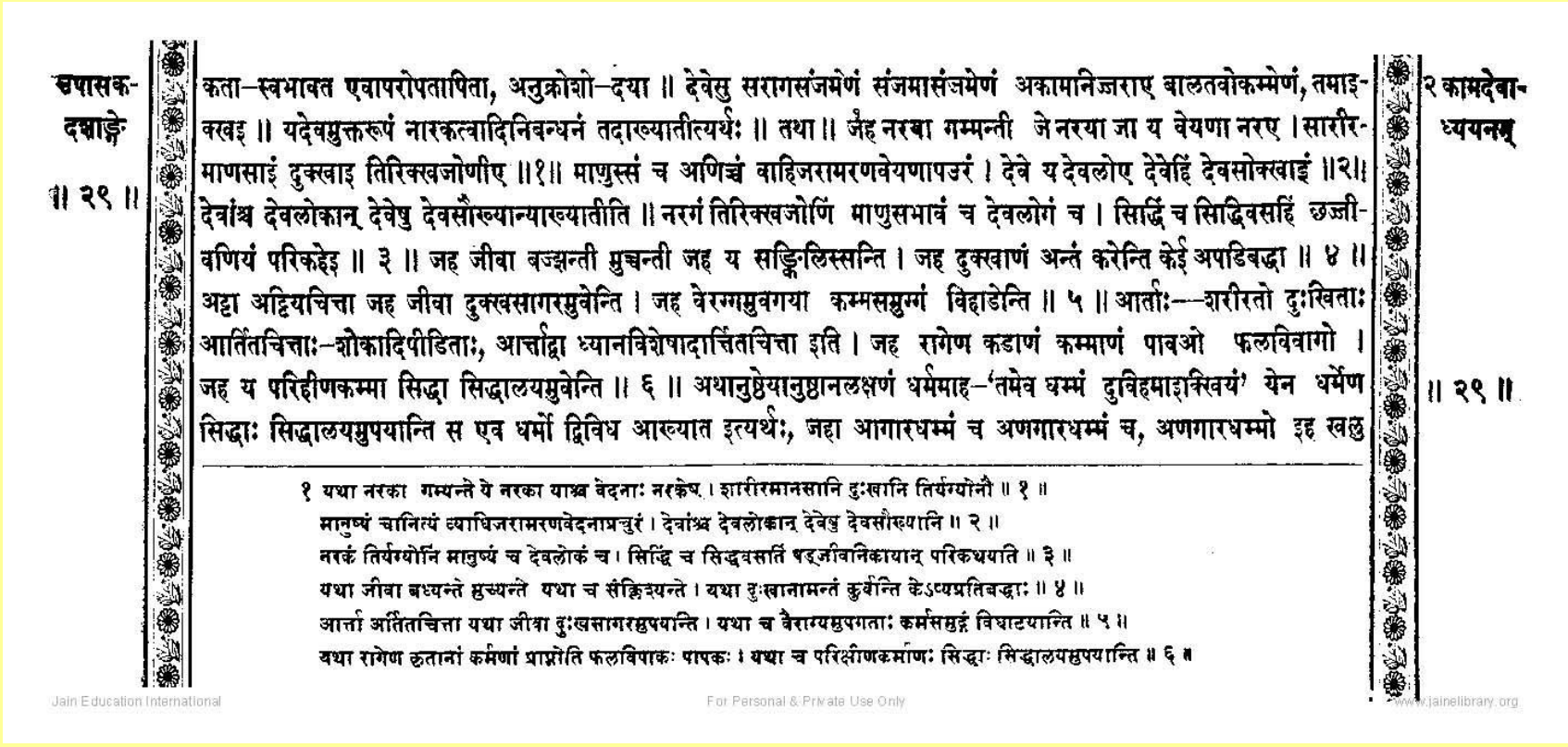

उपासकदशाङ्गे ॥ २९ ॥

२ कामदेवाध्ययनम्

कता—स्वभावत एवापरोपतापिता, अनुक्रोशो—दया ॥ देवेसु सरागसंजमेणं संजमासंजमेणं अकामनिज्जराए बालतवोकम्मेणं, तमाइक्खइ ॥ यदेवमुक्तरूपं नारकत्वादिनिबन्धनं तदाख्यातीत्यर्थः ॥ तथा ॥ जह नरवा गम्मन्ती जे नरया जा य वेयणा नरए । सारीरमाणसाइं दुक्खाइ तिरिक्खजोणीए ॥१॥ माणुस्सं च अणिच्चं वाहिजरामरणवेयणापउरं । देवे य देवलोए देवेहिं देवसोक्खाइं ॥२॥ देवांश्च देवलोकान् देवेषु देवसौख्यान्याख्यातीति ॥ नरगं तिरिक्खजोणिं माणुसभावं च देवलोगं च । सिद्धिं च सिद्धिवसहिं छज्जीवणियं परिकहेइ ॥ ३ ॥ जह जीवा बज्झन्ती मुच्चन्ती जह य सङ्किलिस्सन्ति । जह दुक्खाणं अन्तं करेन्ति केई अपडिबद्धा ॥ ४ ॥ अट्टा अट्टियचित्ता जह जीवा दुक्खसागरमुवेन्ति । जह वेरग्गमुवगया कम्मसमुग्गं विहाडेन्ति ॥ ५ ॥ आर्त्ताः—शरीरतो दुःखिताः आर्तितचित्ताः—शोकादिपीडिताः, आर्त्ताद्वा ध्यानविशेषादार्त्तितचित्ता इति । जह रागेण कडाणं कम्माणं पावओ फलविवागो । जह य परिहीणकम्मा सिद्धा सिद्धालयमुवेन्ति ॥ ६ ॥ अथानुष्ठेयानुष्ठानलक्षणं धर्ममाह—‘तमेव धम्मं दुविहमाइक्खियं’ येन धर्मेण सिद्धाः सिद्धालयमुपयान्ति स एव धर्मो द्विविध आख्यात इत्यर्थः, जहा आगारधम्मं च अणगारधम्मं च, अणगारधम्मो इह खलु

॥ २९ ॥

१ यथा नरका गम्यन्ते ये नरका याश्च वेदनाः नरकेषु । शारीरमानसानि दुःखानि तिर्यग्योनौ ॥ १ ॥
मानुष्यं चानित्यं व्याधिजरामरणवेदनाप्रचुरं । देवांश्च देवलोकान् देवेषु देवसौख्यानि ॥ २ ॥
नरकं तिर्यग्योनिं मानुष्यं च देवलोकं च । सिद्धिं च सिद्धवसतिं षड्जीवनिकायान् परिकथयति ॥ ३ ॥
यथा जीवा बध्यन्ते मुच्यन्ते यथा च संक्लिश्यन्ते । यथा दुःखानामन्तं कुर्वन्ति केऽप्यप्रतिबद्धाः ॥ ४ ॥
आर्त्ता आर्तितचित्ता यथा जीवा दुःखसागरमुपयान्ति । यथा च वैराग्यमुपगताः कर्मसमुद्गं विघाटयन्ति ॥ ५ ॥
यथा रागेण कृतानां कर्मणां प्राप्नोति फलविपाकः पापकः । यथा च परिक्षीणकर्माणः सिद्धाः सिद्धालयमुपयान्ति ॥ ६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकार:

प्रत
सूत्रांक
[२४]

दीप
अनुक्रम
[२६]

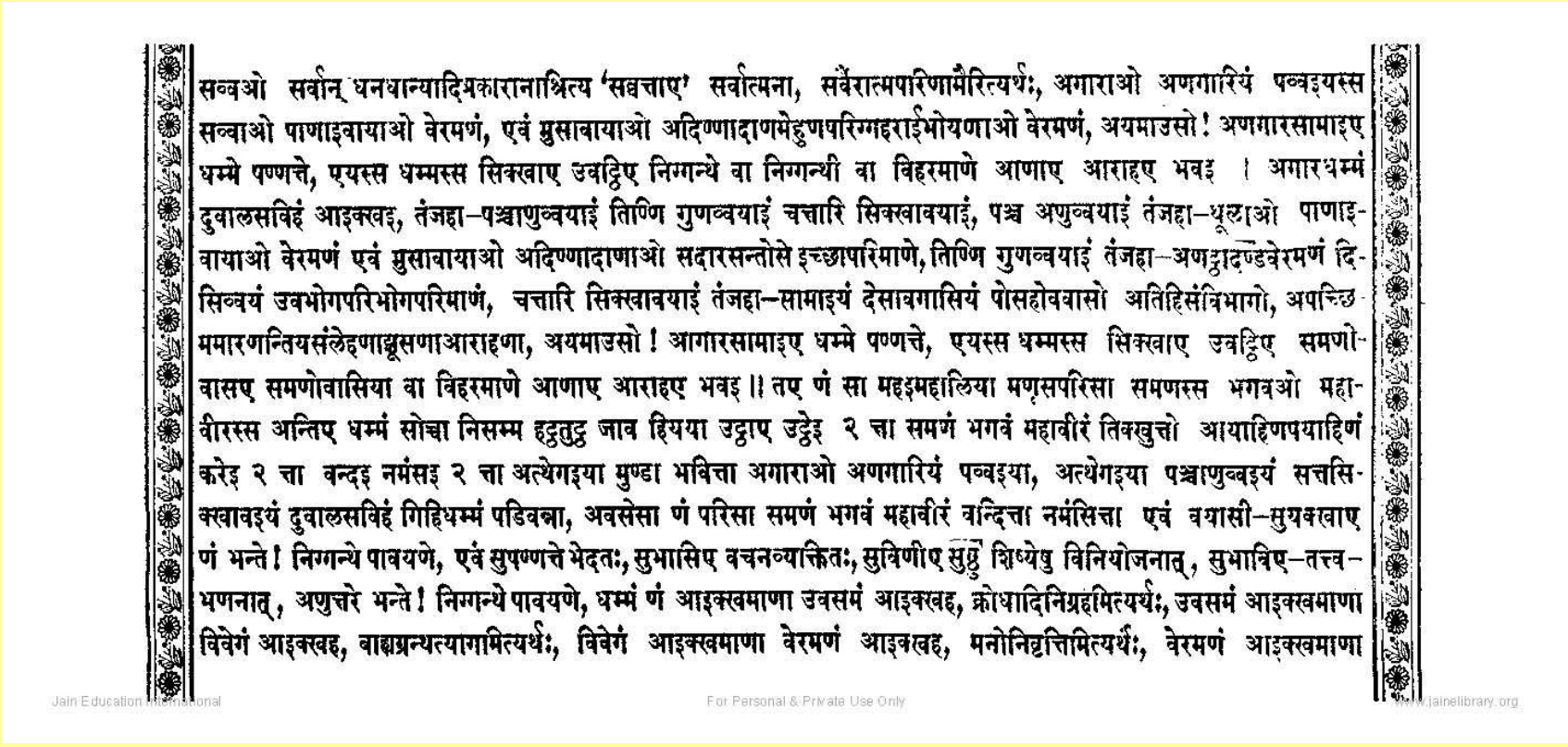

सव्वओ सर्वान् धनधान्यादिप्रकारानाश्रित्य 'सव्वत्ताए' सर्वात्मना, सर्वैरात्मपरिणामैरित्यर्थः, अगाराओ अणगारियं पव्वइयस्स सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, एवं मुसावायाओ अदिण्णादाणमेहुणपरिग्गहराईभोयणाओ वेरमणं, अयमाउसो! अणगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गन्थे वा निग्गन्थी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ । अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ, तंजहा—पञ्चाणुव्वयाइं तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं, पञ्च अणुव्वयाइं तंजहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं एवं मुसावायाओ अदिण्णादाणाओ सदारसन्तोसे इच्छापरिमाणे, तिण्णि गुणव्वयाइं तंजहा—अणट्ठादण्डवेरमणं दिसिव्वयं उवभोगपरिभोगपरिमाणं, चत्तारि सिक्खावयाइं तंजहा—सामाइयं देसावगासियं पोसहोववासो अतिहिसंविभागो, अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाआराहणा, अयमाउसो! आगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ ॥ तए णं सा महइमहालिया मणूसपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वन्दइ नमंसइ २ त्ता अत्थेगइया मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया, अत्थेगइया पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवन्ना, अवसेसा णं परिसा समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सुयक्खाए णं भन्ते! निग्गन्थे पावयणे, एवं सुपण्णत्ते भेदतः, सुभासिए वचनव्यक्तितः, सुविणीए सुट्ठु शिष्येषु विनियोजनात्, सुभाविए—तत्त्वभणनात्, अणुत्तरे भन्ते! निग्गन्थे पावयणे, धम्मं णं आइक्खमाणा उवसमं आइक्खइ, क्रोधादिनिग्रहमित्यर्थः, उवसमं आइक्खमाणा विवेगं आइक्खइ, बाह्यग्रन्थत्यागमित्यर्थः, विवेगं आइक्खमाणा वेरमणं आइक्खइ, मनोनिवृत्तिमित्यर्थः, वेरमणं आइक्खमाणा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कामदेव श्रमणोपासकस्य धर्मश्रवण यावत् धर्मप्रज्ञप्तिस्वीकारः

प्रत सूत्रांक [२४]

दीप अनुक्रम [२६]

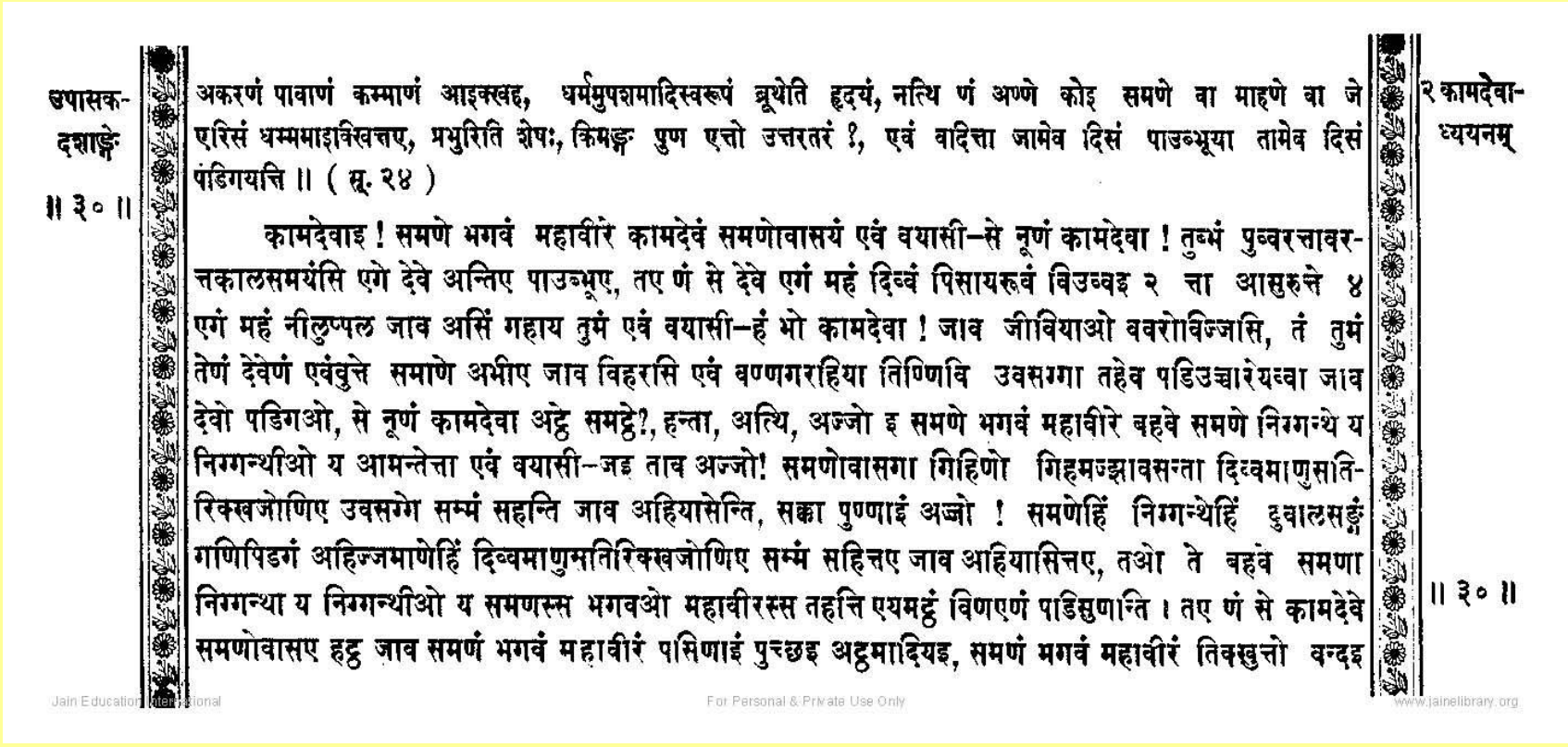

अकरणं पावाणं कम्माणं आइक्खइ, धर्ममुपशमादिस्वरूपं ब्रूयेति हृदयं, नत्थि णं अण्णे कोइ समणे वा माहणे वा जे एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, प्रभुरिति शेषः, किमङ्ग पुण एत्तो उत्तरतरं ?, एवं वदित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगयत्ति ॥ (सू. २४)

कामदेवाइ ! समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी—से नूणं कामदेवा ! तुब्भं पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तिए पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ २ त्ता आसुरुत्ते ४ एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय तुमं एवं वयासी—हं भो कामदेवा ! जाव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं तुमं तेणं देवेणं एवंवुत्ते समाणे अभीए जाव विहरसि एवं वण्णगरहिया तिण्णिवि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ, से नूणं कामदेवा अट्ठे समट्ठे?, हन्ता, अत्थि, अज्जो इ समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता एवं वयासी—जइ ताव अज्जो! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसन्ता दिव्वमाणुसातिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहन्ति जाव अहियासेन्ति, सक्का पुण्णाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए, तओ ते बहवे समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति । तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवंत-महावीरेण कृत कामदेवश्रावकस्य द्रढत्वस्य प्रसंशा

नमंसइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ चम्पाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ (सू. २५)

'अट्ठे समट्ठे' त्ति अस्त्येषोऽर्थ इत्यर्थः, अथवा अर्थः—प्रयोदितं वस्तु समर्थः—सङ्गतः, हन्ता इति कोमलामन्त्रणवचनं, 'अज्जो' त्ति आर्या इत्येवमामन्त्र्यैवमवादीदिति, 'सहन्ति'त्ति यावत्करणादिदं दृश्यं—खमन्ति तितिक्खन्ति, एकार्थाश्चैते, विशेषव्याख्यानमप्येषामस्ति तदन्यतोऽवसेयमिति ॥ (सू. २५)

तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ, तए णं से कामदेव समणोवासए बहूहिं जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता कामदेवस्सऽवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भन्ते ! कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । निक्खेवो (सू. २६)

६

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित.....आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [२८]

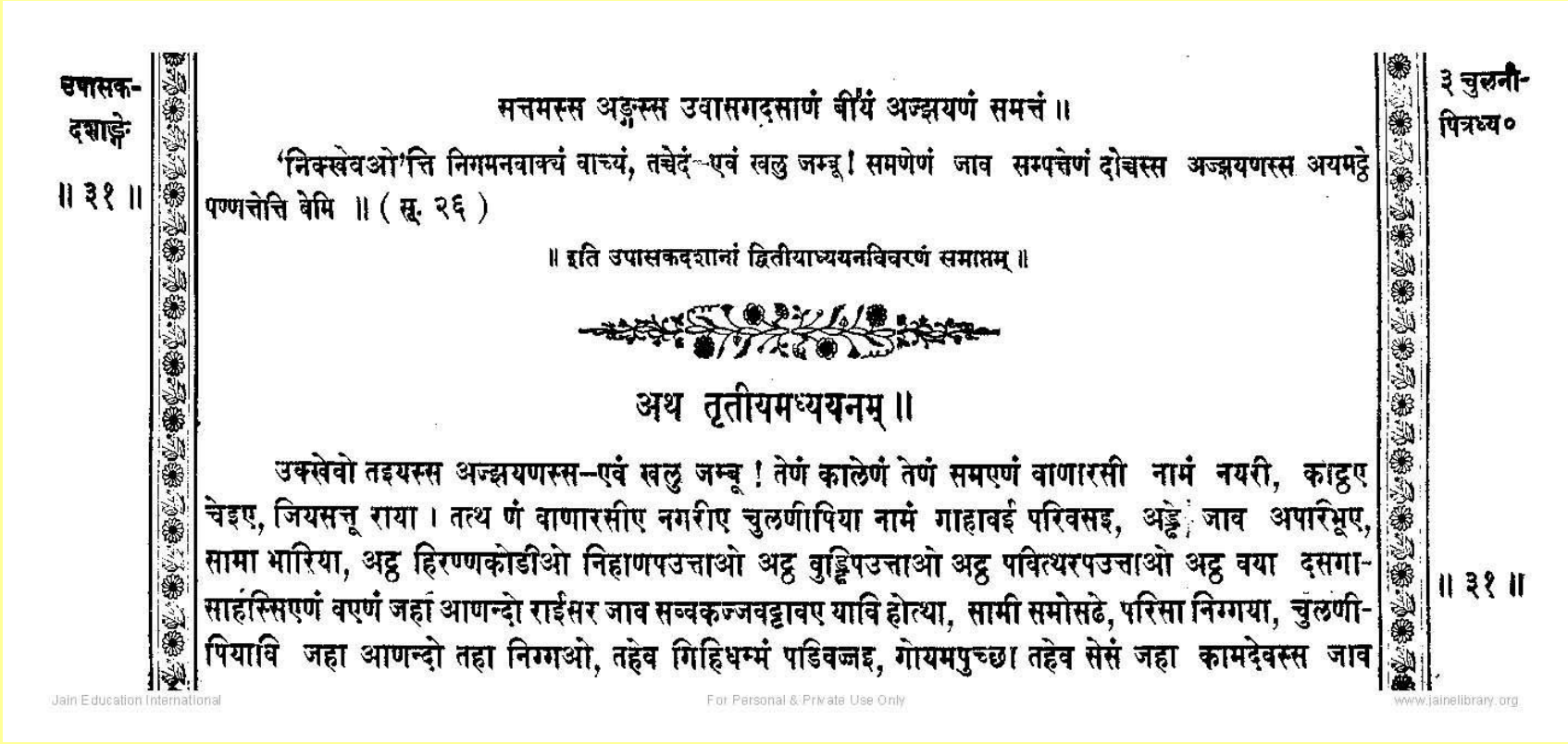

उपासक-दशाङ्गे ॥ ३१ ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं बीयं अज्झयणं समत्तं ॥

'निक्खेवओ'त्ति निगमनवाक्यं वाच्यं, तच्चेदं–एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव सम्पत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि ॥ (सू. २६)

॥ इति उपासकदशानां द्वितीयाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥

अथ तृतीयमध्ययनम् ॥

उक्खेवो तइयस्स अज्झयणस्स–एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, कोट्ठए चेइए, जियसत्तू राया । तत्थ णं वाणारसीए नगरीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए, सामा भारिया, अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगा-साहस्सिएणं वएणं जहा आणन्दो राईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, चुलणी-पियावि जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, गोयमपुच्छा तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव

३ चुलनी-पित्रध्य० ॥ ३१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र द्वितीयं अध्ययनं परिसमाप्तं

अथ तृतीय, अध्ययनं "चुलनीपिता" आरभ्यते [चुल्लशतक-श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२९]

पासहसालाए पोसहिए बम्भचारी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ (सू. २७)

अथ तृतीयं व्याख्यायते, तच्च सुगममेव, नवरं 'उक्खेवो' त्ति उपक्षेपः—उपोद्घातः तृतीयाध्ययनस्य वाच्यः, स चायम्— जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया जाव सम्पत्तेणं उवासगदसाणं दोच्चस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तच्चस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? इति, कण्ठ्यश्चायम् ॥ तथा क्वचित्कोष्ठकं चैत्यमधीतं क्वचिन्महाकामवनमिति, श्यामा नाम भार्या (सू. २७)

तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए तए णं से देवे एगं नीलुप्पल जाव असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया ! समणोवासया जहा कामदेवो जाव न भज्जसि तो ते अहं अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाएमि २ त्ता तओ मंससोल्ले करेमि २ त्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ त्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता दोच्चंपि तच्चंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! तं चेव भणइ, सो जाव विहरइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणो·

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुलनीपिता एवं देवकृत-उपसर्गः

प्रत
सूत्रांक
[२८-२९]

दीप
अनुक्रम
[३०-३१]

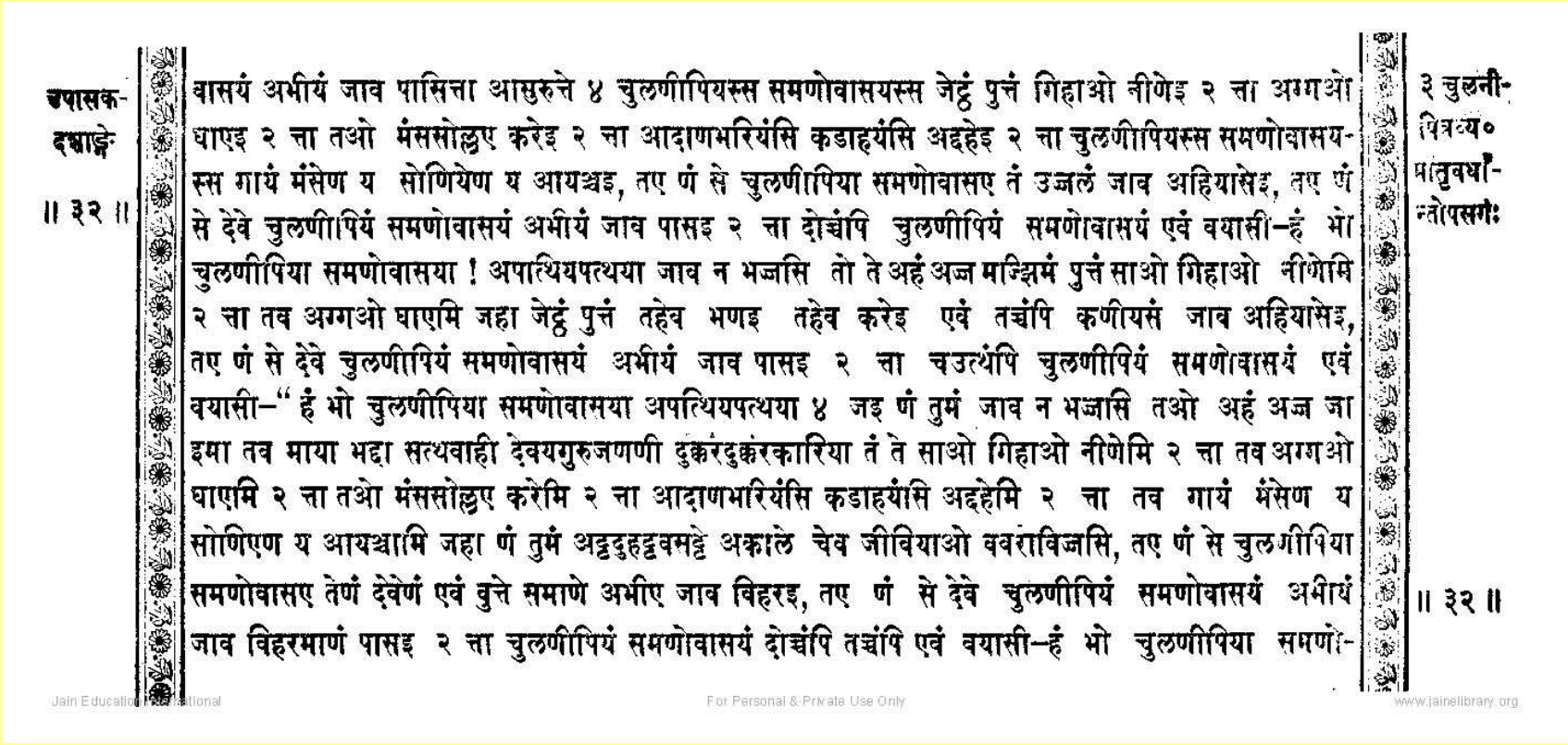

उपासक-
दशाङ्गे

॥ ३२ ॥

वासयं अभीयं जाव पासित्ता आसुरुत्ते ४ चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठं पुत्तं गिहाओ नीणेइ २ त्ता अग्गओ घाएइ २ त्ता तओ मंससोल्लए करेइ २ त्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ २ त्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणियेण य आयञ्चइ, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता दोच्चंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया! अपत्थियपत्थया जाव न भञ्जसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाएमि जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ तहेव करेइ एवं तच्चंपि कणीयसं जाव अहियासेइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ २ त्ता चउत्थंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–"हं भो चुलणीपिया समणोवासया अपत्थियपत्थया ४ जइ णं तुमं जाव न भञ्जसि तओ अहं अज्ज जा इमा तव माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाएमि २ त्ता तओ मंससोल्लए करेमि २ त्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ त्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता चुलणीपियं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणो-

३ चुलनी-
पितृव्य०
मातृवधा-
न्तोपसर्गः

॥ ३२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुलनीपिता एवं देवकृत-उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [२८-२९]

दीप अनुक्रम [३०-३१]

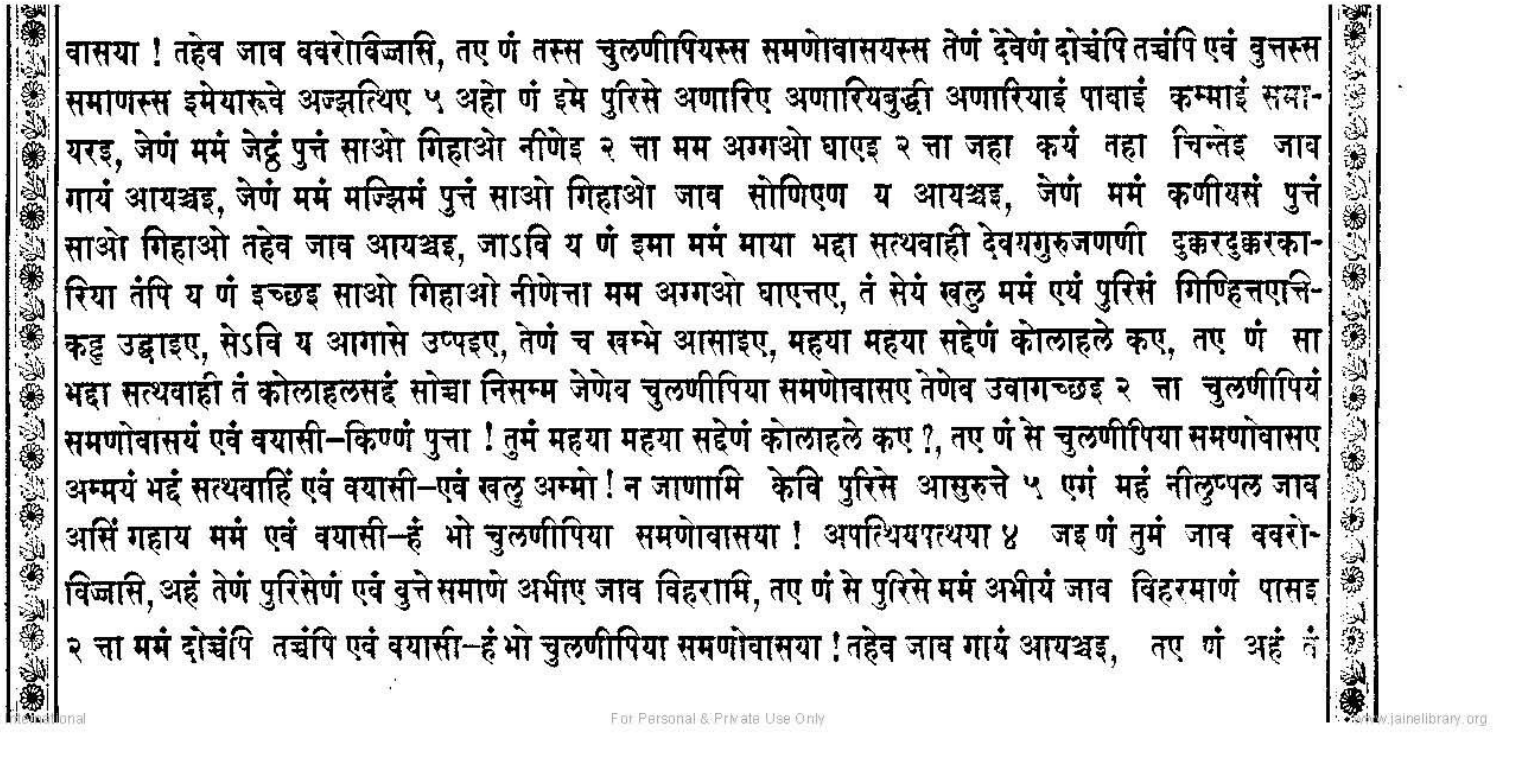

वासया ! तहेव जाव ववरोविज्जासि, तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समा-यरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ २ त्ता मम अग्गओ घाएइ २ त्ता जहा कयं तहा चिन्तेइ जाव गायं आयञ्चइ, जेणं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ जाव सोणिएण य आयञ्चइ, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आयञ्चइ, जाऽवि य णं इमा ममं माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करका-रिया तंपि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्ति-कट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए, तेणं च खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए, तए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोच्चा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी—किण्णं पुत्ता ! तुमं महया महया सद्देणं कोलाहले कए ?, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी—एवं खलु अम्मो ! न जाणामि केवि पुरिसे आसुरुत्ते ५ एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय ममं एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ४ जइ णं तुमं जाव ववरो-विज्जासि, अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि, तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ २ त्ता ममं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! तहेव जाव गायं आयञ्चइ, तए णं अहं तं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुलनीपिता एवं देवकृत-उपसर्गः

प्रत सूत्रांक [२८-२९]

दीप अनुक्रम [३०-३१]

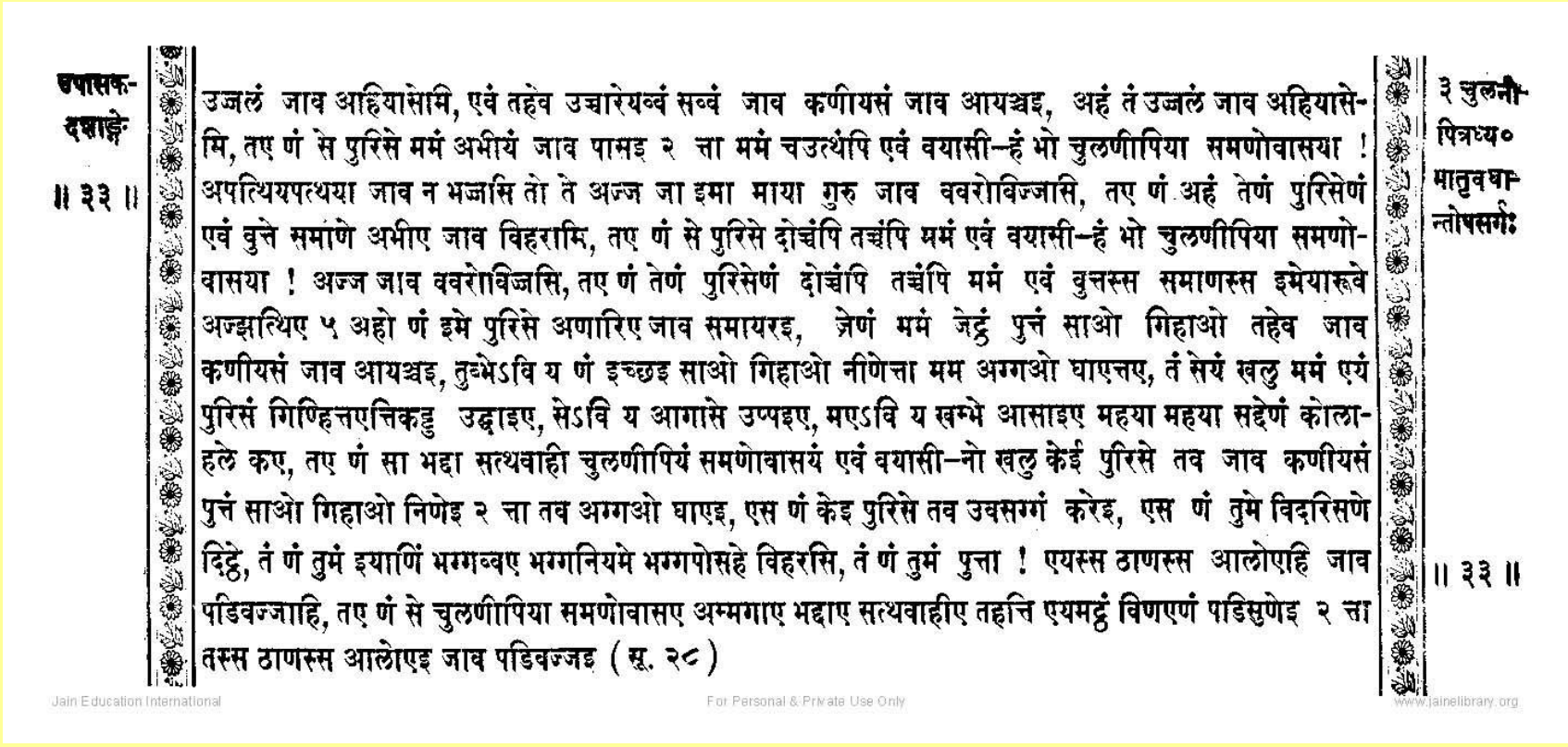

उपासक-दशाङ्गे ॥ ३३ ॥

उज्जलं जाव अहियासेमि, एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि, तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव पासइ २ त्ता ममं चउत्थंपि एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया जाव न भज्जसि तो ते अज्ज जा इमा माया गुरु जाव ववरोविज्जासि, तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि, तए णं से पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अज्ज जाव ववरोविज्जसि, तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, तुब्भेऽवि य णं इच्छह साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्तिकट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए, मएऽवि य खम्भे आसाइए महया महया सद्देणं कोलाहले कए, तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–नो खलु केई पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ निणेइ २ त्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि, तं णं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ (सू. २८)

३ चुलनीपित्रध्य० मातृवधान्तोपसर्गः

॥ ३३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चुलनीपिता एवं देवकृत-उपसर्ग:

प्रत
सूत्रांक
[२८-२९]

दीप
अनुक्रम
[३०-३१]

तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं जहा आणन्दो जाव एक्कारसवि, तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं उरालेणं जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरच्छिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो (सू. २९)

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

'तओ मंससोल्ले' त्ति त्रीणि मांसशूल्यकानि शूले पच्यन्ते इति शूल्यानि, त्रीणि मांसखण्डानीत्यर्थः, 'आदाणभरियंसि' त्ति आदाणम्—आद्रहणं यदुदकतैलादिकमन्यतरद्रव्यपाकायाग्नावुत्ताप्यते तद्भृते, 'कडाहंसि'त्ति कटाहे—लोहमयभाजनविशेषे, आद्रहयामि—उत्काथयामि 'आयञ्चामि' त्ति आसिञ्चामि ॥ 'एस णं तए विदरिसणे दिट्ठे' त्ति एतच्च त्वया विदर्शनं—विरूपाकारं विभीषिकादि दृष्टम्—अवलोकितमिति, 'भग्गवए' त्ति भग्नव्रतः, स्थूलप्राणातिपातविरतेर्भावतो भग्नत्वात्, तद्विनाशार्थं कोपेनोद्धावनात् सापराधस्यापि व्रताविषयीकृतत्वात्, 'भग्ननियमः' कोपोदयेनोत्तरगुणस्य क्रोधाभिग्रहरूपस्य भग्नत्वात्, 'भग्नपोषधः' अव्यापारपौषधभङ्गत्वात्, 'एयस्स' त्ति द्वितीयार्थत्वात् षष्ठ्याः, एतमर्थमालोचय—गुरुभ्यो निवेदय, यावत्करणात् पडिक्कमाहि—निवर्त्तस्व, निन्दाहि—आत्मसाक्षिकां कुत्सां कुरु, गरिहाहि—गुरुसाक्षिकां कुत्सां विधेहि, विउट्टाहि—वित्रोटय तद्भावानुबन्धच्छेदं विधेहि, विसोहेहि—अतिचारमलक्षालनेन अकरणयाए अब्भुट्ठेहि—तदकरणाभ्युपगमं कुरु, ' अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२८-२९]

दीप अनुक्रम [३०-३१]

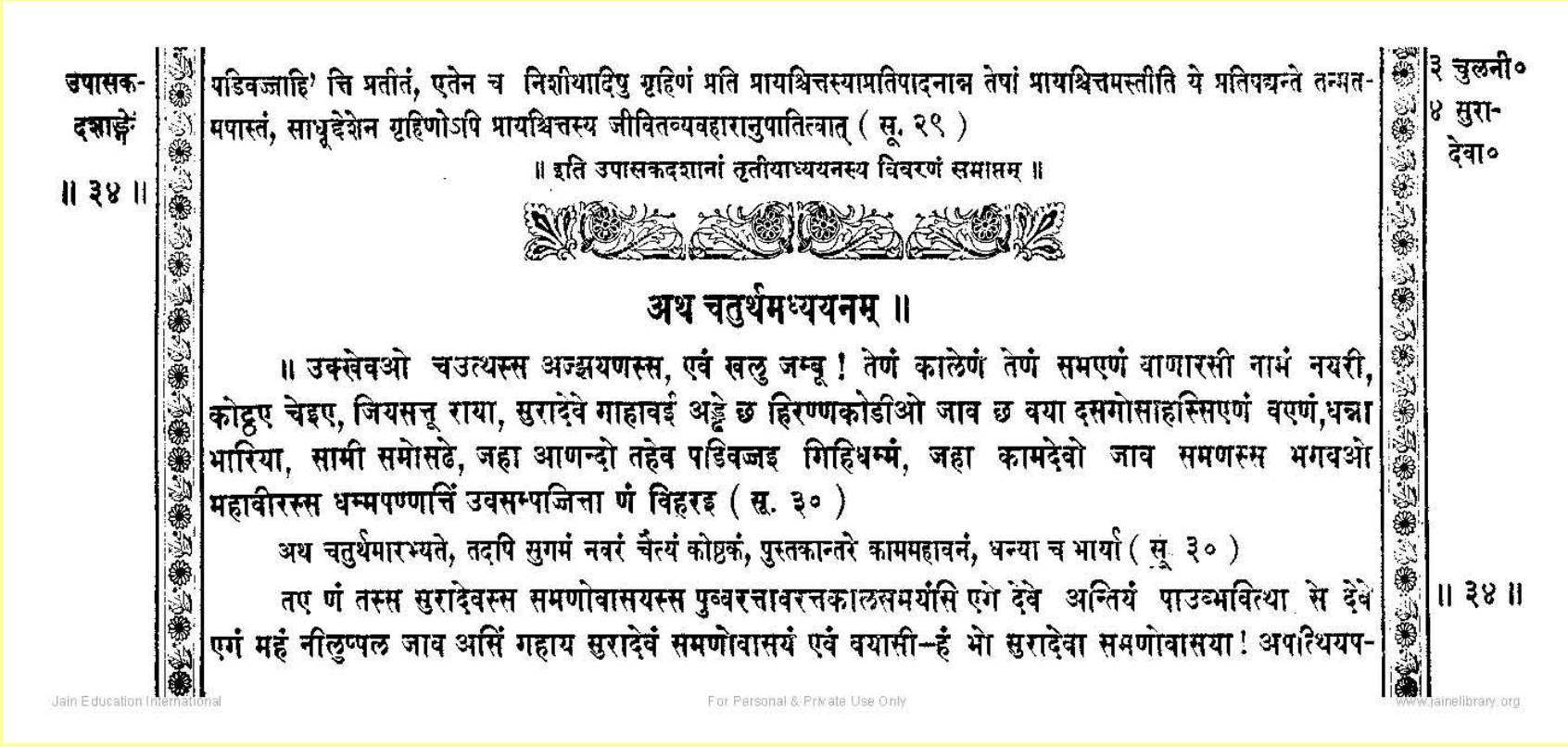

उपासकदशाङ्गे ॥ ३४ ॥

पडिवज्जाहि' त्ति प्रतीतं, एतेन च निशीथादिषु गृहिणं प्रति प्रायश्चित्तस्याप्रतिपादनान्न तेषां प्रायश्चित्तमस्तीति ये प्रतिपद्यन्ते तन्मतमपास्तं, साधूद्देशेन गृहिणोऽपि प्रायश्चित्तस्य जीवितव्यवहारानुपातित्वात् (सू. २९)

॥ इति उपासकदशानां तृतीयाध्ययनस्य विवरणं समाप्तम् ॥

३ चुलनी० ४ सुरादेवा०

अथ चतुर्थमध्ययनम् ॥

॥ उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, कोट्ठए चेइए, जियसत्तू राया, सुरादेवे गाहावई अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं, धन्ना भारिया, सामी समोसढे, जहा आणन्दो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं, जहा कामदेवो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ (सू. ३०)

अथ चतुर्थमारभ्यते, तदपि सुगमं नवरं चैत्यं कोष्ठकं, पुस्तकान्तरे काममहावनं, धन्या च भार्या (सू. ३०)

तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो सुरादेवा समणोवासया! अपत्थियप- ॥ ३४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र तृतीयं अध्ययनं परिसमाप्तं

अथ चतुर्थं अध्ययनं "सुरादेव" आरभ्यते [सुरादेव-श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [३१]

दीप अनुक्रम [३३]

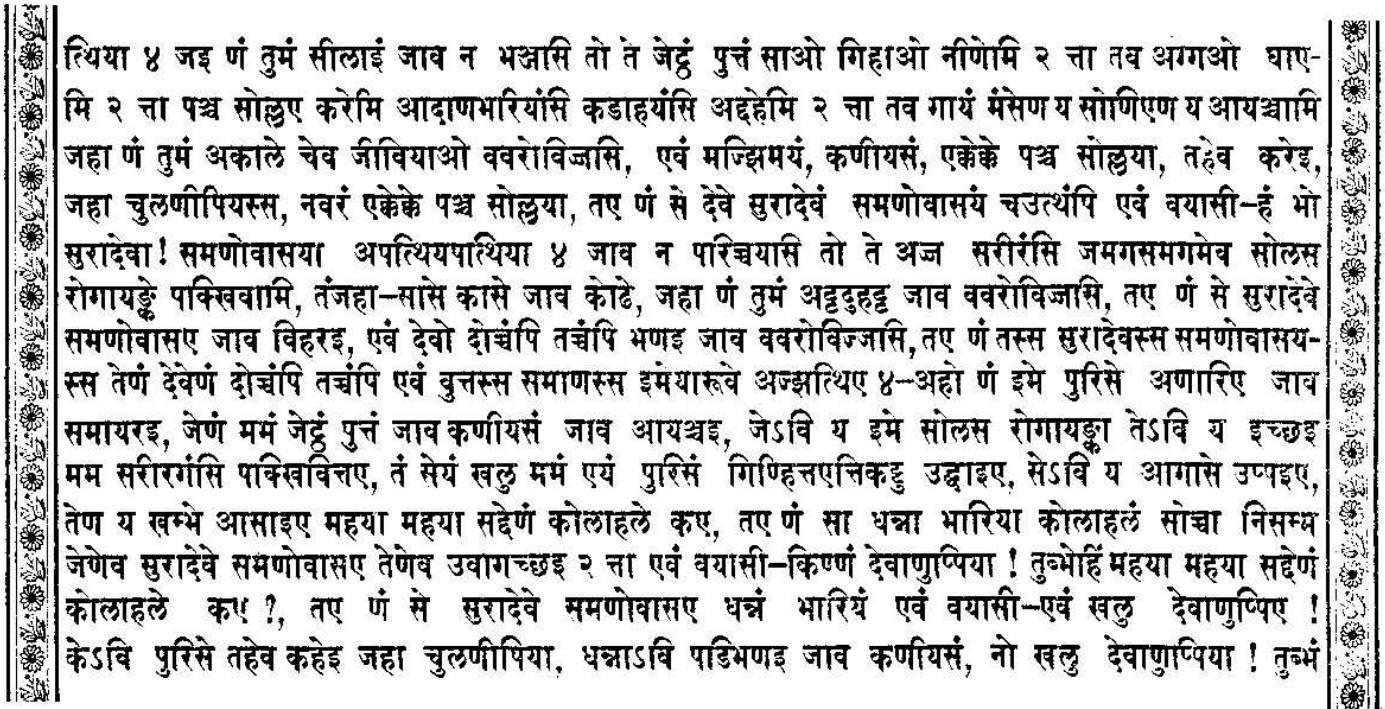

त्थिया ४ जइ णं तुमं सीलाइं जाव न भञ्जसि तो ते जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाए-
मि २ त्ता पञ्च सोल्लए करेमि आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ त्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि
जहा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पञ्च सोल्लया, तहेव करेइ,
जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पञ्च सोल्लया, तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी–हं भो
सुरादेवा! समणोवासया अपत्थियपत्थिया ४ जाव न परिच्चयासि तो ते अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस
रोगायङ्के पक्खिवामि, तंजहा–सासे कासे जाव कोढे, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट जाव ववरोविज्जसि, तए णं से सुरादेवे
समणोवासए जाव विहरइ, एवं देवो दोच्चंपि तच्चंपि भणइ जाव ववरोविज्जसि, तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासय-
स्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४–अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव
समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जेऽवि य इमे सोलस रोगायङ्का तेऽवि य इच्छइ
मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्तिकट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए,
तेण य खम्भे आसाइए महया महया सद्देणं कोलाहले कए, तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलं सोच्चा निसम्म
जेणेव सुरादेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता एवं वयासी–किण्णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं महया महया सद्देणं
कोलाहले कए?, तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए!
केऽवि पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया, धन्नाऽवि पडिभणइ जाव कणियसं, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सुरादेव-श्रमणोपासकः एवं देवकृत-उपसर्गः

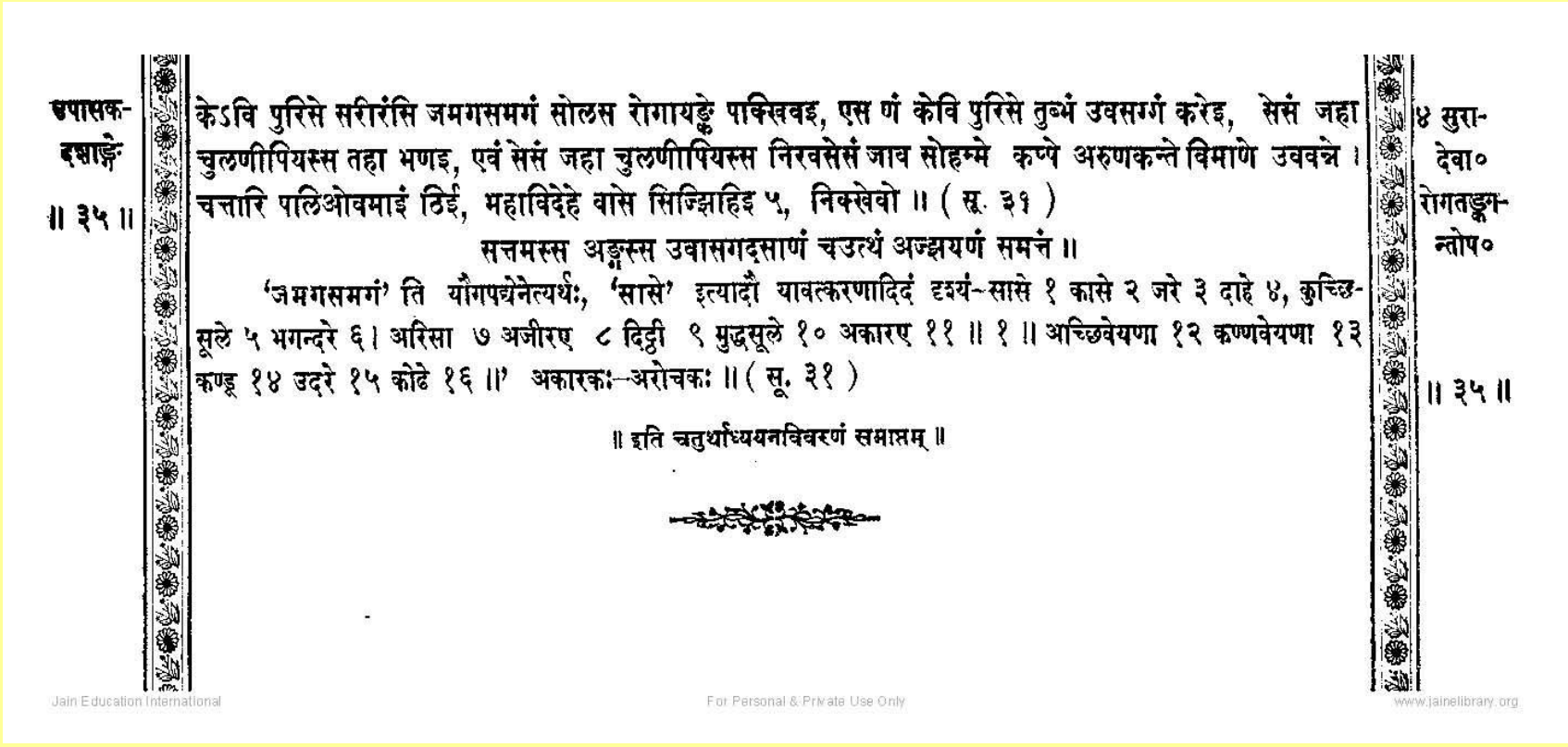

उपासक-दशाङ्गे ॥ ३५ ॥

केऽवि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस रोगायङ्के पक्खिवइ, एस णं केवि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ, सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भणइ, एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५, निक्खेवो ॥ (सू. ३१)

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

'जमगसमगं' ति यौगपद्येनेत्यर्थः, 'सासे' इत्यादौ यावत्करणादिदं दृश्यं-सासे १ कासे २ जरे ३ दाहे ४, कुच्छि-सूले ५ भगन्दरे ६। अरिसा ७ अजीरए ८ दिट्ठी ९ मुद्धसूले १० अकारए ११ ॥ १ ॥ अच्छिवेयणा १२ कण्णवेयणा १३ कण्डू १४ उदरे १५ कोढे १६ ॥' अकारकः—अरोचकः ॥ (सू. ३१)

॥ इति चतुर्थाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥

४ सुरा-देवा० रोगतङ्क-न्तोप०

॥ ३५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र चतुर्थं अध्ययनं परिसमाप्तं

प्रत
सूत्रांक
[३२-३४]

दीप
अनुक्रम
[३४-३६]

अथ पञ्चममध्ययनम् ॥

एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नयरी, सङ्खवणे उज्जाणे जियसत्तू राया, चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं बहुला भारिया सामी समोसढे, जहा आणन्दो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥ (सू. ३२)

तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं जाव असिं गहाय एवं वयासी-हं भो चुल्लसयगा समणोवासया ! जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि एवं जहा चुलणीपियं, नवरं एक्केके सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आयञ्चामि, तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाव विहरइ, तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी-हं भो चुल्लसयगा! समणोवासया जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ ताओ साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता आलभियाए नयरीए सिङ्घाडग जाव पहेसु सव्वओ समन्ता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जासि, तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ पंचमं अध्ययनं "चुल्लशतक" आरभ्यते [चुल्लशतक-श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [३२-३४]
दीप अनुक्रम [३४-३६]

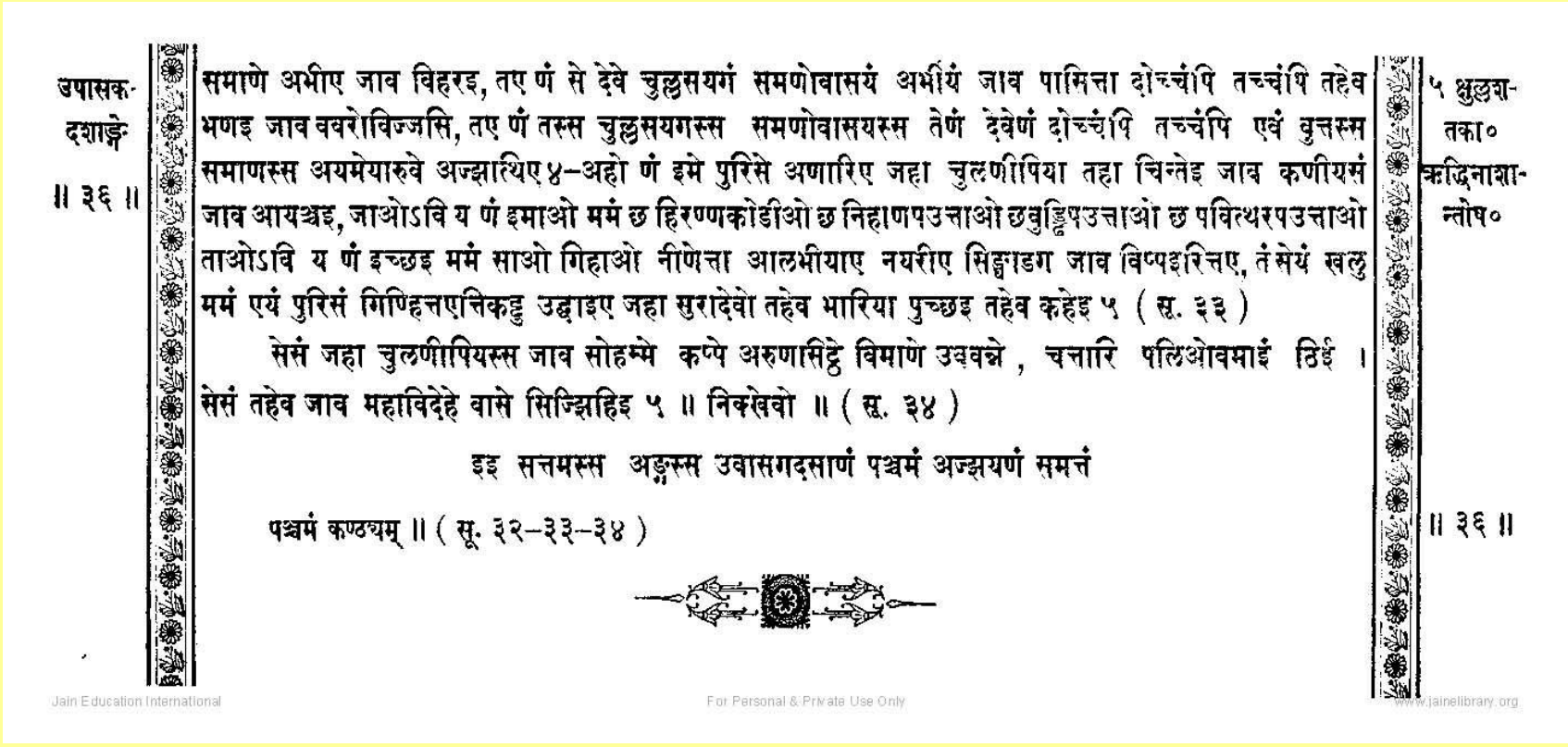

समाणे अभीए जाव विहरइ, तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि, तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारुवे अज्झत्थिए ४-अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिन्तेइ जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जाओऽवि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ छ निहाणपउत्ताओ छवुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ ताओऽवि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभीयाए नयरीए सिङ्घाडग जाव विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्तिकट्टु उद्धाइए जहा सुरादेवो तहेव भारिया पुच्छइ तहेव कहेइ ५ (सू. ३३)

५ क्षुल्लशतका० ऋद्धिनाशान्तोष०

सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे कप्पे अरुणसिट्ठे विमाणे उववन्ने, चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। सेसं तहेव जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो ॥ (सू. ३४)

इइ सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पञ्चमं अज्झयणं समत्तं

पञ्चमं कण्ठ्यम् ॥ (सू. ३२-३३-३४)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र पंचमं अध्ययनं परिसमाप्तं

प्रत सूत्रांक [३५-३६]

दीप अनुक्रम [३७-३८]

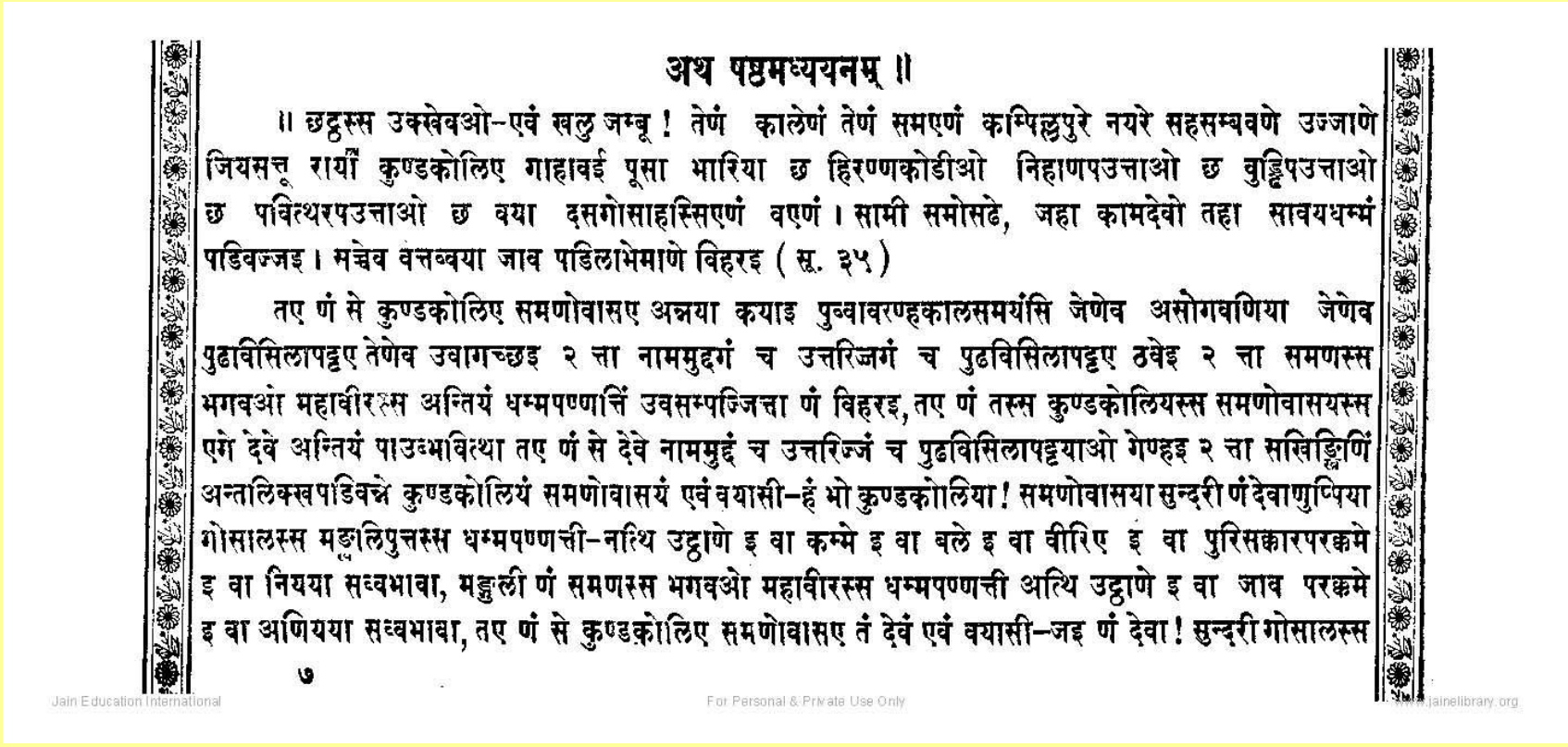

अथ षष्ठमध्ययनम् ॥

॥ छट्ठस्स उक्खेवओ-एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कम्पिल्लपुरे नयरे सहसम्बवणे उज्जाणे जियसत्तू रायौ कुण्डकोलिए गाहावई पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । सामी समोसढे, जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । सच्चेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणे विहरइ (सू. ३५)

तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था तए णं से देवे नाममुद्दं च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ २ त्ता सखिङ्खिणिं अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो कुण्डकोलिया! समणोवासया सुन्दरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती-नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा नियया सव्वभावा, मङ्खली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा अणियया सव्वभावा, तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी-जइ णं देवा! सुन्दरी गोसालस्स

७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ षष्ठं अध्ययनं "कुंडकोलिक" आरभ्यते [कुंडकोलिक-श्रमणोपासक कथा]

कुंडकोलिक-श्रमणोपासक: एवं मिथ्यादृष्टि: देवकृत: मिथ्यात्व प्रेरणा

प्रत सूत्रांक [३५-३६]

दीप अनुक्रम [३७-३८]

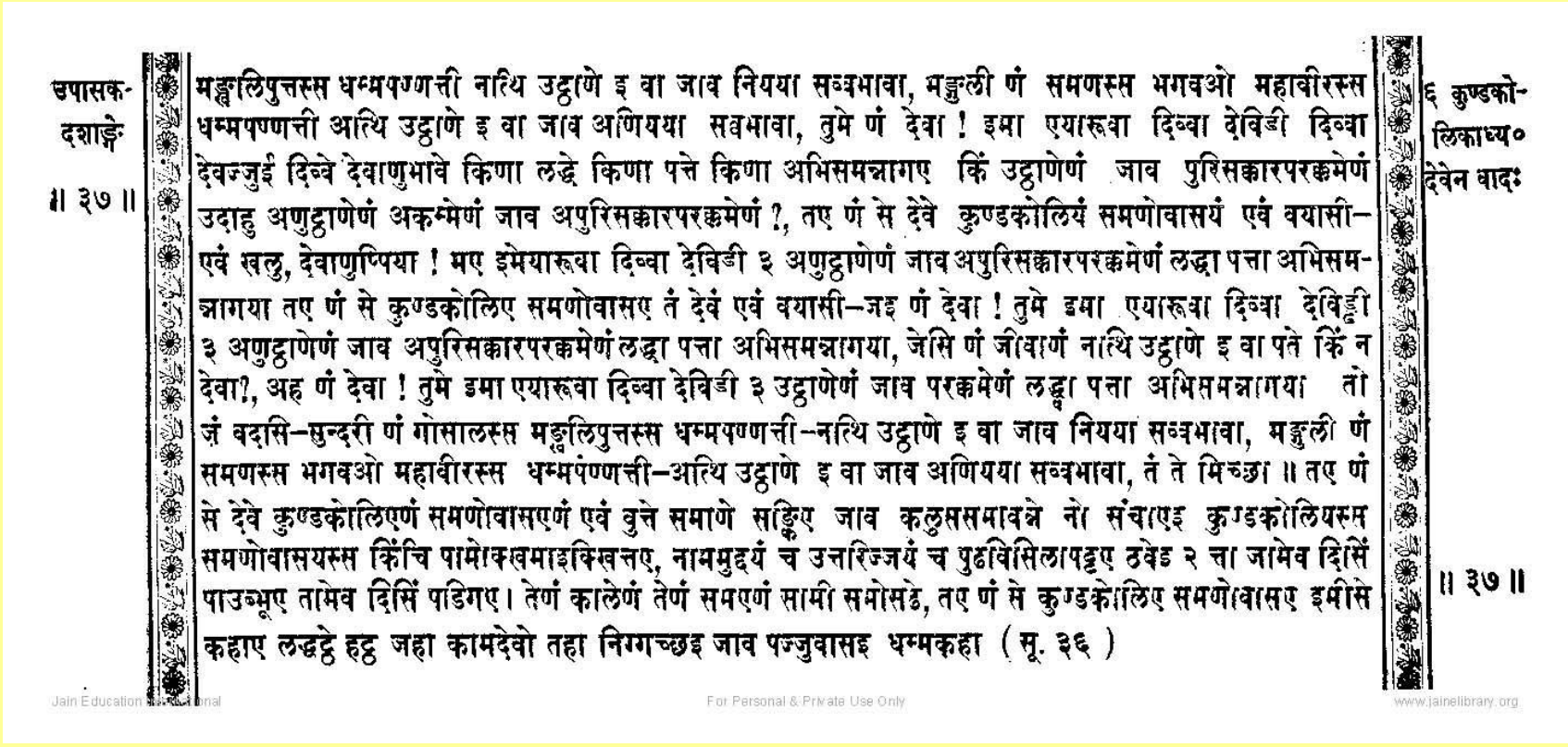

उपासक-दशाङ्गे ॥ ३७ ॥

मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मङ्खली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तुमे णं देवा ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे किणा पत्ते किणा अभिसमन्नागए किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं ?, तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी–एवं खलु, देवाणुप्पिया ! मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्डी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी–जइ णं देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा पते किं न देवा?, अह णं देवा ! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्डी ३ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया तो जं वदसि–सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती–नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मङ्खली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती–अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा ॥ तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे सङ्किए जाव कलुससमावन्ने नो संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पामोक्खमाइक्खित्तए, नाममुद्दयं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ २ त्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ धम्मकहा (सू. ३६)

६ कुण्डकोलिकाध्य० देवेन वादः ॥ ३७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुंडकोलिक-श्रमणोपासक: एवं मिथ्यादृष्टि: देवकृत: मिथ्यात्व प्रेरणा

प्रत सूत्रांक [३५-३६]

दीप अनुक्रम [३७-३८]

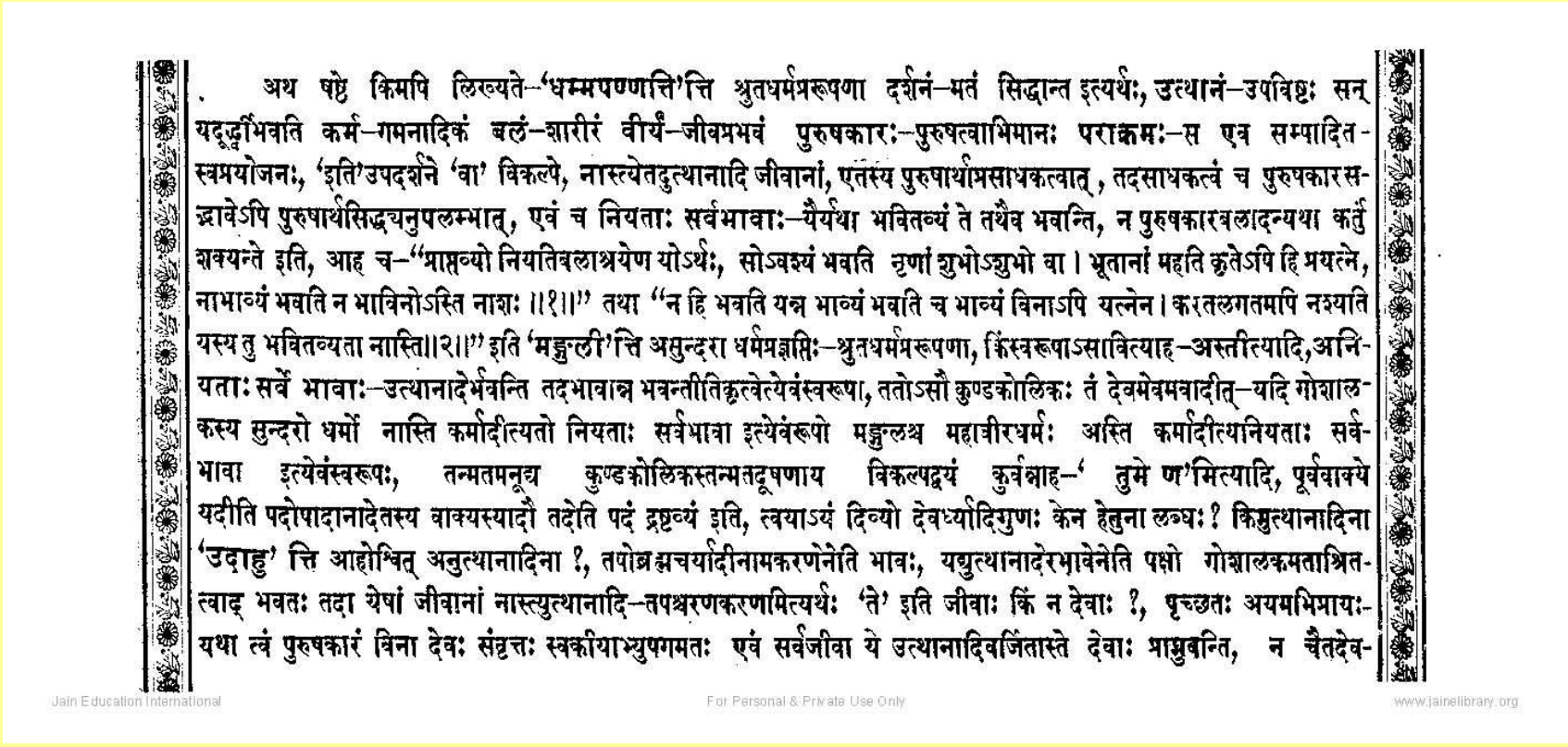

. अथ षष्ठं किमपि लिख्यते–'धम्मपण्णत्ति'त्ति श्रुतधर्मप्ररूपणा दर्शनं–मतं सिद्धान्त इत्यर्थः, उत्थानं–उपविष्टः सन् यदूर्द्धीभवति कर्म–गमनादिकं बलं–शारीरं वीर्यं–जीवप्रभवं पुरुषकारः–पुरुषत्वाभिमानः पराक्रमः–स एव सम्पादित-स्वप्रयोजनः, 'इति'उपदर्शने 'वा' विकल्पे, नास्त्येतदुत्थानादि जीवानां, एतस्य पुरुषार्थाप्रसाधकत्वात्, तदसाधकत्वं च पुरुषकारसद्भावेऽपि पुरुषार्थसिद्ध्यनुपलम्भात्, एवं च नियताः सर्वभावाः–यैर्यथा भवितव्यं ते तथैव भवन्ति, न पुरुषकारबलादन्यथा कर्तुं शक्यन्ते इति, आह च–"प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः, सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा। भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने, नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः ॥१॥" तथा "न हि भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनाऽपि यत्नेन। करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति॥२॥" इति 'मङ्कुली'त्ति असुन्दरा धर्मप्रज्ञप्तिः–श्रुतधर्मप्ररूपणा, किंस्वरूपाऽसावित्याह–अस्तीत्यादि, अनियताः सर्वे भावाः–उत्थानादेर्भवन्ति तदभावान्न भवन्तीतिकृत्वेत्येवंस्वरूपा, ततोऽसौ कुण्डकोलिकः तं देवमेवमवादीत्–यदि गोशालकस्य सुन्दरो धर्मो नास्ति कर्मादीत्यतो नियताः सर्वभावा इत्येवंरूपो मङ्कुलश्च महावीरधर्मः अस्ति कर्मादीत्यनियताः सर्वभावा इत्येवंस्वरूपः, तन्मतमनूद्य कुण्डकोलिकस्तन्मतदूषणाय विकल्पद्वयं कुर्वन्नाह–' तुमे ण'मित्यादि, पूर्ववाक्ये यदीति पदोपादानादेतस्य वाक्यस्यादौ तदेति पदं द्रष्टव्यं इति, त्वयाऽयं दिव्यो देवर्ध्यादिगुणः केन हेतुना लब्धः? किमुत्थानादिना 'उदाहु' त्ति आहोश्वित् अनुत्थानादिना ?, तपोब्रह्मचर्यादीनामकरणेनेति भावः, यद्युत्थानादेरभावेनेति पक्षो गोशालकमताश्रितत्वाद् भवतः तदा येषां जीवानां नास्त्युत्थानादि–तपश्चरणकरणमित्यर्थः 'ते' इति जीवाः किं न देवाः ?, पृच्छतः अयमभिप्रायः-यथा त्वं पुरुषकारं विना देवः संवृत्तः स्वकीयाभ्युपगमतः एवं सर्वजीवा ये उत्थानादिवर्जितास्ते देवाः प्राप्नुवन्ति, न चैतदेव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुंडकोलिक-श्रमणोपासकः एवं मिथ्यादृष्टिः देवकृतः मिथ्यात्व प्रेरणा

प्रत सूत्रांक [३५-३६]

दीप अनुक्रम [३७-३८]

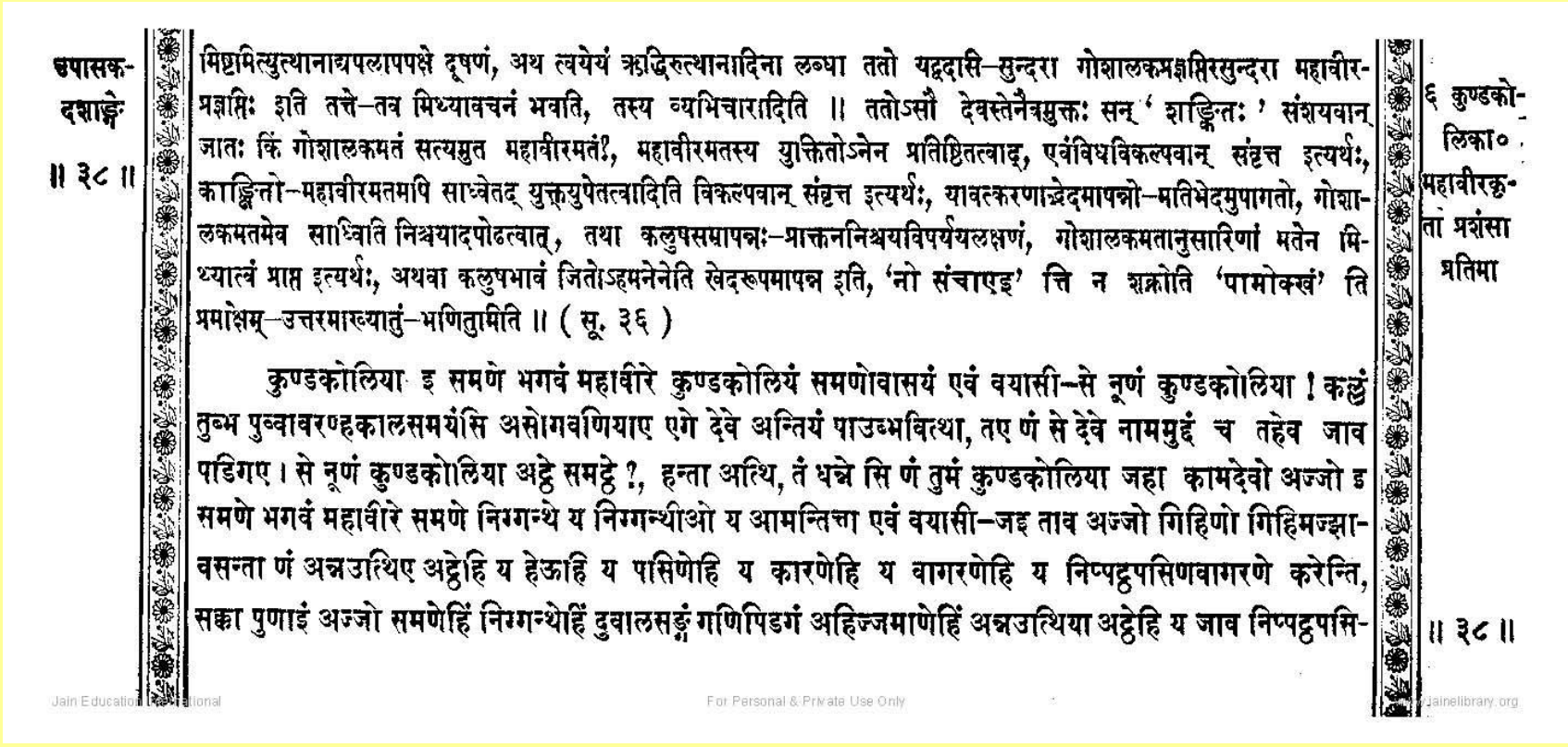

उपासकदशाङ्गे ॥ ३८ ॥

मिष्टमित्युत्थानाद्यपलापपक्षे दूषणं, अथ त्वयेयं ऋद्धिरुत्थानादिना लब्धा ततो यद्वदासि–सुन्दरा गोशालकमङ्खलिरसुन्दरा महावीरप्रज्ञप्तिः इति तत्ते–तव मिथ्यावचनं भवति, तस्य व्यभिचारादिति ॥ ततोऽसौ देवस्तेनैवमुक्तः सन् 'शङ्कितः' संशयवान् जातः किं गोशालकमतं सत्यमुत महावीरमतं?, महावीरमतस्य युक्तितोऽनेन प्रतिष्ठितत्वाद्, एवंविधविकल्पवान् संवृत्त इत्यर्थः, काङ्क्षितो–महावीरमतमपि साध्वेतद् युक्तयुपेतत्वादिति विकल्पवान् संवृत्त इत्यर्थः, यावत्करणाद्भेदमापन्नो–मतिभेदमुपागतो, गोशालकमतमेव साध्विति निश्चयादपोढत्वात्, तथा कलुषसमापन्नः–प्राक्तननिश्चयविपर्ययलक्षणं, गोशालकमतानुसारिणां मतेन मिथ्यात्वं प्राप्त इत्यर्थः, अथवा कलुषभावं जितोऽहमनेनेति खेदरूपमापन्न इति, 'नो संचाएइ' त्ति न शक्नोति 'पामोक्खं' ति प्रमोक्षम्–उत्तरमाख्यातुं–भणितुमिति ॥ (सू. ३६)

६ कुण्डकोलिका० महावीरकृता प्रशंसा प्रतिमा

कुण्डकोलिया इ समणे भगवं महावीरे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी–से नूणं कुण्डकोलिया ! कल्लं तुब्भ पुव्वावरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे नाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए । से नूणं कुण्डकोलिया अट्ठे समट्ठे ?, हन्ता अत्थि, तं धन्ने सि णं तुमं कुण्डकोलिया जहा कामदेवो अज्जो इ समणे भगवं महावीरे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता एवं वयासी–जइ ताव अज्जो गिहिणो गिहिमज्झावसन्ता णं अन्नउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसि- ॥ ३८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुंडकोलिक-श्रमणोपासक: एवं भगवंत-महावीरेण कृता तस्य दृढत्व-प्रशंसा

प्रत सूत्रांक [३७-३८]

दीप अनुक्रम [३९-४०]

णवागरणा करित्तए, तए णं समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति, तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता पसिणाइं पुच्छइ २ त्ता अट्ठमादियइ २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडियए, सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ (सू. ३७)

तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अन्तं काहिइ ॥ निक्खेवो ॥ (सू. ३८)

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं ॥

'गिहमज्झावसन्ता णं' ति गृहं–अध्यावसन्तो, णमिति वाक्यालङ्कारे अन्ययूथिकान् 'अर्थैः' जीवादिभिः सूत्राभिधेयैर्वा हेतुभिश्च–अन्वयव्यतिरेकलक्षणैः प्रश्नैश्च परप्रश्नीयपदार्थैः कारणैः–उपपत्तिमात्ररूपैः व्याकरणैश्च–परेण प्रश्नितस्योत्तरदानरूपैः, 'निप्पट्ठपसिणवागरणे' त्ति निरस्तानि स्पष्टानि–व्यक्तानि प्रश्नव्याकरणानि येषां ते निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणाः, प्राकृतत्वाद्वा निप्पिट्ठप्रश्नव्याकरणास्तान् कुर्वन्ति, 'सक्का पुण' त्ति शक्या एव, हे आर्याः ! श्रमणैरन्ययूथिका निःस्पष्टप्रश्नव्याकरणाः कर्तुम् (सू. ३७–३८)

॥ इति षष्ठं विवरणतः समाप्तम् ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कुंडकोलिक-श्रमणोपासक: एवं भगवंत-महावीरेण कृता तस्य दृढत्व-प्रशंसा

अत्र षष्ठं अध्ययनं परिसमाप्तं

प्रत सूत्रांक [३९]

दीप अनुक्रम [४१]

उपासकदशाङ्गे

॥ ३९ ॥

॥ अथ सप्तममध्ययनम् ॥

७ सद्दाल-पुत्राध्य०

सत्तमस्स उक्खेवो ॥ पोलासपुरे नामं नयरे, सहस्सम्बवणे उज्जाणे, जियसत्तू राया ॥ तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुम्भकारे आजीविओवासए परिवसइ, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते य अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठेत्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एक्का वुड्ढिपउत्ता एक्का पवित्थरपउत्ता एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं, तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था, तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया होत्था, तत्थ णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए य अलिञ्जरए य जम्बूलए य उट्टियाओ य करेन्ति, अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य जाव उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति (सू. ३९)

सप्तमं सुगममेव, नवरं 'आजीविओवासए'त्ति आजीविकाः—गोशालकशिष्याः तेषामुपासकः आजीविकोपासकः, ॥ ३९ ॥
लब्धार्थः श्रवणतो गृहीतार्थो बोधतः पृष्टार्थः संशये सति विनिश्चितार्थ उत्तरलाभे सति, 'दिण्णभइभत्तवेयण' त्ति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ सप्तमं अध्ययनं "सद्दालपुत्र" आरभ्यते [सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [३९]

दीप अनुक्रम [४१]

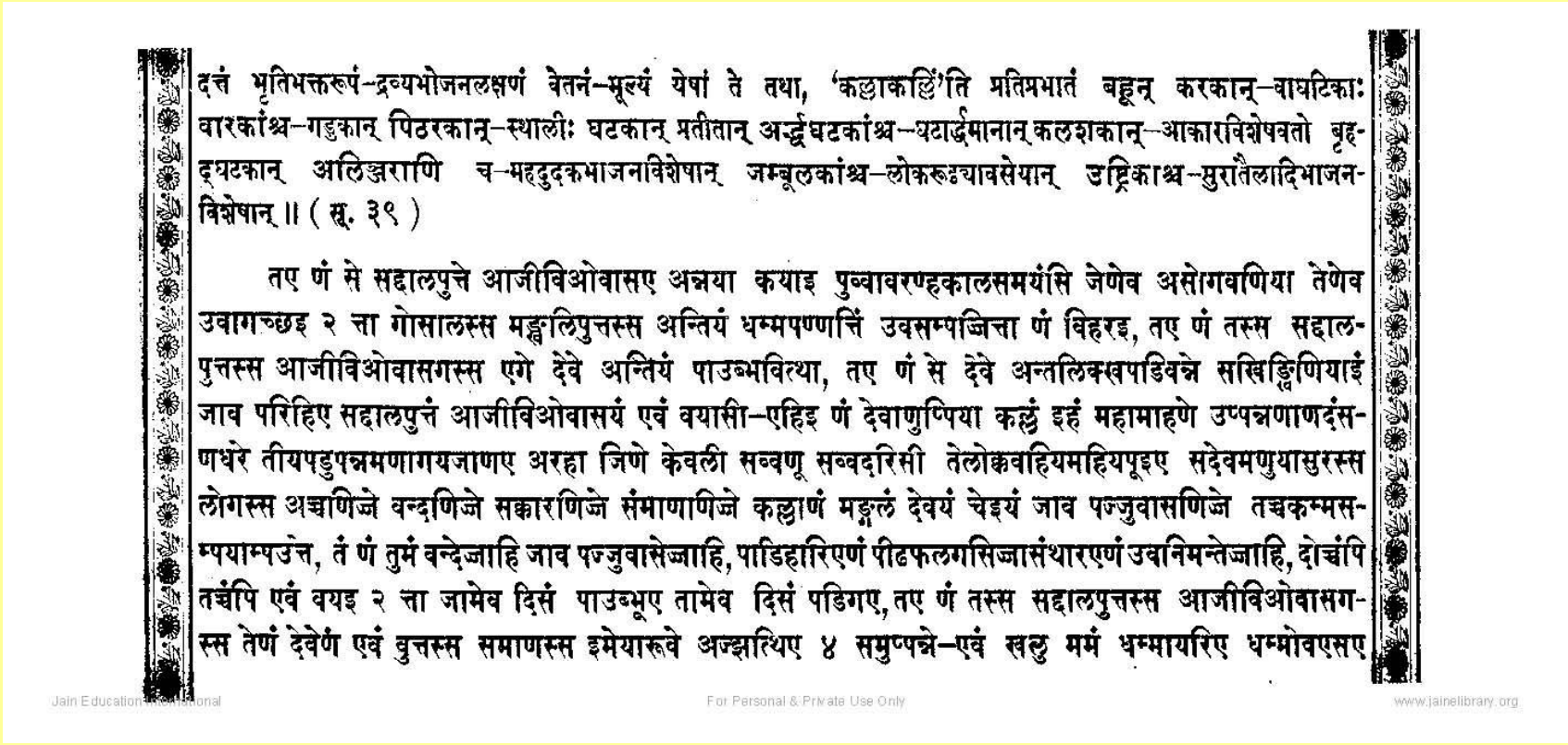

दत्तं भृतिभक्तरूपं-द्रव्यभोजनलक्षणं वेतनं-मूल्यं येषां ते तथा, 'कल्लाकल्लिं'ति प्रतिप्रभातं बहून् करकान्-वार्घटिकाः वारकांश्च-गडुकान् पिठरकान्-स्थालीः घटकान् प्रतीतान् अर्द्धघटकांश्च-घटार्द्धमानान् कलशकान्-आकारविशेषवतो बृहद्घटकान् अलिञ्जराणि च-महदुदकभाजनविशेषान् जम्बूलकांश्च-लोकरूढ्यावसेयान् उष्ट्रिकाश्च-सुरातैलादिभाजनविशेषान् ॥ (सू. ३९)

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिङ्खिणियाइं जाव परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी-एहिइ णं देवाणुप्पिया कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुपन्नमणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वणू सव्वदरिसी तेलोक्कवहियमहियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे सक्कारणिज्जे संमाणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसम्पयाम्पउत्ते, तं णं तुमं वन्देज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमन्तेज्जाहि, दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ २ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने-एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासकः एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्यागः

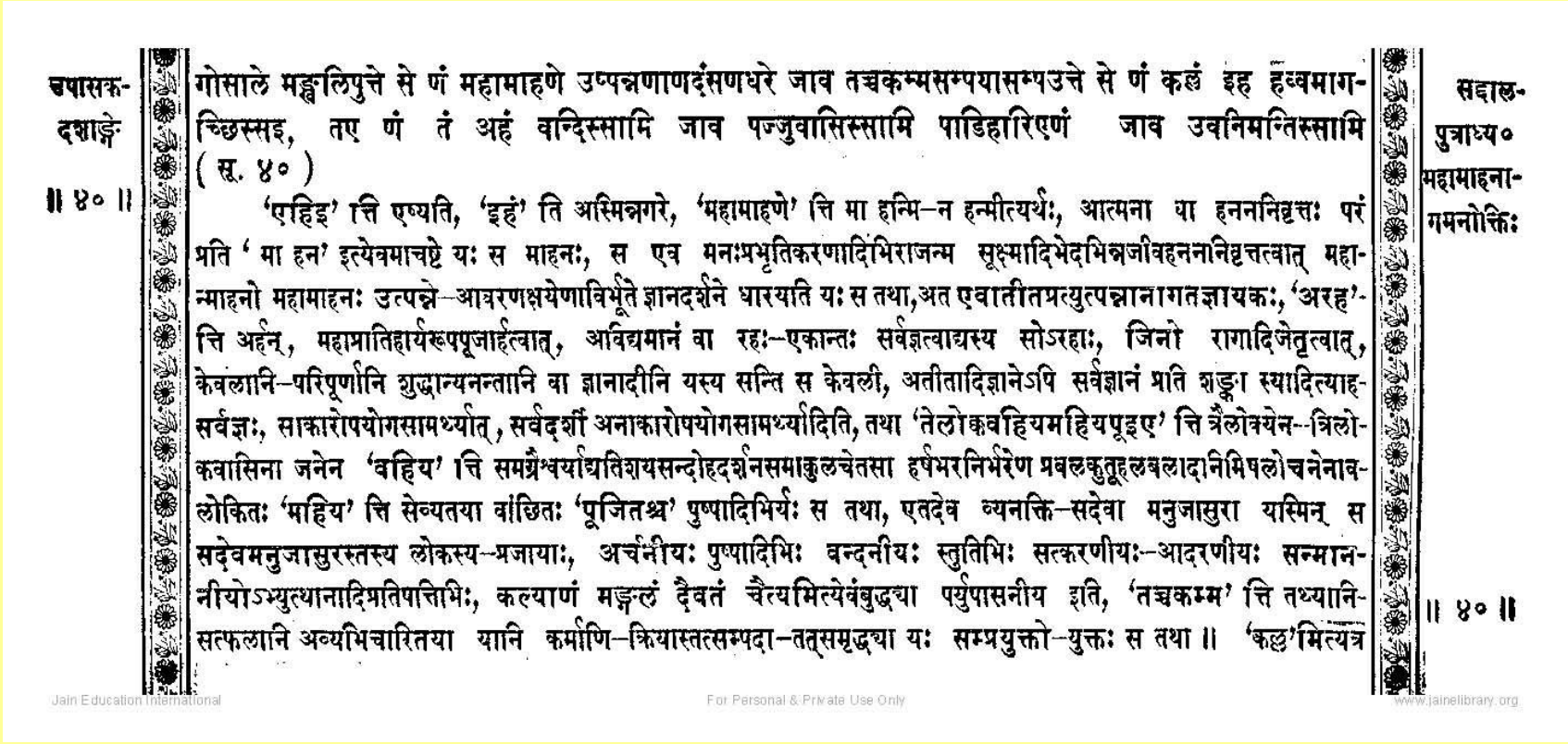

प्रत सूत्रांक [४०]

दीप अनुक्रम [४२]

उपासकदशाङ्गे

॥ ४० ॥

गोसाले मङ्खलिपुत्ते से णं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते से णं कल्लं इह हव्वमागच्छिस्सइ, तए णं तं अहं वन्दिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि पाडिहारिएणं जाव उवनिमन्तिस्सामि (सू. ४०)

'एहिइ' त्ति एष्यति, 'इहं' ति अस्मिन्नगरे, 'महामाहणे' त्ति मा हन्मि—न हन्मीत्यर्थः, आत्मना वा हनननिवृत्तः परं प्रति 'मा हन' इत्येवमाचष्टे यः स माहनः, स एव मनःप्रभृतिकरणादिभिराजन्म सूक्ष्मादिभेदभिन्नजीवहनननिवृत्तत्वात् महान्माहनो महामाहनः उत्पन्ने—आवरणक्षयेणाविर्भूते ज्ञानदर्शने धारयति यः स तथा, अत एवातीतप्रत्युत्पन्नानागतज्ञायकः, 'अरह'-त्ति अर्हन्, महाप्रातिहार्यरूपपूजार्हत्वात्, अविद्यमानं वा रहः—एकान्तः सर्वज्ञत्वाद्यस्य सोऽरहाः, जिनो रागादिजेतृत्वात्, केवलानि—परिपूर्णानि शुद्धान्यनन्तानि वा ज्ञानादीनि यस्य सन्ति स केवली, अतीतादिज्ञानेऽपि सर्वज्ञानं प्रति शङ्का स्यादित्याह-सर्वज्ञः, साकारोपयोगसामर्थ्यात्, सर्वदर्शी अनाकारोपयोगसामर्थ्यादिति, तथा 'तेलोक्कवहियमहियपूइए' त्ति त्रैलोक्येन--त्रिलोकवासिना जनेन 'वहिय' त्ति समग्रैश्वर्याद्यतिशयसन्दोहदर्शनसमाकुलचेतसा हर्षभरनिर्भरेण प्रबलकुतूहलबलादानिमिषलोचनेनावलोकितः 'महिय' त्ति सेव्यतया वाञ्छितः 'पूजितश्च' पुष्पादिभिर्यः स तथा, एतदेव व्यनक्ति—सदेवा मनुजासुरा यस्मिन् स सदेवमनुजासुरस्तस्य लोकस्य—प्रजायाः, अर्चनीयः पुष्पादिभिः वन्दनीयः स्तुतिभिः सत्करणीयः—आदरणीयः सन्माननीयोऽभ्युत्थानादिप्रतिपत्तिभिः, कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यमित्येवंबुद्ध्या पर्युपासनीय इति, 'तच्चकम्म' त्ति तथ्यानि-सत्फलानि अव्यभिचारितया यानि कर्माणि—क्रियास्तत्सम्पदा—तत्समृद्ध्या यः सम्प्रयुक्तो—युक्तः स तथा ॥ 'कल्ल'मित्यत्र

सद्दालपुत्राध्य० महामाहनागमनोक्तिः

॥ ४० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्याग:

प्रत सूत्रांक [४०]

दीप अनुक्रम [४२]

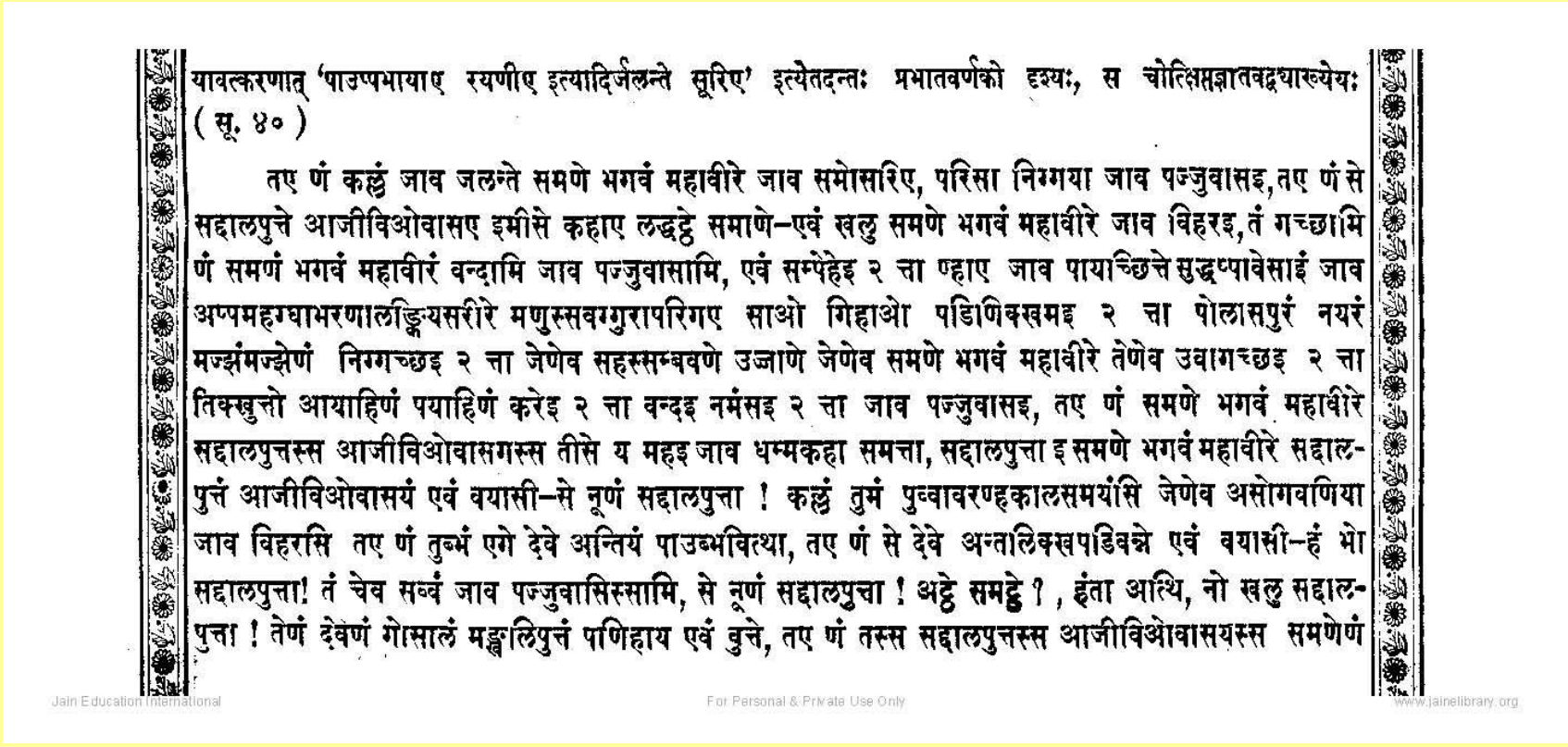

यावत्करणात् 'पाउप्पभायाए रयणीए इत्यादिर्जलन्ते सूरिए' इत्येतदन्तः प्रभातवर्णको दृश्यः, स चोत्क्षिप्तज्ञातवद्वाच्यः (सू. ४०)

तए णं कल्लं जाव जलन्ते समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए, परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे–एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वन्दामि जाव पज्जुवासामि, एवं सम्पेहेइ २ त्ता ण्हाए जाव पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता वन्दइ नमंसइ २ त्ता जाव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ जाव धम्मकहा समत्ता, सद्दालपुत्ता इ समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जाव विहरसि तए णं तुब्भं एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने एवं वयासी–हं भो सद्दालपुत्ता! तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि, से नूणं सद्दालपुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?, हंता अत्थि, नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेणं देवेणं गोसालं मङ्खलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्याग:

॥ ४१ ॥ भगवया महावीरेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४–एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढफलग जाव उवनिमन्तित्तए, एवं सम्पेहेइ २ त्ता उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–एवं खलु भन्ते ! ममं पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया, तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरह, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पञ्चकुम्भकारावणसएसु फासुएसणिज्जं पाडिहारियं पीठफलग जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरइ (सू. ४१)

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ वायाहययं कोलालभण्डं अन्तो सालाहिंतो बहिया नीणेइ २ त्ता आयवंसि दलयइ, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभण्डे कओ ?, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–एस णं भन्ते ! पुव्विं मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निगिज्जइ २ त्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ २ त्ता चक्के आरोहिज्जइ, तओ बहवे करगा य जाव उट्टियाओ य कज्जति, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–सद्दालपुत्ता एस णं कोलालभण्डे किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसकारपरक्कमेणं कज्जति उदाहु ॥ ४१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्याग:

प्रत
सूत्रांक
[४१-४२]

दीप
अनुक्रम
[४३-४४]

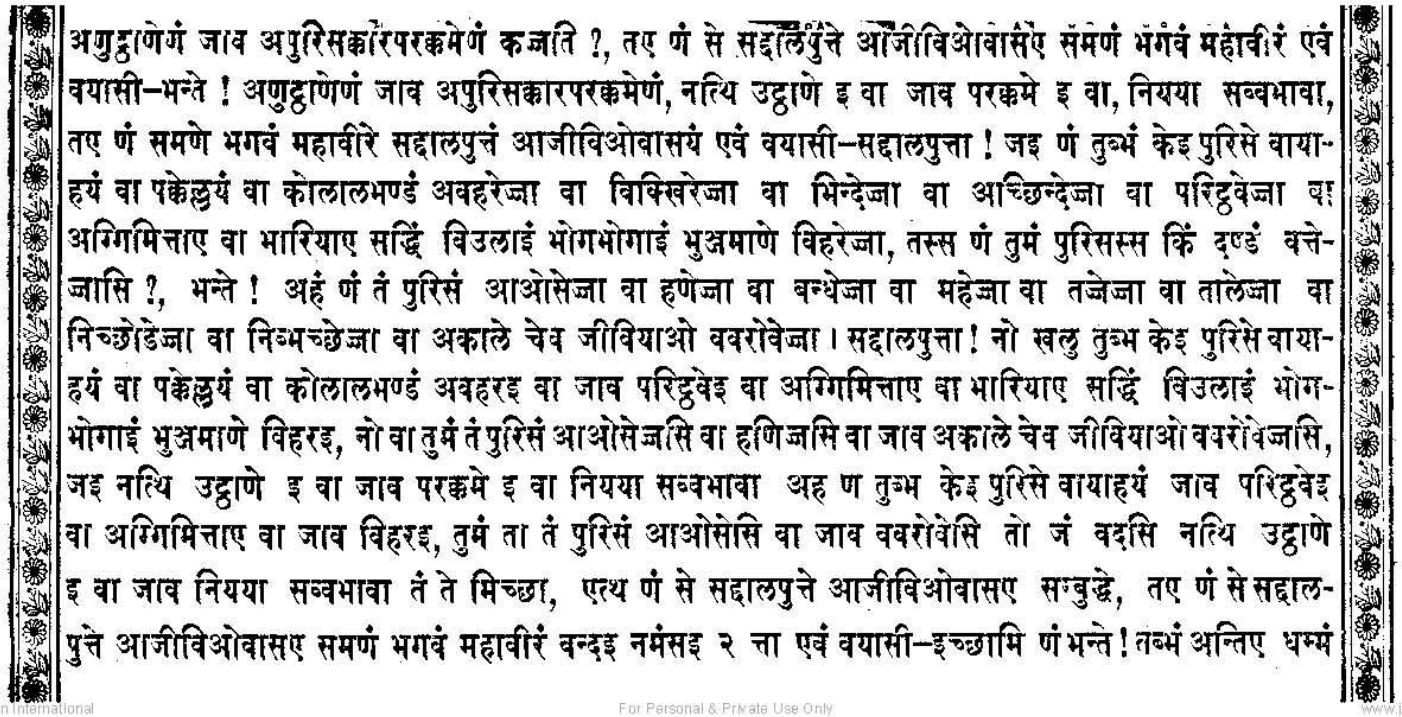

अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जति ?, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–भन्ते ! अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं, नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा, तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा वा भिन्देज्जा वा अच्छिन्देज्जा वा परिट्ठवेज्जा वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स किं दण्डं वत्तेज्जासि ?, भन्ते ! अहं णं तं पुरिसं आओसेज्जा वा हणेज्जा वा बन्धेज्जा वा महेज्जा वा तज्जेज्जा वा तालेज्जा वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा। सद्दालपुत्ता ! नो खलु तुब्भ केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ, नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि वा हणिज्जसि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जासि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा नियया सव्वभावा अह ण तुब्भ केइ पुरिसे वायाहयं जाव परिट्ठवेइ वा अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ, तुमं ता तं पुरिसं आओसेसि वा जाव ववरोवेसि तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा तं ते मिच्छा, एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे, तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–इच्छामि णं भन्ते ! तब्भं अन्तिए धम्मं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्याग:

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४३-४४]

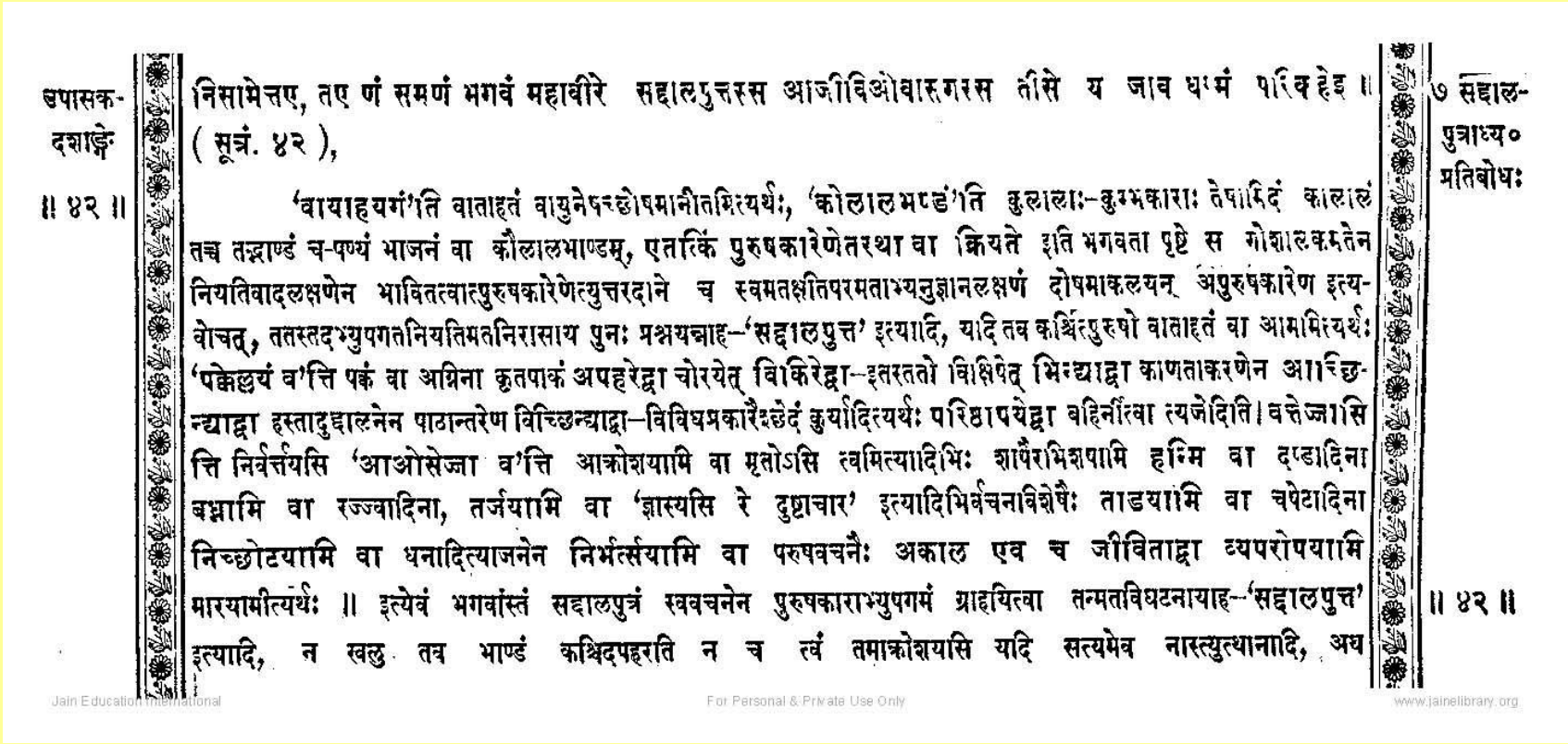

उपासक-दशाङ्गे ॥ ४२ ॥

निसामेत्तए, तए णं समणं भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य जाव धम्मं परिकहेइ ॥ (सूत्रं. ४२),

७ सद्दाल-पुत्राध्य० प्रतिबोधः

'वायाहयगं'ति वाताहतं वायुनेषच्छोषमानीतमित्यर्थः, 'कोलालभण्डं'ति कुलालाः-कुम्भकाराः तेषामिदं कौलालं तच्च तद्भाण्डं च-पण्यं भाजनं वा कौलालभाण्डम्, एतत्किं पुरुषकारेणेतरथा वा क्रियते इति भगवता पृष्टे स गोशालकमतेन नियतिवादलक्षणेन भावितत्वात्पुरुषकारेणेत्युत्तरदाने च स्वमतक्षतिपरमताभ्यनुज्ञानलक्षणं दोषमाकलयन् अपुरुषकारेण इत्यवोचत्, ततस्तदभ्युपगतनियतिमतनिरासाय पुनः प्रश्नयन्नाह-'सद्दालपुत्त' इत्यादि, यदि तव कश्चित्पुरुषो वाताहतं वा आममित्यर्थः 'पक्केल्लयं व'त्ति पक्कं वा अग्निना कृतपाकं अपहरेद्वा चोरयेत् विकिरेद्वा-इतस्ततो विक्षिपेत् भिन्द्याद्वा काणताकरणेन आच्छिन्द्याद्वा हस्तादुद्दालनेन पाठान्तरेण विच्छिन्द्याद्वा-विविधप्रकारैश्छेदं कुर्यादित्यर्थः परिष्ठापयेद्वा बहिर्नीत्वा त्यजेदिति। वत्तेज्जासित्ति निर्वर्त्तयसि 'आओसेज्जा व'त्ति आक्रोशयामि वा मृतोऽसि त्वमित्यादिभिः शापैरभिशपामि हन्मि वा दण्डादिना बध्नामि वा रज्ज्वादिना, तर्जयामि वा 'ज्ञास्यसि रे दुष्टाचार' इत्यादिभिर्वचनाविशेषैः ताडयामि वा चपेटादिना निच्छोटयामि वा धनादित्याजनेन निर्भर्त्सयामि वा परुषवचनैः अकाल एव च जीविताद्वा व्यपरोपयामि मारयामीत्यर्थः ॥ इत्येवं भगवांस्तं सद्दालपुत्रं स्ववचनेन पुरुषकाराभ्युपगमं ग्राहयित्वा तन्मतविघटनायाह-'सद्दालपुत्त' इत्यादि, न खलु तव भाण्डं कश्चिदपहरति न च त्वं तमाक्रोशयसि यदि सत्यमेव नास्त्युत्थानादि, अथ ॥ ४२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य मिथ्यात्व-परित्याग:

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४३-४४]

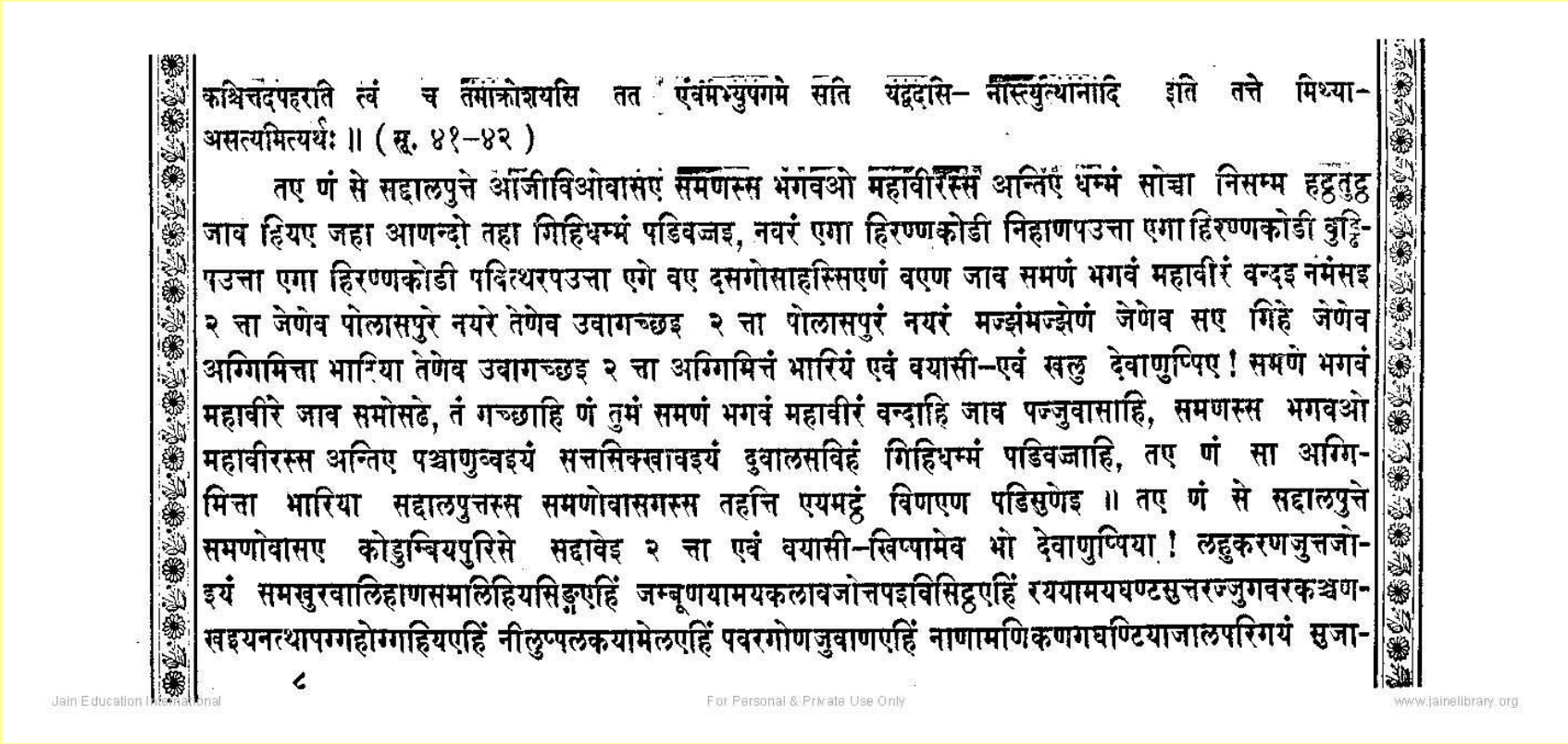

कश्चित्तदपहराति त्वं च तमाक्रोशयसि तत एवमभ्युपगमे सति यद्वदसि– नास्त्युत्थानादि इति तत्ते मिथ्या–असत्यमित्यर्थः ॥ (सू. ४१–४२)

तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणन्दो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा हिरण्णकोडी वुड्ढिपउत्ता एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएण जाव समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि, तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएण पडिसुणेइ ॥ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तजोइयं समखुरवालिहाणसमालिहियसिङ्गएहिं जम्बूणयामयकलावजोत्तपइविसिट्ठएहिं रययामयघण्टसुत्तरज्जुगवरकञ्चणखइयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणगघण्टियाजालपरिगयं सुजा–

८

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य गृहिधर्मस्वीकरणम्

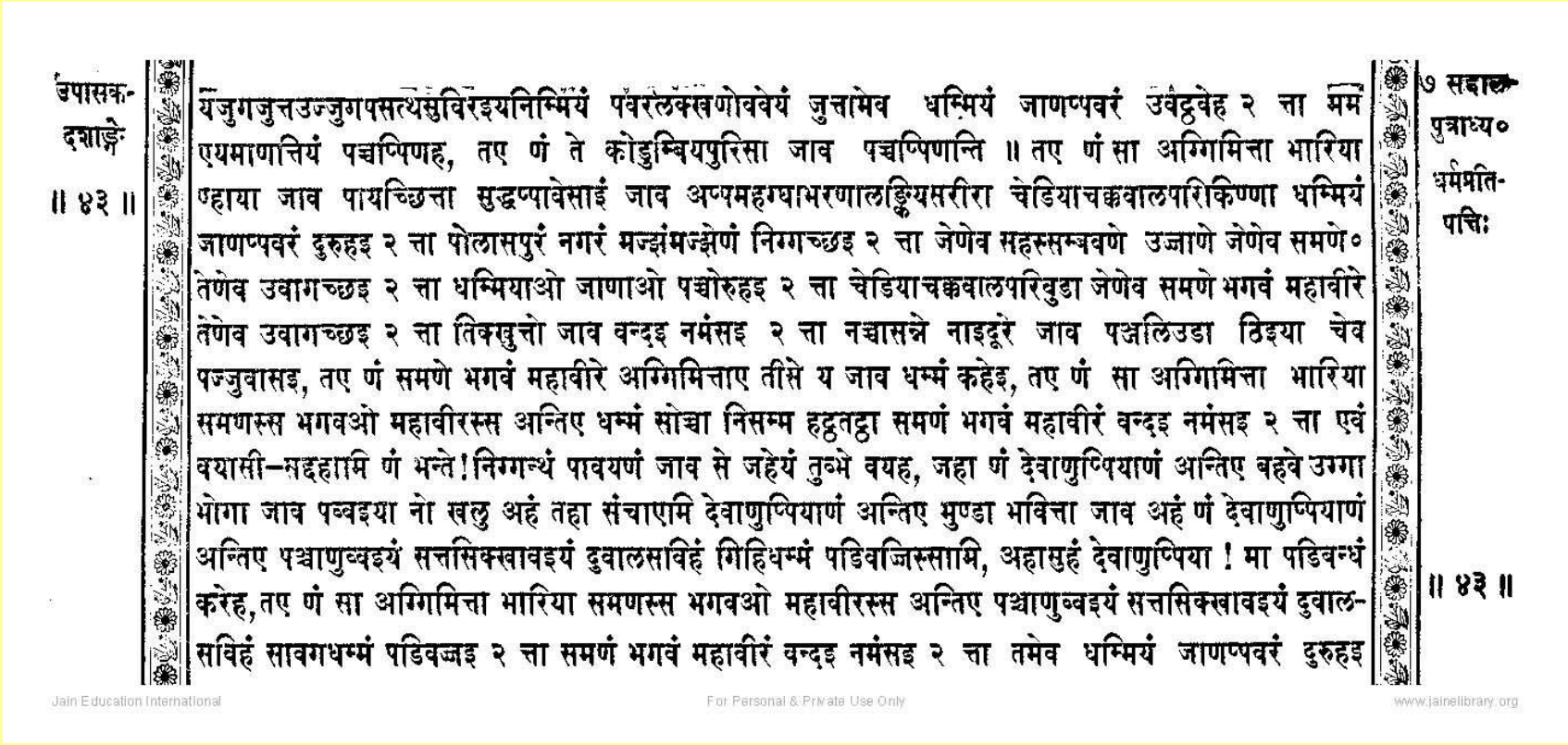

उपासक-दशाङ्गे ॥ ४३ ॥

यंजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह २ त्ता ममं एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा जाव पच्चप्पिणन्ति ॥ तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ २ त्ता पोलासपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे० तेणेव उवागच्छइ २ त्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहइ २ त्ता चेडियाचक्कवालपरिवुडा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तिक्खुत्तो जाव वन्दइ नमंसइ २ त्ता नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पज्जलिउडा ठिइया चेव पज्जुवासइ, तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य जाव धम्मं कहेइ, तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतट्ठा समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं भन्ते! निग्गन्थं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डा भवित्ता जाव अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह, तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ

७ सद्दाल-पुत्राध्य० धर्मप्रति-पत्तिः

॥ ४३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासक: एवं तस्य गृहिधर्मस्वीकरणम्

प्रत सूत्रांक [४३]

दीप अनुक्रम [४५]

२ त्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥ तए णं समणं भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पोलासपुराओ नयराओ सहस्सम्बवणाओ पडिनिग्गच्छइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ (सू. ४३)

'तए णं सा अग्गिमित्ता' इत्यादि, ततः सा अग्निमित्रा भार्या सद्दालपुत्रस्य श्रमणोपासकस्य तथेति एतमर्थं विनयेन प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्वा (त्य) च स्नाता 'कृतबलिकर्मा' बलिकर्म–लोकरूढं, 'कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता' कौतुकं–मषीपुण्ड्रादि मङ्गलं–दध्यक्षतचन्दनादि एते एव प्रायश्चित्तमिव प्रायश्चित्तं दुःस्वप्नादिप्रतिघातकत्वेनावश्यंकार्यत्वादिति, शुद्धात्मा वैषिकाणि–वेषार्हाणि मङ्गल्यानि प्रवरवस्त्राणि परिहिता, अल्पमहार्घाभरणालङ्कृतशरीरा चेटिकाचक्रवालपरिकीर्णा, पुस्तकान्तरे यानवर्णको दृश्यते, स चैवं सव्याख्यानोऽवसेयः–'लहुकरणजुत्तजोइयं' लघुकरणेन–दक्षत्वेन ये युक्ताः पुरुषास्तैर्योजितं–यन्त्रयूपादिभिः सम्बन्धितं यत्तत्तथा, तथा 'समखुरवालिहाणसमलिहियसिङ्गएहिं ' समखुरवालिधानौ–तुल्यशफपुच्छौ समे लिखिते इव लिखिते शृङ्गे ययोस्तौ तथा ताभ्यां गोयुवभ्यामिति सम्बन्धः, 'जम्बूणयामयकलावजोत्तपइविसिट्ठएहिं जाम्बूनदमयौ कलापौ–ग्रीवाभरणविशेषौ योक्त्रे च–कण्ठबन्धनरज्जू प्रतिविशिष्टे–शोभने ययोस्तौ तथा ताभ्यां, 'रययामयघण्ट-सुत्तरज्जुगवरकञ्चणखइयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं' रजतमय्यौ–रूप्यविकारौ घण्टे ययोस्तौ तथा सूत्ररज्जुके–कार्पासिक-सूत्रमय्यौ ये वरकाञ्चनखचिते नस्ते–नासारज्जू तयोः प्रग्रहेण–रश्मिना अवगृहीतकौ च–बद्धौ यौ तौ तथा ताभ्यां, 'नीलुप्प-लकयामेलएहिं' नीलोत्पलकृतशेखराभ्यां 'पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिकणगघण्टियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्त-उज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं' सुजातं–सुजातदारुमयं युगं–यूपः युक्तं–सङ्गतं ऋजुकं–सरलं (प्रशस्तं) सुविरचितं–सुघटितं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र-श्रमणोपासकः एवं तस्य गृहिधर्मस्वीकरणम्

प्रत सूत्रांक [४४]

दीप अनुक्रम [४६]

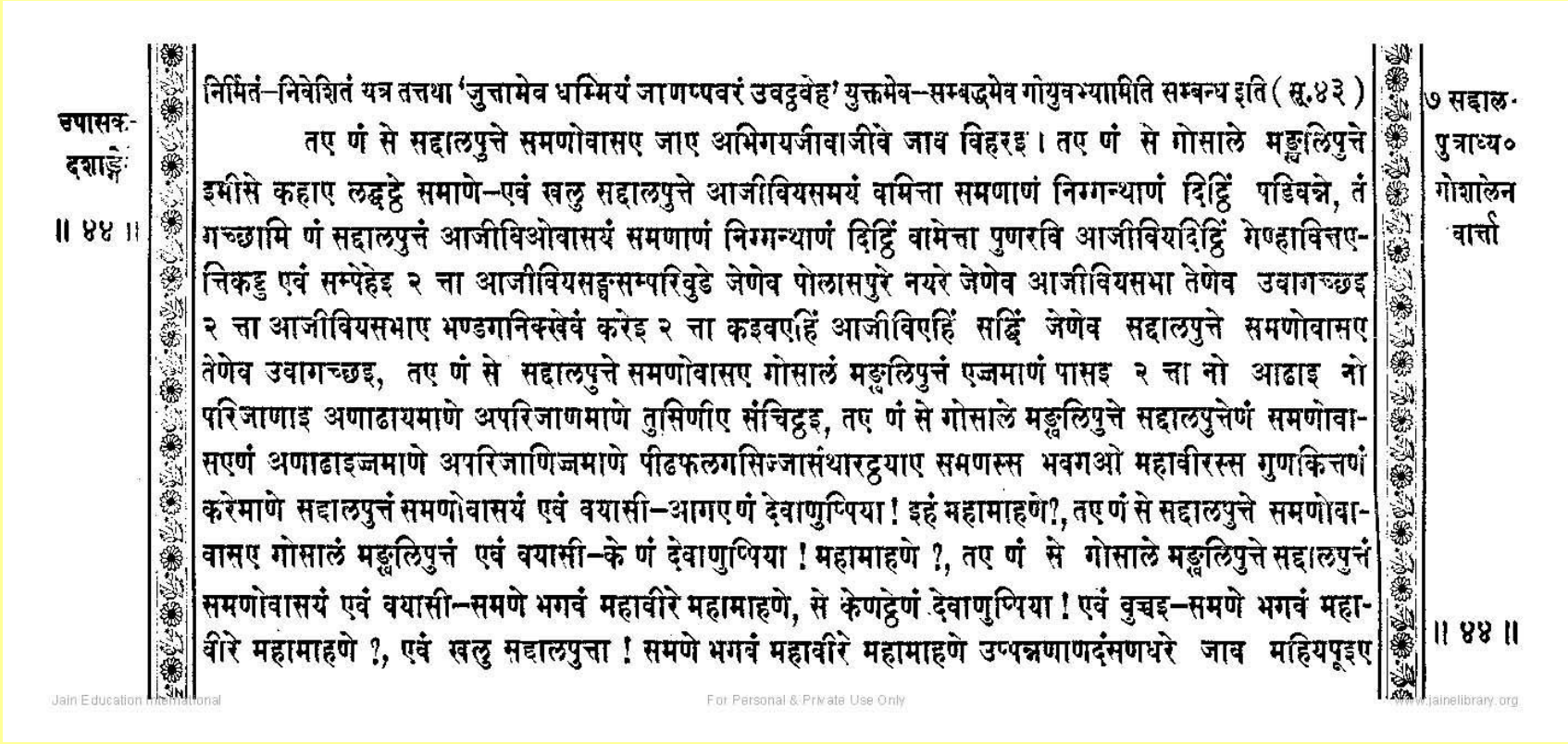

उपासक-दशाङ्गे ॥ ४४ ॥

निर्मितं–निवेशितं यत्र तत्तथा 'जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह' युक्तमेव–सम्बद्धमेव गोयुवभ्यामिति सम्बन्ध इति (सू.४३)

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ । तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे–एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए-त्तिकट्टु एवं सम्पेहेइ २ त्ता आजीवियसङ्घसम्परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव आजीवियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता आजीवियसभाए भण्डगनिक्खेवं करेइ २ त्ता कइवएहिं आजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ २ त्ता नो आढाइ नो परिजाणाइ अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवा-सएणं अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढफलगसिज्जासंथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी–आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महामाहणे?, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवा-सए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी–के णं देवाणुप्पिया ! महामाहणे ?, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी–समणे भगवं महावीरे महामाहणे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ–समणे भगवं महा-वीरे महामाहणे ?, एवं खलु सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्ननाणदंसणधरे जाव महियपूइए

७ सद्दाल-पुत्राध्य० गोशालेन वार्त्ता

॥ ४४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालाप:

प्रत सूत्रांक [४४]

दीप अनुक्रम [४६]

जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महामाहणे। आगए णं देवाणप्पिया इहं महागोवे ?, के णं देवाणुप्पिया! महागोवे ?, समणे भगवं महावीरे महागोवे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! जाव महागोवे ?, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दण्डेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावाडं साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महागोवे। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महासत्थवाहे ?, के णं देवाणुप्पिया! महासत्थवाहे ?, सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे, से केणट्ठेणं० ?, एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे धम्ममएणं पन्थेणं सारक्खमाणे० निव्वाणमहापट्टणाभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महाधम्मकही ?, के णं देवाणुप्पिया महाधम्मकही ? समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही, से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?, एवं खलु देवाणुप्पिया समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे ख० छि० भि० लु० वि० उम्मग्गपडिवन्ने सप्पह-विप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने बहूहिं अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य चाउरन्ताओ संसार-कन्ताराओ साहत्थिं नित्थारेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ-समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही। आगए णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालापः

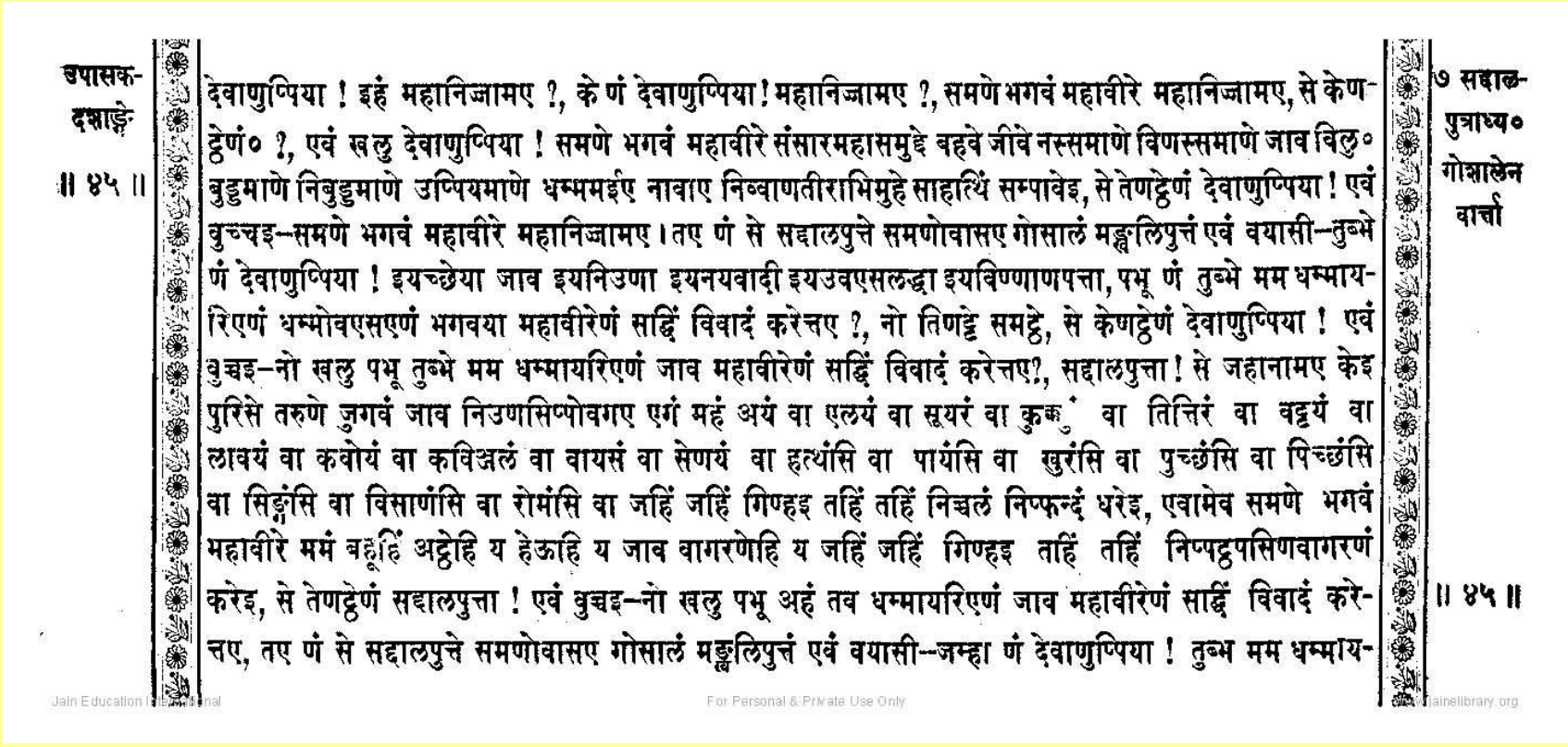

मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..........आगमसूत्र - [०७], अंग सूत्र - [०७] "उपासकदशा" मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:

प्रत
सूत्रांक
[४४]

दीप
अनुक्रम
[४६]

उपासक-
दशाङ्गे
॥ ४५ ॥

देवाणुप्पिया ! इहं महानिज्जामए ?, के णं देवाणुप्पिया! महानिज्जामए ?, समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए, से केण-
ट्ठेणं० ?, एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलु०
बुड्डमाणे निबुड्डमाणे उप्पियमाणे धम्ममईए नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं
वुच्चइ–समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी–तुब्भे
णं देवाणुप्पिया ! इयच्छेया जाव इयनिउणा इयनयवादी इयउवएसलद्धा इयविण्णाणपत्ता, पभू णं तुब्भे मम धम्माय-
रिएणं धम्मोवएसएणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं
वुच्चइ–नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए?, सद्दालपुत्ता! से जहानामए केइ
पुरिसे तरुणे जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कु॰ वा तित्तिरं वा वट्टयं वा
लावयं वा कवोयं वा कविञ्जलं वा वायसं वा सेणयं वा हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि वा पिच्छंसि
वा सिङ्गंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं जहिं गिण्हइ तहिं तहिं निच्चलं निप्फन्दं धरेइ, एवामेव समणे भगवं
महावीरे ममं बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य जाव वागरणेहि य जहिं जहिं गिण्हइ तहिं तहिं निप्पट्ठपसिणवागरणं
करेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुच्चइ–नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करे-
त्तए, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी--जम्हा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भ मम धम्माय-

७ सद्दाल-
पुत्राध्य०
गोशालेन
वार्त्ता
॥ ४५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालाप:

प्रत सूत्रांक [४४]

दीप अनुक्रम [४६]

रियस्स जाव महावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं करेह तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ जाव संथारएणं उवनिमन्तेमि, नो चेव णं धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा, तं गच्छह णं तुब्भे मम कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढफलग जाव ओगिण्हित्ताणं विहरह, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ २ त्ता कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढ जाव ओगिण्हित्ता णं विहरइ, तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते पोलासपुराओ नगराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ (सू. ४४)

'महागोवे'त्यादि गोपो–गोरक्षकः स चेतरगोरक्षकेभ्योऽतिविशिष्टत्वान्महानिति महागोपः ॥ 'नश्यत' इति सन्मार्गाच्यवमानान् 'विनश्यत' इत्यनेकशो म्रियमाणान् ' खाद्यमानान् ' मृगादिभावे व्याघ्रादिभिः ' छिद्यमानान् ' मनुष्यादिभावे खड्गादिना भिद्यमानान् कुन्तादिना लुप्यमानान् कर्णनासादिच्छेदनेन विलुप्यमानान् वाद्योपध्यपहारतः गा इवेति गम्यते, 'निव्वाणमहावाडं' ति सिद्धिमहागोस्थानविशेषं 'साहत्थे'त्ति स्वहस्तेनेव स्वहस्तेन, साक्षादित्यर्थः ॥ महासार्थवाहालापकानन्तरं पुस्तकान्तरे इदमपरमधीयते–'आगए णं देवाणुप्पिया ! इहं महाधम्मकही ?, के णं देवाणुप्पिया ! महाधम्मकही ?, समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही, से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही ?, एवं खलु सद्दालपुत्ता ! समणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालाप:

प्रत सूत्रांक [४४]

दीप अनुक्रम [४६]

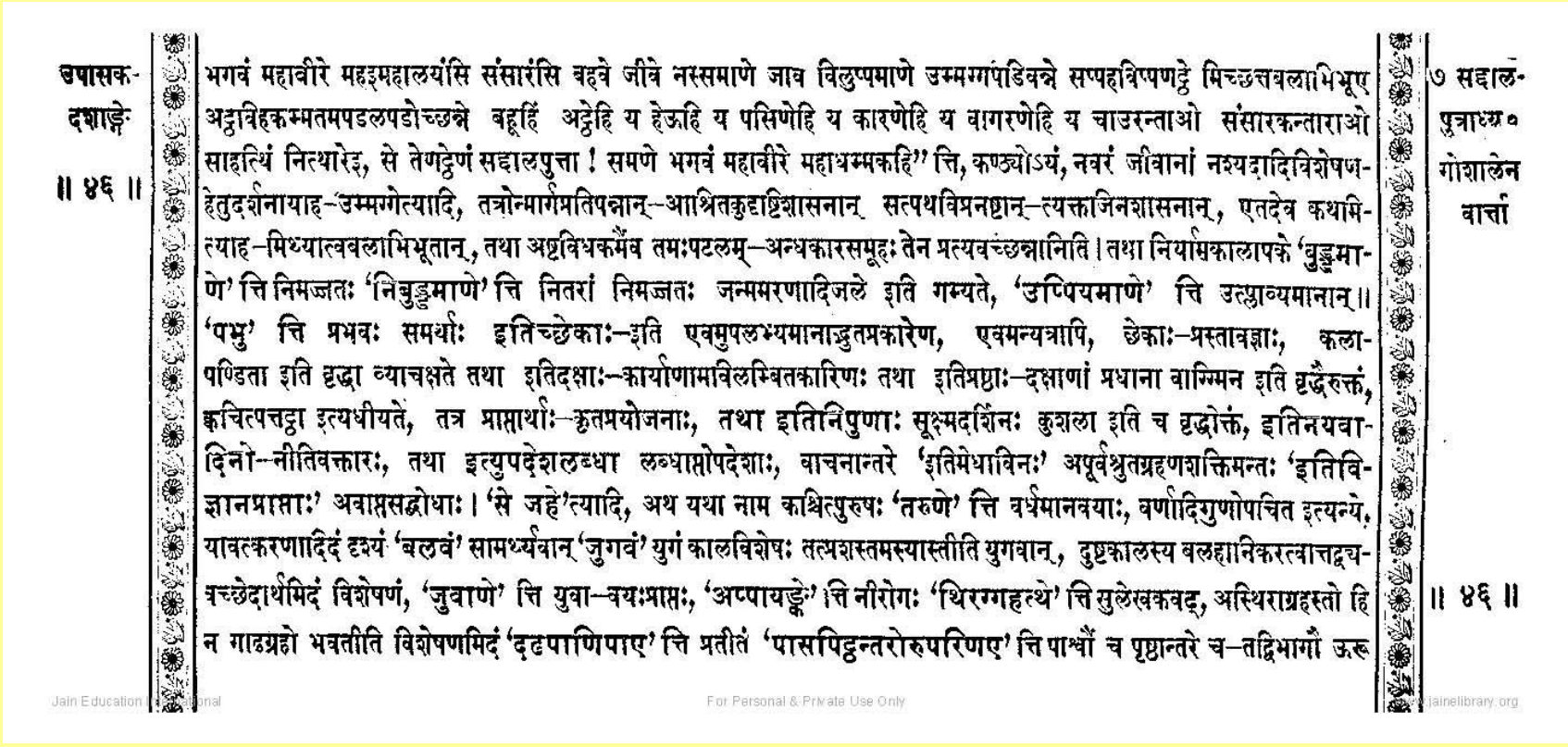

भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि बहवे जीवे नस्समाणे जाव विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तबलाभिभूए अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य चाउरन्ताओ संसारकन्ताराओ साहत्थिं नित्थारेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! समणे भगवं महावीरे महाधम्मकहि" त्ति, कण्ठ्योऽयं, नवरं जीवानां नश्यदादिविशेषण-हेतुदर्शनायाह-'उम्मग्गेत्यादि, तत्रोन्मार्गप्रतिपन्नान्-आश्रितकुदृष्टिशासनान् सत्पथविप्रनष्टान्-त्यक्तजिनशासनान्, एतदेव कथमित्याह-मिथ्यात्वबलाभिभूतान्, तथा अष्टविधकर्मैव तमःपटलम्-अन्धकारसमूहः तेन प्रत्यवच्छन्नानिति। तथा निर्यामकालापके 'बुड्डमाणे' त्ति निमज्जतः 'निबुड्डमाणे' त्ति नितरां निमज्जतः जन्ममरणादिजले इति गम्यते, 'उप्पियमाणे' त्ति उत्प्लाव्यमानान्॥ 'पभु' त्ति प्रभवः समर्थाः इतिच्छेकाः-इति एवमुपलभ्यमानाद्भुतप्रकारेण, एवमन्यत्रापि, छेकाः-प्रस्तावज्ञाः, कलापण्डिता इति वृद्धा व्याचक्षते तथा इतिदक्षाः-कार्याणामविलम्बितकारिणः तथा इतिप्रष्ठाः-दक्षाणां प्रधाना वाग्मिन इति वृद्धैरुक्तं, क्वचित्पत्तट्ठा इत्यधीयते, तत्र प्राप्तार्थाः-कृतप्रयोजनाः, तथा इतिनिपुणाः सूक्ष्मदर्शिनः कुशला इति च वृद्धोक्तं, इतिनयवादिनो-नीतिवक्तारः, तथा इत्युपदेशलब्धा लब्धाप्तोपदेशाः, वाचनान्तरे 'इतिमेधाविनः' अपूर्वश्रुतग्रहणशक्तिमन्तः 'इतिविज्ञानप्राप्ताः' अवाप्तसद्बोधाः। 'से जहे'त्यादि, अथ यथा नाम कश्चित्पुरुषः 'तरुणे' त्ति वर्धमानवयाः, वर्णादिगुणोपचित इत्यन्ये, यावत्करणादिदं दृश्यं 'बलवं' सामर्थ्यवान् 'जुगवं' युगं कालविशेषः तत्प्रशस्तमस्यास्तीति युगवान्, दुष्टकालस्य बलहानिकरत्वात्तद्व्यवच्छेदार्थमिदं विशेषणं, 'जुवाणे' त्ति युवा-वयःप्राप्तः, 'अप्पायङ्के' त्ति नीरोगः 'थिरग्गहत्थे' त्ति सुलेखकवद्, अस्थिराग्रहस्तो हि न गाढग्रहो भवतीति विशेषणमिदं 'दढपाणिपाए' त्ति प्रतीतं 'पासपिट्ठन्तरोरुपरिणए' त्ति पार्श्वौ च पृष्ठान्तरे च-तद्विभागौ ऊरू

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालापः

च परिणतौ–निष्पत्तिप्रकर्षावस्थां गतौ यस्य स तथा, उत्तमसंहनन इत्यर्थः, 'तलजमलजुयलपरिघनिभबाहु'त्ति तलयोः–तालाभिधानवृक्षविशेषयोः यमलयोः–समश्रेणीकयोर्युगलं परिघश्च–अर्गला तन्निभौ–तत्सदृशौ बाहू यस्य स तथा, आयतबाहुरित्यर्थः, 'घणनिचियवट्टपालिखन्धे'त्ति घननिचितः–अत्यर्थं निबिडो वृत्तश्च–वर्तुलः पालिवत्–तडागादिपालीव स्कन्धौ–अंशदेशौ यस्य स तथा,'चम्मेट्ठगदुहणमोट्ठियसमाहयनिचियगायकाए'त्ति चर्मेष्टका–इष्टकाशकलादिभृतचर्मकुतपरूपा यदाकर्षणेन धनुर्धरा व्यायामं कुर्वन्ति दुघणो–मुद्गरो मौष्टिको–मुष्टिप्रमाणः प्रोतचर्मरज्जुकः पाषाणगोलकस्तैः समाहतानि–व्यायामकरणप्रवृत्तौ सत्यां ताडितानि निचितानि गात्राणि–अङ्गानि यत्र स तथा स एवंविधः कायो यस्य स तथा, अनेनाभ्यासजनितं सामर्थ्यमुक्तं, 'लङ्घणपवणजइणवायामसमत्थे' त्ति लङ्घणं च–अतिक्रमणं प्लवनं च–उत्प्लवनं जविनव्यायामश्च–तदन्यः शीघ्रव्यापारस्तेषु समर्थो यः स तथा, 'उरस्सबलसमागए' त्ति अन्तरोत्साहवीर्ययुक्त इत्यर्थः 'छेए' त्ति प्रयोगज्ञः 'दक्खे' त्ति शीघ्रकारी 'पत्तट्ठे' त्ति अधिकृतकर्मणि निष्ठाङ्गतः प्राप्तार्थः, प्रज्ञ इत्यन्ये, 'कुसले' त्ति आलोचितकारी 'मेहावि' त्ति सकृद्दृष्टश्रुतकर्मज्ञः 'निउणे' त्ति उपायारम्भकः 'निउणसिप्पोवगए' त्ति सूक्ष्मशिल्पसमन्वित इति, अजं वा–छगलं एलकं वा–उरभ्रं शूकरं वा–वराहं कुर्कुटतित्तिरवर्तकलावककपोतकपिञ्जलवायसश्येनकाः पक्षिविशेषा लोकप्रसिद्धाः, 'हत्थंसि व' त्ति यद्यप्यजादीनां हस्तो न विद्यते तथाप्यग्रेतनपादो हस्त इव हस्त इतिकृत्वा हस्ते वेत्युक्तं, यथासम्भवं चैषां हस्तपादखुरपुच्छपिच्छशृङ्गविषाणरोमाणि योजनीयानि, पिच्छपक्षावयवविशेषः, श्टङ्गमिहाजैडकयोः प्रतिपत्तव्यं, विषाणशब्दो यद्यपि गजदन्ते रूढस्तथापीह शूकरदन्ते प्रतिपत्तव्यः, साधर्म्य-

१ शृङ्गे कोलेभदन्तयोरित्यनेकार्थोक्तिः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रस्य गोशालकेन सह वार्तालापः

प्रत
सूत्रांक
[४४]

दीप
अनुक्रम
[४६]

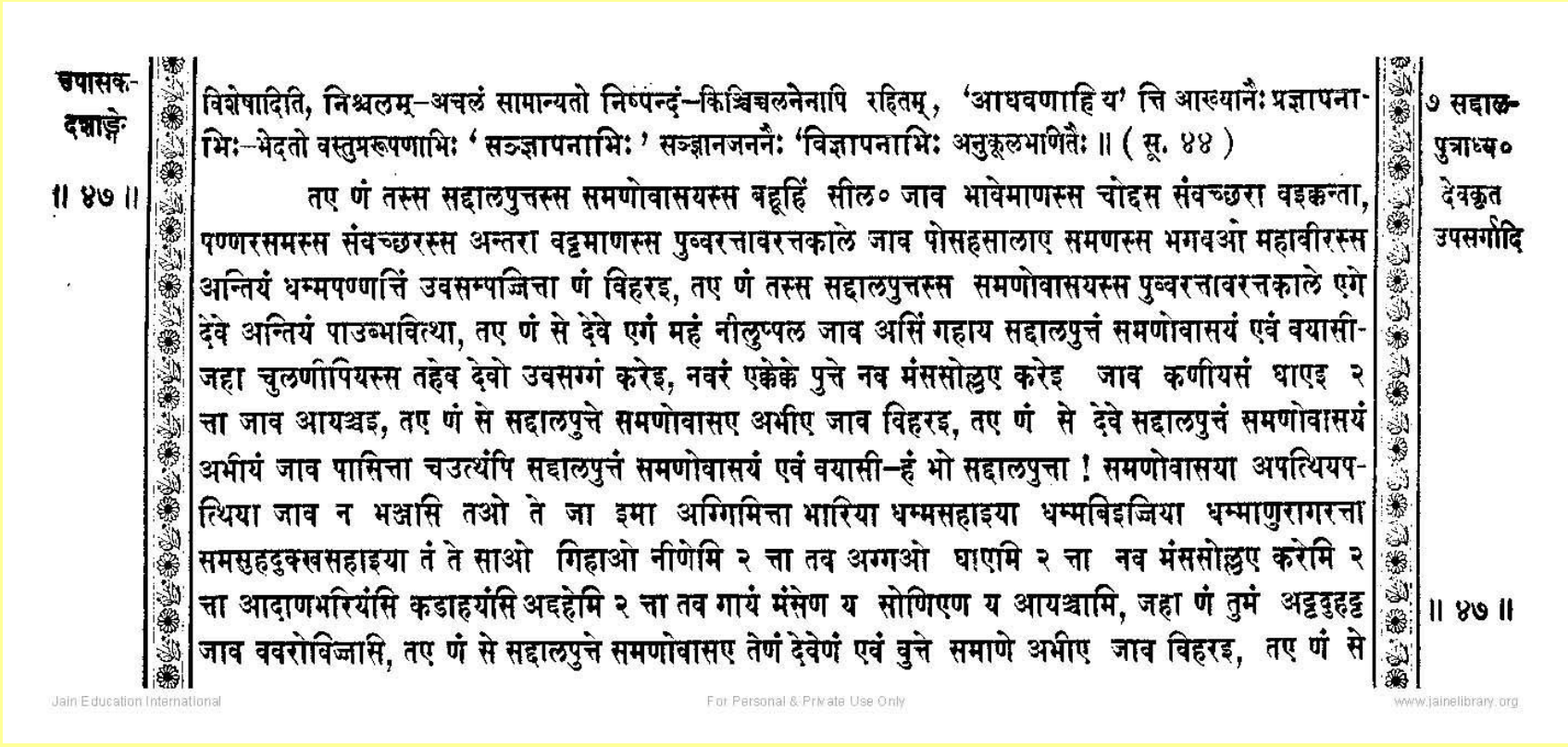

॥ ४७ ॥

विशेषादिति, निश्चलम्-अचलं सामान्यतो निष्पन्दं-किञ्चिच्चलनेनापि रहितम्, 'आघवणाहि य' त्ति आख्यानैः प्रज्ञापनाभिः-भेदतो वस्तुप्ररूपणाभिः 'सञ्ज्ञापनाभिः' सञ्ज्ञानजननैः 'विज्ञापनाभिः अनुकूलभाणितैः ॥ (सू. ४४)

तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील० जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वइक्कन्ता, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था, तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल जाव असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ, नवरं एक्केके पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ जाव कणीयसं घाएइ २ त्ता जाव आयञ्चइ, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ, तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता चउत्थंपि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो सद्दालपुत्ता ! समणोवासया अपत्थियपत्थिया जाव न भञ्जसि तओ ते जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि २ त्ता तव अग्गओ घाएमि २ त्ता नव मंससोल्लए करेमि २ त्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि २ त्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट जाव ववरोविज्जासि, तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, तए णं से

७ सद्दाल-पुत्राध्य० देवकृत उपसर्गादि

॥ ४७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्र: एवं तस्य देवकृत-उपसर्ग:

प्रत सूत्रांक [४५]

दीप अनुक्रम [४७]

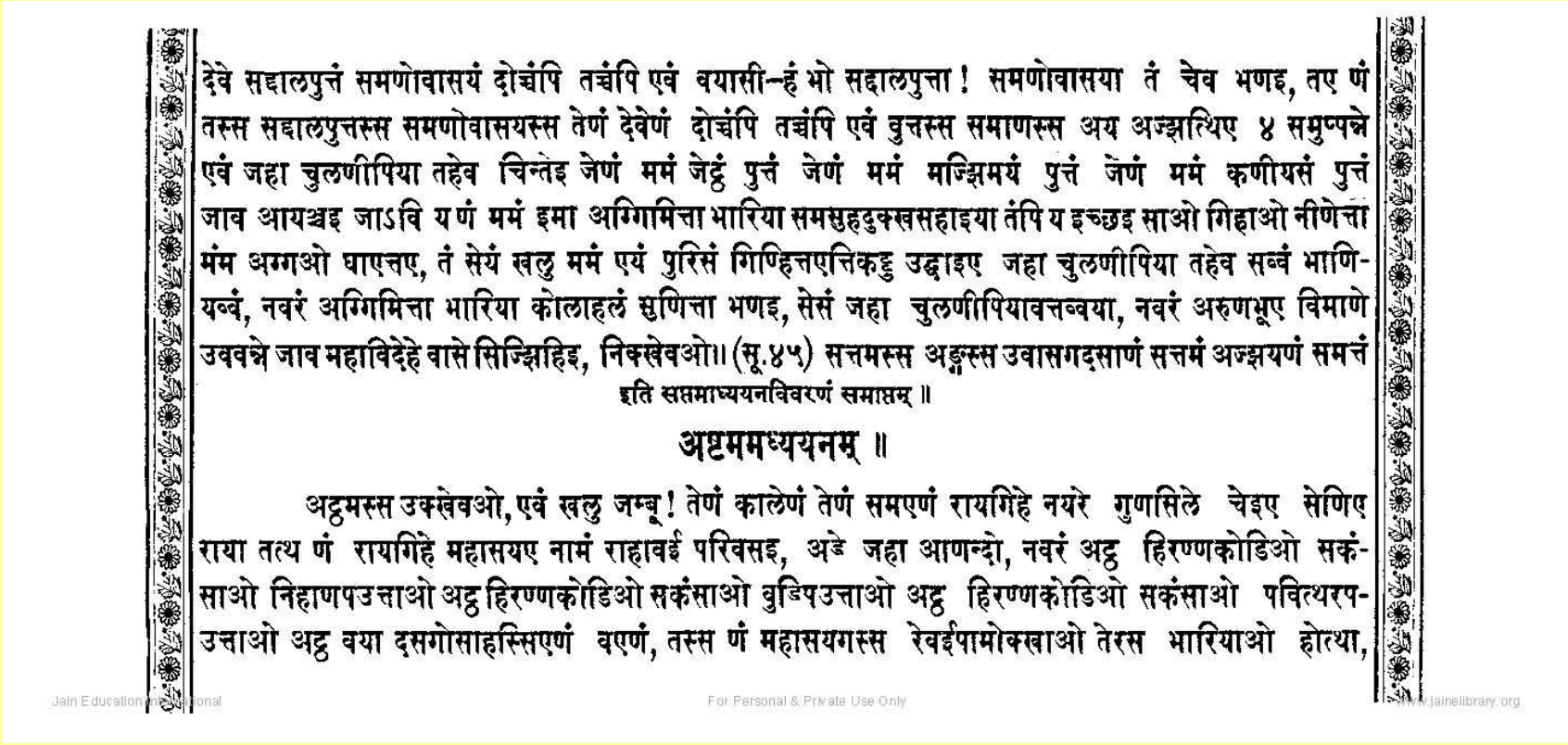

देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया तं चेव भणइ, तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अय अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिन्तेइ जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जेणं ममं मज्झिमयं पुत्तं जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव आयञ्चइ जाऽवि यणं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्खसहाइया तंपि य इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मंम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तएत्तिकट्टु उद्धाइए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं, नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ, सेसं जहा चुलणीपियावत्तव्वया, नवरं अरुणभूए विमाणे उववन्ने जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, निक्खेवओ॥ (सू.४५) सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं सत्तमं अज्झयणं समत्तं

इति सप्तमाध्ययनविवरणं समाप्तम् ॥

अष्टममध्ययनम् ॥

अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिले चेइए सेणिए राया तत्थ णं रायगिहे महासयए नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जहा आणन्दो, नवरं अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ वुड्ढिपउत्ताओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं, तस्स णं महासयगस्स रेवईपामोक्खाओ तेरस भारियाओ होत्था,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सद्दालपुत्रः एवं तस्य देवकृत-उपसर्गः

अत्र सप्तमं अध्ययनं परिसमाप्तं

अथ अष्टमं अध्ययनं "महाशतक" आरभ्यते [महाशतक-श्रमणोपासक कथा]

प्रत सूत्रांक [४६-४७]

दीप अनुक्रम [४८-४९]

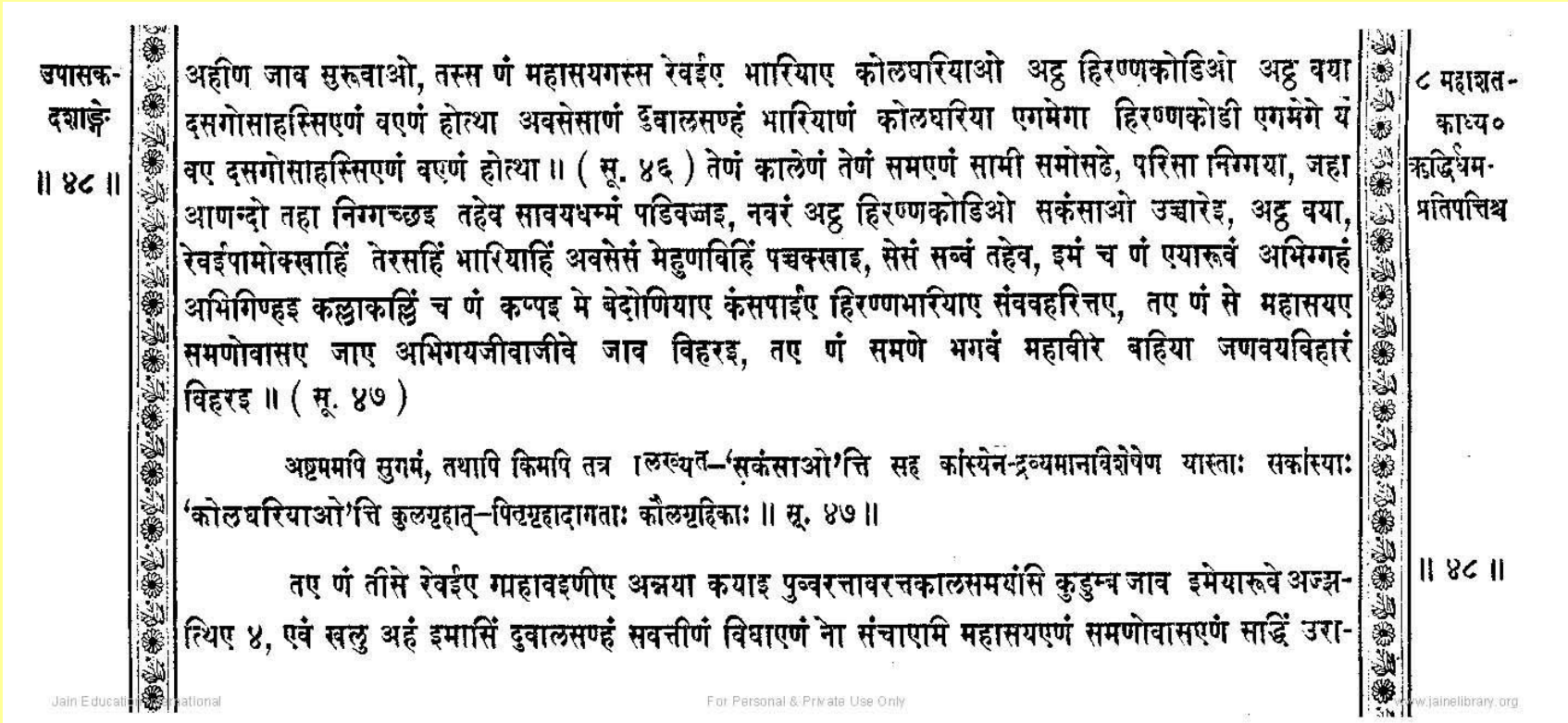

उपासक-दशाङ्गे ॥ ४८ ॥

अहीण जाव सुरूवाओ, तस्स णं महासयगस्स रेवईए भारियाए कोलघरियाओ अट्ठ हिरण्णकोडिओ अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था अवसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं कोलघरिया एगमेगा हिरण्णकोडी एगमेगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था ॥ (सू. ४६) तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे, परिसा निग्गया, जहा आणन्दो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ, नवरं अट्ठ हिरण्णकोडिओ सकंसाओ उच्चारेइ, अट्ठ वया, रेवईपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पच्चक्खाइ, सेसं सव्वं तहेव, इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ कल्लाकल्लिं च णं कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभारियाए संववहरित्तए, तए णं से महासयए समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ (सू. ४७)

अष्टममपि सुगमं, तथापि किमपि तत्र लक्ष्यते–'सकंसाओ'त्ति सह कांस्येन-द्रव्यमानविशेषेण यास्ताः सकांस्याः 'कोलघरियाओ'त्ति कुलगृहात्–पितृगृहादागताः कौलगृहिकाः ॥ सू. ४७ ॥

तए णं तीसे रेवईए गाहावइणीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्ब जाव इमेयारूवे अज्झत्थिए ४, एवं खलु अहं इमासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं विघाएणं नो संचाएमि महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरा-

८ महाशतकाध्य० ऋद्धिधर्मप्रतिपत्तिश्च

॥ ४८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाशतकस्य भार्या रेवती संबंधी कथा

प्रत सूत्रांक [४८]

दीप अनुक्रम [५०]

लाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालसवि सवत्तियाओ अग्गिप्प-ओगेणं वा सत्थप्पओगेणं वा विसप्पओगेणं वा जीवियाओ ववरोवित्ता एयासिं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसम्पाजित्ता णं महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं जाव विहरित्तए, एवं सम्पेहेइ २ त्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणी विहरइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ २ त्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ २ त्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडि-वज्जइ २ त्ता महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना बहुविहेहिं मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च सीधुं च पसन्नं च आसाएमाणी ४ विहरइ ॥ (सू. ४८)

'अन्तराणि य'त्ति अवसरान् 'छिद्राणि' विरलपरिवारत्वानि 'विवरान्' एकान्तानिति, 'मंसलोले'त्यादि, मांस-लोला–मांसलम्पटा, एतदेव विशिष्यते–मांसमूर्च्छिता, तद्दोषानभिज्ञत्वेन मूढेत्यर्थः, मांसग्रथिता–मांसानुरागतन्तुभिः सन्दर्भिता, मांसगृद्धा–तद्भोगेऽप्यजातकाङ्क्षाविच्छेदा, मांसाध्युपपन्ना–मांसैकाग्रचित्ता, ततश्च बहुविधैर्मांसैश्च सामान्यैः तद्विशेषैश्च, तथा चाह-'सोल्लिएहि य'त्ति शूल्यकैश्च–शूलसंस्कृतकैः तलितैश्च–घृतादिनाऽग्नौ संस्कृतैः भर्जितैश्च–अग्निमात्रपक्वैः सहेति गम्यते,सुरां च-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाशतकस्य भार्या रेवती संबंधी कथा

प्रत सूत्रांक [४८]

दीप अनुक्रम [५०]

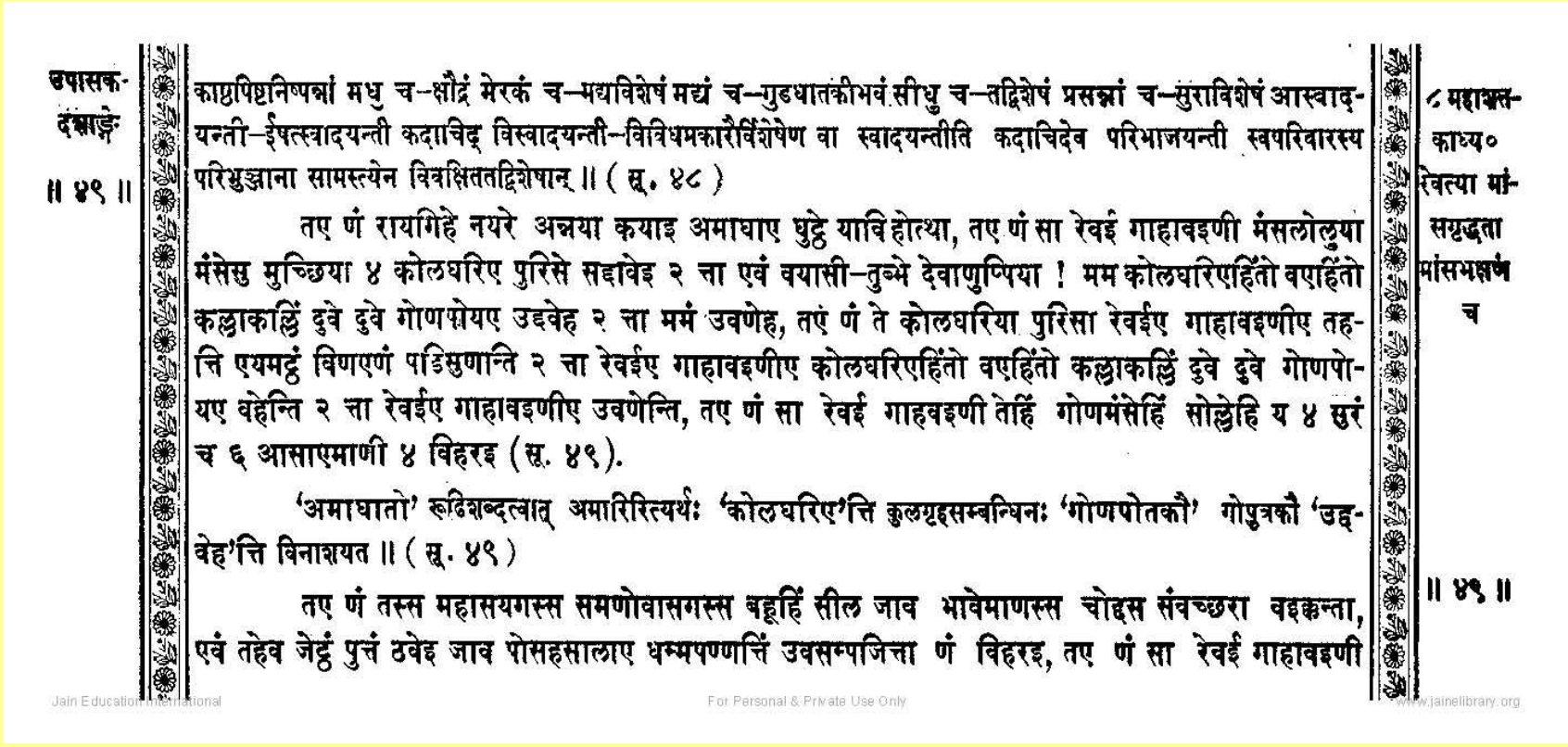

उपासक-दशाङ्गे ॥ ४९ ॥

काष्ठपिष्टनिष्पन्नां मधु च–क्षौद्रं मेरकं च–मद्यविशेषं मद्यं च–गुडधातकीभवं सीधु च–तद्विशेषं प्रसन्नां च–सुराविशेषं आस्वाद-यन्ती–ईषत्स्वादयन्ती कदाचिद् विस्वादयन्ती–विविधप्रकारैर्विशेषेण वा स्वादयन्तीति कदाचिदेव परिभाजयन्ती स्वपरिवारस्य परिभुञ्जाना सामस्त्येन विवक्षिततद्विशेषान् ॥ (सू. ४८)

तए णं रायगिहे नयरे अन्नया कयाइ अमाघाए घुट्ठे यावि होत्था, तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया ४ कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए उद्दवेह २ त्ता ममं उवणेह, तए णं ते कोलघरिया पुरिसा रेवईए गाहावइणीए तह-त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति २ त्ता रेवईए गाहावइणीए कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपो-यए वहेन्ति २ त्ता रेवईए गाहावइणीए उवणेन्ति, तए णं सा रेवई गाहवइणी तेहिं गोणमंसेहिं सोल्लेहि य ४ सुरं च ६ आसाएमाणी ४ विहरइ (सू. ४९).

'अमाघातो' रूढिशब्दत्वात् अमारिरित्यर्थः 'कोलघरिए'त्ति कुलगृहसम्बन्धिनः 'गोणपोतकौ' गोपुत्रकौ 'उद्द-वेह'त्ति विनाशयत ॥ (सू. ४९)

तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वइक्कन्ता, एवं तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी

८ महाशत-काध्य० रेवत्या मां-सगृद्धता मांसभक्षणं च

॥ ४९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाशतकस्य भार्या रेवती संबंधी कथा

प्रत
सूत्रांक
[५०]

दीप
अनुक्रम
[५२]

मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए सम० तेणेव उवागच्छइ २त्ता मोहुम्मायजणणाइं सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो महासयया समणोवासया ! धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया ४ धम्मपिवासिया ४ किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा ? जण्णं तुमं मए सद्धिं उरालाइं जाव भुञ्जमाणे नो विहरसि, तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी महासययं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो तं चेव भणइ, सोऽवि तहेव जाव अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे विहरइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥ (सू. ५०)

'मत्त'त्ति सुरादिमदवती 'लुलिता' मदवशेन घूर्णिता, स्खलत्पदेत्यर्थः, विकीर्णा–विक्षिप्ताः केशा यस्याः सा तथा, उत्तरीयकं–उपरितनवसनं विकर्षयन्ती मोहोन्मादजनकान् कामोद्दीपकान् शृङ्गारिकान्–शृङ्गाररसवतः स्त्रीभावान्–कटाक्षसन्दर्शनादीन् उपसन्दर्शयन्ती 'हं भो'त्ति आमन्त्रणं महासयया ! इत्यादेर्विहरसीतिपर्यवसानस्य रेवतीवाक्यस्यायमभिप्रायः-अयमेवास्य स्वर्गो मोक्षो वा यत् मया सह विषयसुखानुभवनं, धर्मानुष्ठानं हि विधीयते स्वर्गाद्यर्थं, स्वर्गादिश्चेष्यते सुखार्थं, सुखं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाशतकस्य भार्या रेवती संबंधी कथा

प्रत सूत्रांक [५०]

दीप अनुक्रम [५२]

उपासकदशाङ्गे ॥ ५० ॥

चैतावदेव तावद्दृष्टं यत्कामासेवनमिति, भणन्ति च—"जई नत्थि तत्थ सीमंतिणीओ मणहरपियङ्गुवण्णाओ। ता रे सिद्धंतिय बन्धणं खु मोक्खो न सो मोक्खो ॥ १ ॥" तथा "सत्यं वच्मि हितं वच्मि, सारं वच्मि पुनः पुनः। अस्मिन्नसारे संसारे, सारं सारङ्गलोचनाः ॥ १ ॥" तथा "द्विरष्टवर्षा योषित्पञ्चविंशतिकः पुमान्। अनयोर्निरन्तरा प्रीतिः, स्वर्ग इत्यभिधीयते ॥ १ ॥" (सू. ५०)

तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारसऽवि, तए णं से महासयए समणोवासए तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसन्तए जाए, तए णं तस्स महासययस्स समणोवासयस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ४ एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा आणन्दो तहेव अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ, तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पन्ने पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ॥ (सू. ५१)

८ महाशतका रेवतीकृत उपसर्गः अवधि ज्ञानं च

॥ ५० ॥

१ यदि न सन्ति तत्र सीमन्तिन्यो मनोहरप्रियङ्गुवर्णाः। तदा अरे सैद्धान्तिक ! बन्धनमेव मोक्षः न स मोक्षः ॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

महाशतकश्रावक द्वारा उपासक-प्रतिमा स्वीकरणम्

प्रत
सूत्रांक
[५१-५२]

दीप
अनुक्रम
[५३-५४]

तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ मत्ता जाव उत्तरिज्जयं विकड्ढेमाणी २ जेणेव महासयए समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता महासययं तहेव भणइ जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हं भो तहेव, तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ २ त्ता ओहिणा आभोएइ २ त्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—हं भो रेवई ! अपत्थियपत्थिए ४ एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि, तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी एवं वयासी—रुट्ठे णं ममं महासयए समणोवासए हीणे णं ममं महासयए समणोवासए अवज्झाया णं अहं महासयएणं समणोवासएणं न नज्जइ णं अहं केणवि कुमारेणं मारिज्जिस्सामित्तिकट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सञ्जायभया सणियं २ पच्चोसक्कइ २ त्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता ओहय जाव झियाइ, तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ (सू. ५२)

• 'अलसएणं'ति विशूचिकाविशेषलक्षणेन, तल्लक्षणं चेदम्—"नोर्ध्वं व्रजति नाधस्तादाहारो न च पच्यते । आमाशयेऽल-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रेवती-भार्या कृत उपसर्गः

प्रत सूत्रांक [५१-५२]

दीप अनुक्रम [५३-५४]

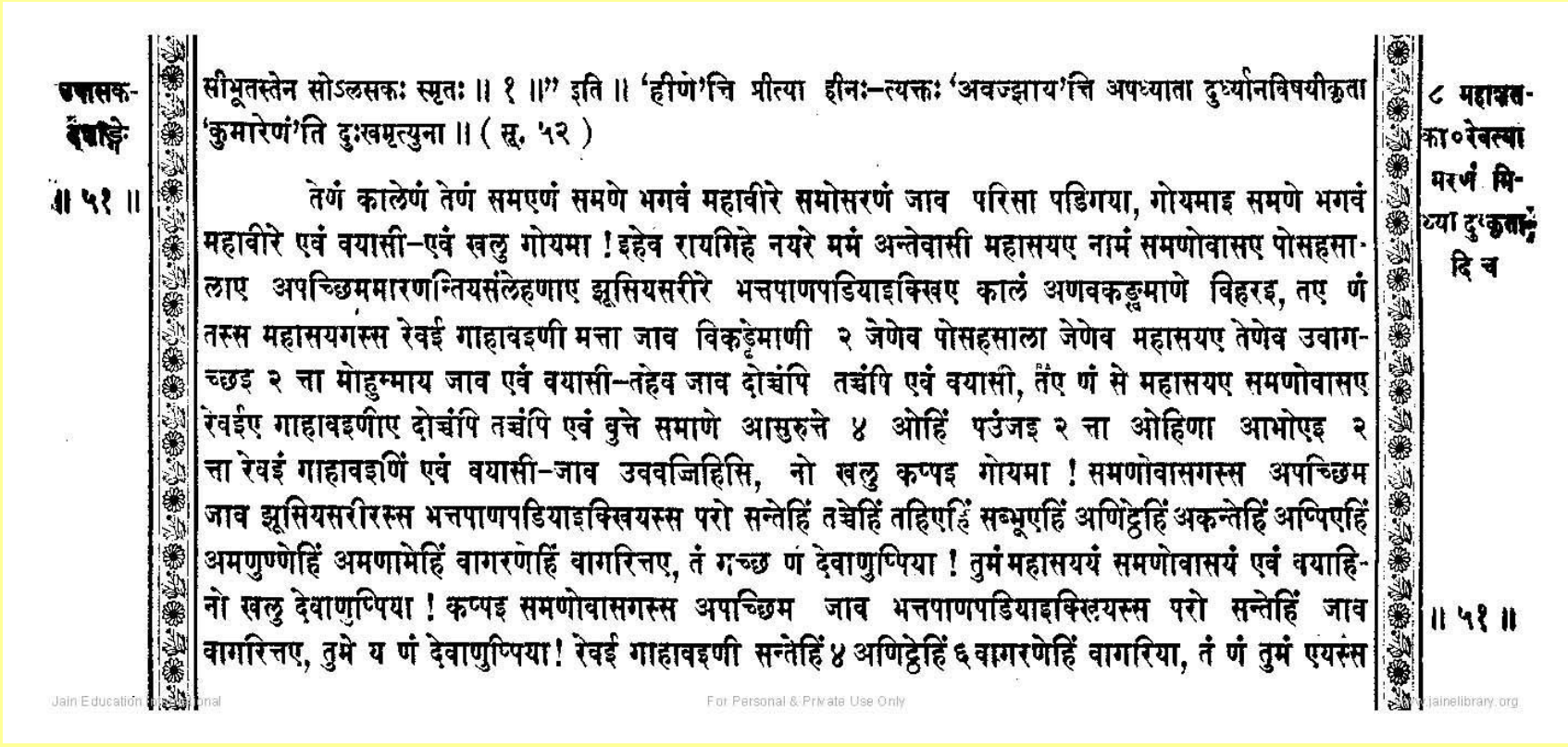

उपासक-दशाङ्गे

सीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः ॥ १ ॥” इति ॥ ‘हीणे’त्ति प्रीत्या हीनः—त्यक्तः ‘अवज्झाय’त्ति अपध्याता दुर्ध्यानविषयीकृता ‘कुमारेणं’ति दुःखमृत्युना ॥ (सू. ५२)

॥ ५१ ॥ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरणं जाव परिसा पडिगया, गोयमाइ समणे भगवं महावीरे एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! इहेव रायगिहे नयरे ममं अन्तेवासी महासयए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ, तए णं तस्स महासयगस्स रेवई गाहावइणी मत्ता जाव विकड्ढेमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता मोहुम्माय जाव एवं वयासी—तहेव जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी, तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ २ त्ता ओहिणा आभोएइ २ त्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—जाव उववज्जिहिसि, नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव झूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकन्तेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए, तं गच्छ णं देवाणुप्पिया ! तुमं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि-नो खलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम जाव भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव वागरित्तए, तुमे य णं देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं ४ अणिट्ठेहिं ६ वागरणेहिं वागरिया, तं णं तुमं एयस्स ॥ ५१ ॥

८ महाशतका० रेवत्या मरणं मिथ्या दुष्कृतादि च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

रेवत्या: मरणं, महाशतकेन दत्तं मिथ्यादुष्कृतं

प्रत सूत्रांक [५३]

दीप अनुक्रम [५५]

ठाणस्स आलोएहि जाव जहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जाहि, तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तओ पडिणिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ २ त्ता जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, तए णं से महासयए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ २ त्ता हट्ठ जाव हियए भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ, तए णं से भगवं गोयमे महासययं समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ-नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणोवासगस्स अपच्छिम जाव वागरित्तए, तुमे णं देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव वागरिआ, तं णं तुमं देवाणुप्पिया! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तए णं से महासयए समणोवासए भगवओ गोयमस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ २ त्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव अहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जइ, तए णं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ २ त्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ २ त्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ २ त्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ (सू. ५३)

'नो खलु कप्पइ गोयमे'त्यादि, 'सन्तेहिं'ति सद्भिर्विद्यमानार्थैः 'तच्चेहिं'ति तथ्यैस्तत्त्वरूपैर्वाऽनुपचारिकैः 'तहि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५३]

दीप अनुक्रम [५५]

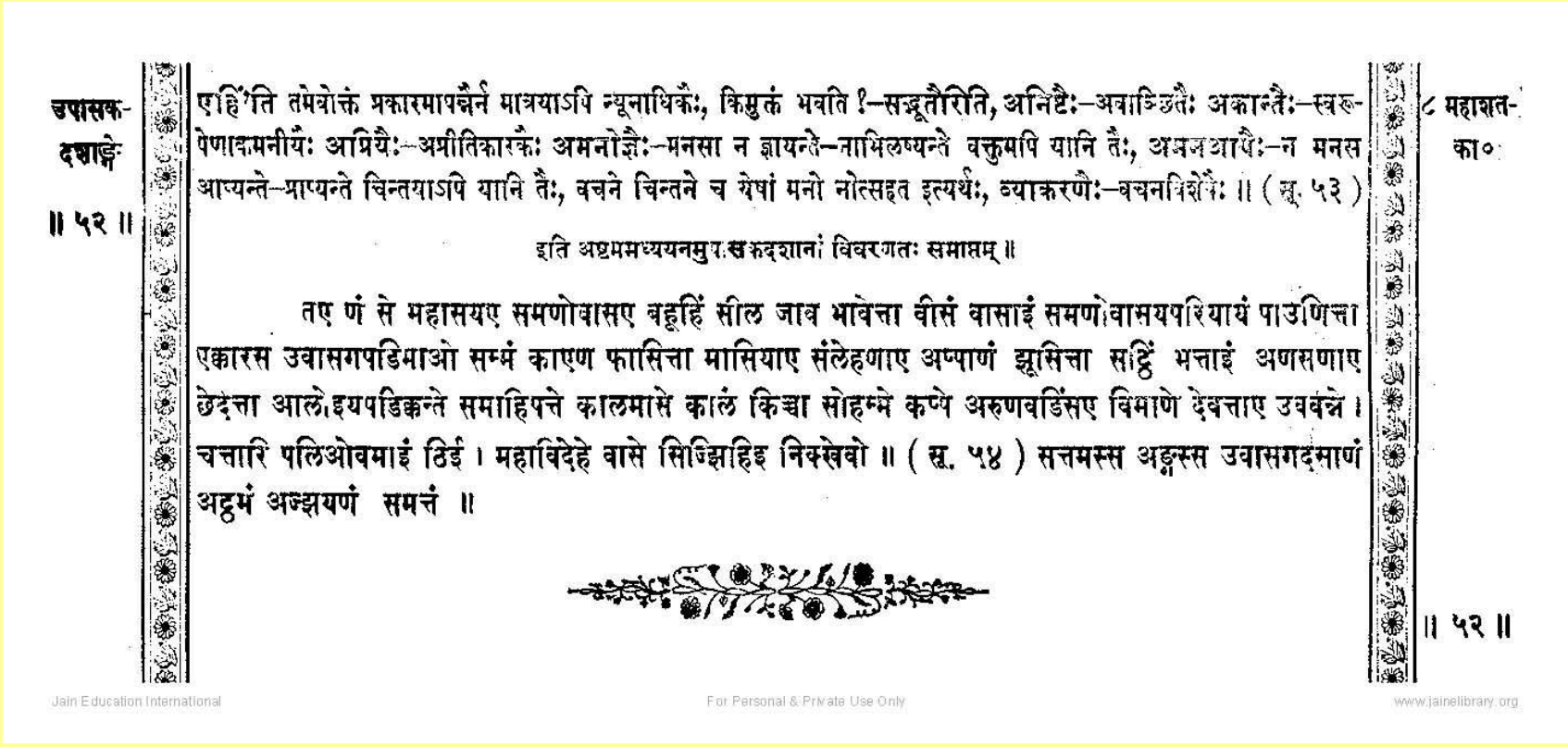

उपासक-दशाङ्गे ॥ ५२ ॥

एहिंति तमेवोक्तं प्रकारमापन्नैर्न मात्रयाऽपि न्यूनाधिकैः, किमुक्तं भवति ?—सद्भूतैरिति, अनिष्टैः—अवाञ्छितैः अकान्तैः—स्वरूपेणाकमनीयैः अप्रियैः—अप्रीतिकारकैः अमनोज्ञैः—मनसा न ज्ञायन्ते—नाभिलष्यन्ते वक्तुमपि यानि तैः, अमनआपैः—न मनस आप्यन्ते—प्राप्यन्ते चिन्तयाऽपि यानि तैः, वचने चिन्तने च येषां मनो नोत्सहत इत्यर्थः, व्याकरणैः—वचनविशेषैः ॥ (सू. ५३)

इति अष्टममध्ययनमुपासकदशानां विवरणतः समाप्तम् ॥

तए णं से महासयए समणोवासए बहूहिं सील जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासयपरियायं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ निक्खेवो ॥ (सू. ५४) सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं ॥

८ महाशतका० ॥ ५२ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अष्टमं अध्ययनं परिसमाप्तं

प्रत
सूत्रांक
[५५-५६]

दीप
अनुक्रम
[५७-५८]

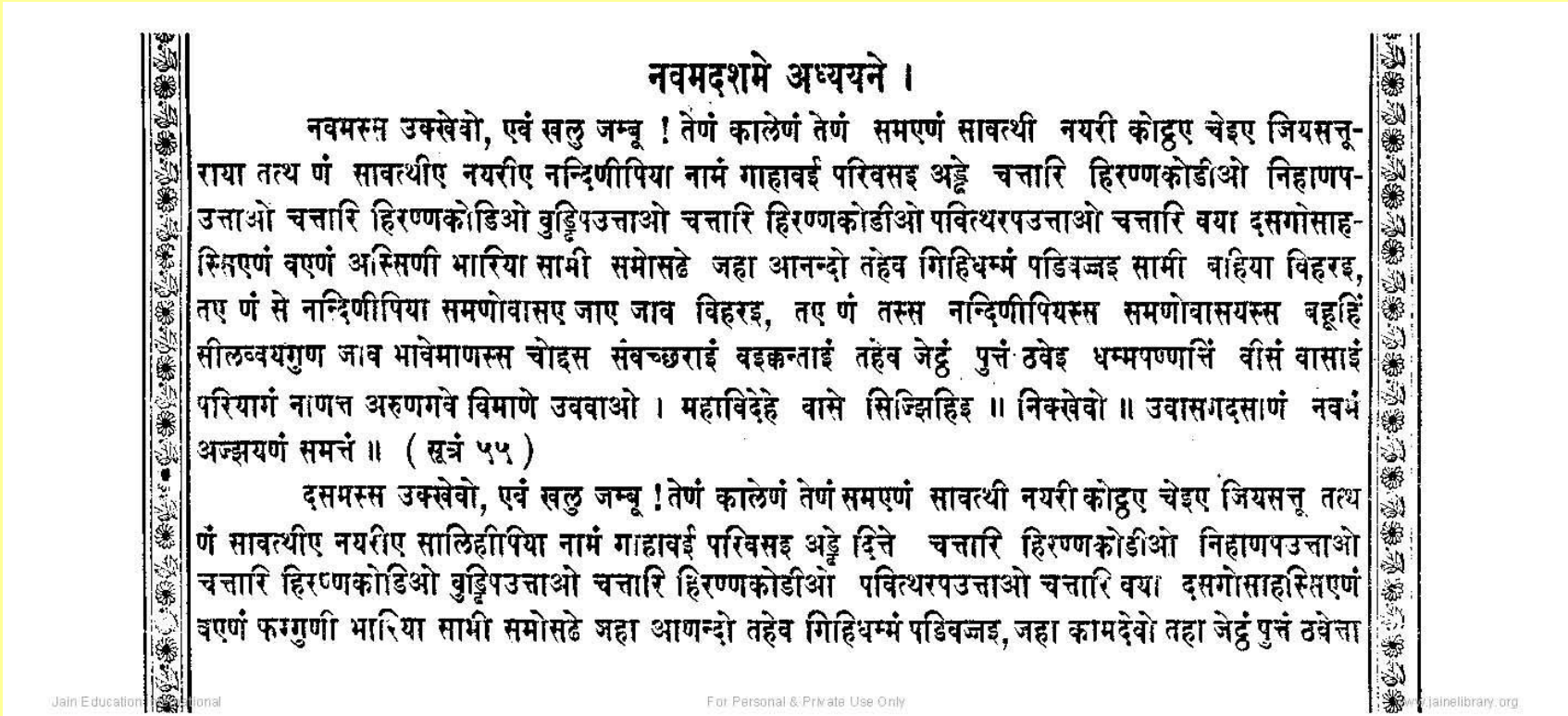

नवमदशमे अध्ययने ।

नवमस्स उक्खेवो, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू-राया तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नन्दिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं अस्सिणी भारिया सामी समोसढे जहा आनन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ सामी बाहिया विहरइ, तए णं से नन्दिणीपिया समणोवासए जाए जाव विहरइ, तए णं तस्स नन्दिणीपियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सीलव्वयगुण जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ धम्मपण्णत्तिं वीसं वासाइं परियागं नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥ निक्खेवो ॥ उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥ (सूत्रं ५५)

दसमस्स उक्खेवो, एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू तत्थ णं सावत्थीए नयरीए सालिहीपिया नामं गाहावई परिवसइ अड्ढे दित्ते चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडिओ वुड्ढिपउत्ताओ चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं फग्गुणी भारिया सामी समोसढे जहा आणन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ नवमं/दशमं अध्ययने "नंदिनीपिता" एवं "शालिहीपिता" आरभ्यते [नंदिनीपिता एवं शालिहीपिता बोथ श्रमणोपासकौ कथा]

प्रत सूत्रांक [५५-५६]

दीप अनुक्रम [५७-५८]

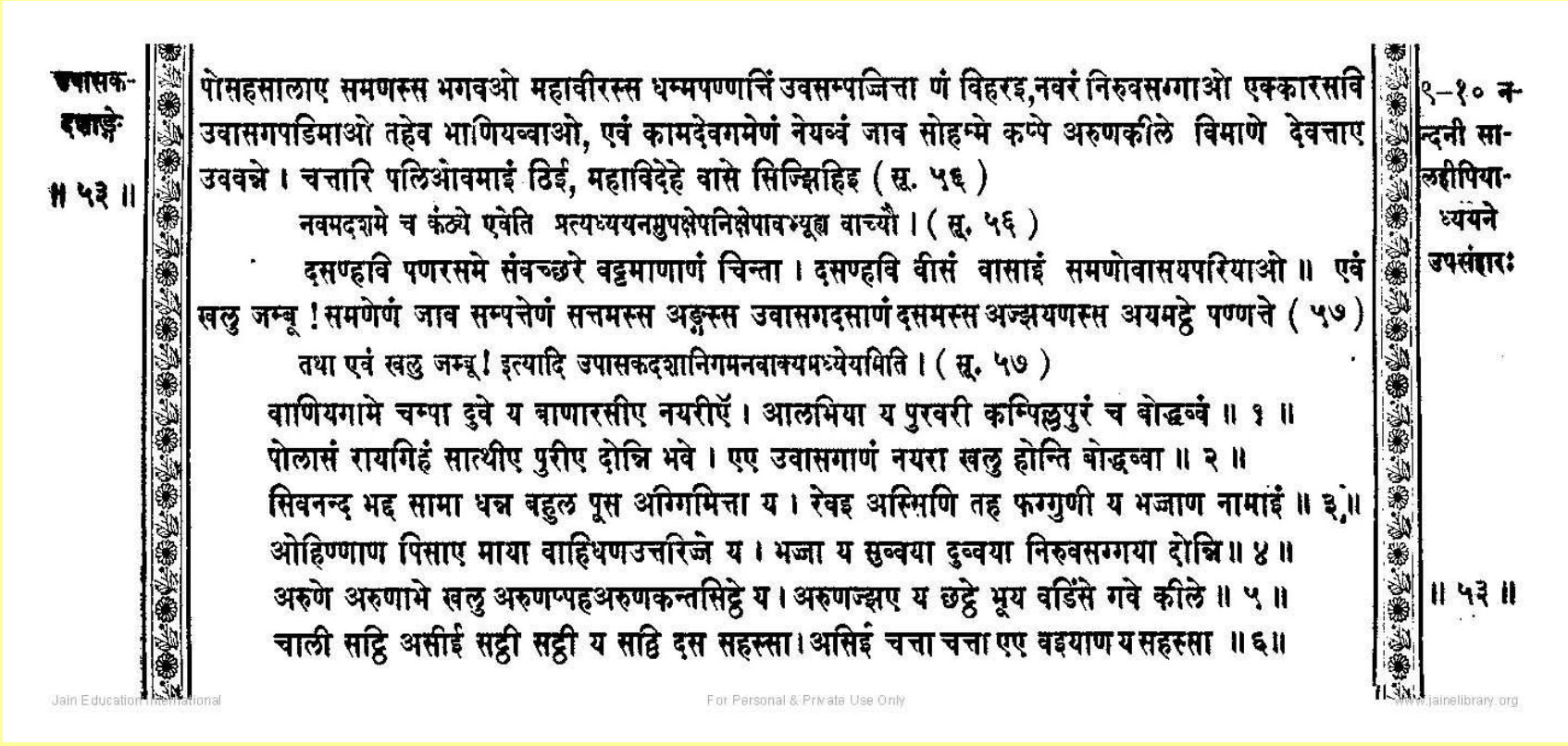

पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ,नवरं निरुवसग्गाओ एक्कारसवि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ, एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ (सू. ५६)

९-१० नन्दनी सालहीपियाध्ययने उपसंहारः

नवमदशमे च कंठ्ये एवेति प्रत्यध्ययनमुपक्षेपनिक्षेपावभ्यूह्य वाच्यौ। (सू. ५६)

दसण्हवि पणरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता। दसण्हवि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ ॥ एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते (५७)

तथा एवं खलु जम्बू! इत्यादि उपासकदशानिगमनवाक्यमध्येयमिति। (सू. ५७)

वाणियगामे चम्पा दुवे य वाणारसीए नयरीएँ। आलभिया य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥ १ ॥
पोलासं रायगिहं सात्थीए पुरीए दोन्नि भवे। एए उवासगाणं नयरा खलु होन्ति बोद्धव्वा ॥ २ ॥
सिवनन्द भद्द सामा धन्न बहुल पूस अग्गिमित्ता य। रेवइ अस्सिणि तह फग्गुणी य भज्जाण नामाइं ॥ ३ ॥
ओहिण्णाण पिसाए माया वाहिधणउत्तरिज्जे य। भज्जा य सुव्वया दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ॥ ४ ॥
अरुणे अरुणाभे खलु अरुणप्पहअरुणकन्तसिट्ठे य। अरुणज्झए य छट्ठे भूय वडिंसे गवे कीले ॥ ५ ॥
चाली सट्ठि असीई सट्ठी सट्ठी य सट्ठि दस सहस्सा। असिई चत्ता चत्ता एए वइयाण य सहस्सा ॥ ६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र अष्टमं अध्ययनं परिसमाप्तं

उपाशकदशाया; निगमन-गाथा:

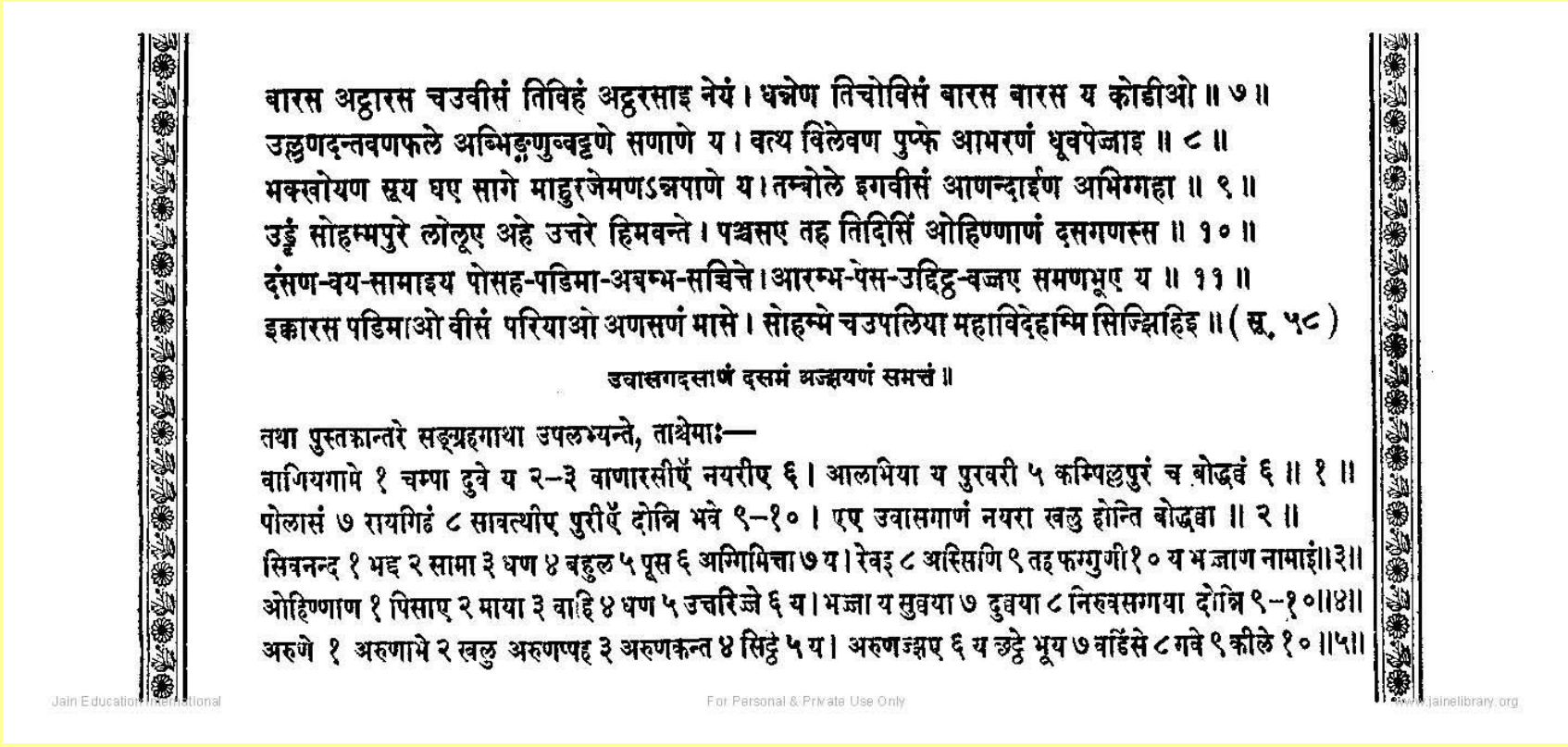

बारस अट्ठारस चउवीसं तिविहं अट्ठरसाइ नेयं। धन्नेण तिचोवीसं बारस बारस य कोडीओ ॥ ७ ॥
उल्लुणदन्तवणफले अब्भिङ्गणुव्वट्टणे सणाणे य। वत्थ विलेवण पुप्फे आभरणं धूवपेज्जाइ ॥ ८ ॥
भक्खोयण सूय घए सागे माहुरजेमणऽन्नपाणे य। तम्बोले इगवीसं आणन्दाईण अभिग्गहा ॥ ९ ॥
उड्ढं सोहम्मपुरे लोलूए अहे उत्तरे हिमवन्ते। पञ्चसए तह तिदिसिं ओहिण्णाणं दसगणस्स ॥ १० ॥
दंसण-वय-सामाइय पोसह-पडिमा-अबम्भ-सचित्ते। आरम्भ-पेस-उद्दिट्ठ-वज्जए समणभूए य ॥ ११ ॥
इक्कारस पडिमाओ वीसं परियाओ अणसणं मासे। सोहम्मे चउपलिया महाविदेहम्मि सिज्झिहिइ ॥ (सू. ५८)

उवासगदसाणं दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

तथा पुस्तकान्तरे सङ्ग्रहगाथा उपलभ्यन्ते, ताश्चेमाः—
वाणियगामे १ चम्पा दुवे य २–३ वाणारसीएँ नयरीए ६। आलभिया य पुरवरी ५ कम्पिल्लपुरं च बोद्धवं ६ ॥ १ ॥
पोलासं ७ रायगिहं ८ सावत्थीए पुरीएँ दोन्नि भवे ९–१०। एए उवासगाणं नयरा खलु होन्ति बोद्धवा ॥ २ ॥
सिवनन्द १ भद्द २ सामा ३ धण ४ बहुल ५ पूस ६ अग्गिमित्ता ७ य। रेवइ ८ अस्सिणि ९ तह फग्गुणी १० य भज्जाण नामाइं॥३॥
ओहिण्णाण १ पिसाए २ माया ३ वाहि ४ धण ५ उत्तरिज्जे ६ य। भज्जा य सुवया ७ दुवया ८ निरुवसग्गया दोन्नि ९–१०॥४॥
अरुणे १ अरुणाभे २ खलु अरुणप्पह ३ अरुणकन्त ४ सिट्ठे ५ य। अरुणज्झए ६ य छट्ठे भूय ७ वडिंसे ८ गवे ९ कीले १० ॥५॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ समत्ताओ ॥ उवासगदसाणं सत्तमस्स अङ्गस्स एगो सुयक्खन्धो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्सिज्जंति तओ सुयक्खन्धो समुद्दिस्सिज्जइ अणुण्णविज्जइ दोसु दिवसेसु, अङ्गं तहेव ॥ (सू. ५९)

शिष्टादिनामान्यरुणपदपूर्वाणि दृश्यानि, अरुणशिष्टमित्यादि ॥ एताश्च पूर्वोक्तानुसारेणावसेयाः ॥ यदिह न व्याख्यातं तत्सर्वं ज्ञाताधर्मकथाव्याख्यानमुपयुक्तेन निरूप्यावसेयमिति ॥ सर्वस्यापि स्वकीयं वचनमभिमतं प्रायशः स्याज्जनस्य, यत्तु स्वस्यापि सम्यग् न हि विहितरुचिः स्यात् कथं तत्परेषाम्?। चित्तोल्लासात्कुतश्चिदपि निगदितं किञ्चिदेवं मयैतद्युक्तं यच्चात्र तस्य ग्रहमलधियः कुर्वतां प्रीतये मे ॥ १ ॥ इति श्रीचन्द्रकुलाम्बरनभोमणिश्रीजिनेश्वराचार्यान्तिषच्छ्रीमन्नवाङ्गीवृत्तिकारक-श्रीमदभयदेवाचार्यकृतं समाप्तमुपासकदशाविवरणम् ॥

श्रीचान्द्रकुलीनश्रीजिनेश्वराचार्यशिष्य श्रीमन्नवाङ्गीवृत्तिकारकश्रीमदभयदेवाचार्यनिर्मितं उपासकदशाङ्ग विवरणं समाप्तम् ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मुनिश्री दीपरत्नसागरेण पुनः संपादितः (आगमसूत्र ७)

"उपाशकदशा" परिसमाप्तः

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नम:

पूज्य आगमोध्धारक आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरेण संशोधित: संपादितश्च

"उपासकदशाङ्गसूत्र" [मूलं एवं अभयदेवसूरि-रचित वृत्ति:]

(किंचित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

मुनि दीपरत्नसागरेण पुन: संकलित:

"उपासकदशा" मूलं एवं वृत्ति:" नामेण

परिसमाप्त:

Remembar it's a Net Publications of 'jain_e_library'